इकाई–2

महाकवि भास का परिचय – काल एवं रचनाएँ

इकाई की रूपरेखा :–

2.1 प्रस्तावना –

संस्कृत कविता कामिनी के हास भास का नाम संस्कृत नाटक के इतिहास में बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। संस्कृत नाटकों के विकास के इतिहास में भास वह जाज्वल्यमान मणि है, जिनकी कीर्ति–कौमुदी की प्रसृति काल के दुर्दम्य प्रभाव से अस्पष्ट रही अथच सुदूर दक्षिण से लेकर ध्रुव उत्तर तक एवं प्राची से लेकर प्रतीची तक सम्पूर्ण भरतखण्ड में चमकती रही। नाटक को पंचम वेद होने का जो गौरव भरत ने प्रदान किया तथा कालिदास ने जो उसे भिन्न रूचि जनों का एकत्र समाराधन कहा, इसकी सम्यक् परिपुष्टि भास के नाटकों से होती है। नाटक कवित्व का चरम परिपाक है – ''नाटकान्तं कवित्वम्''। उसमें तीनों लोकों के भावों का अनुवर्तन होता है। जब हम इस दृष्टि से विचार करते हैं तो भास की महत्ता और बढ़ जाती है। उस सुदूर अतीत में जब लौकिक संस्कृत अभी अपनी दिशा निर्माण कर रही थी, भास ने तेरह नाटकों की रचना की और केवल रचना ही नहीं की अपितु सफलता भी अर्जित की। यह नाट्य साहित्य के इतिहास में चिरस्मरणीय बात है।

डॉ॰ वचनदेव कुमार के मतानुसार अंग्रेजी के विश्ववन्द्य नाटककार शैक्सपीयर के निर्माण की पृष्ठभूमि के रूप में जिस प्रकार मारलो ने कार्य किया ठीक उसी प्रकार कविकुल गुरू कालिदास के विकास की प्रस्तावना भास ने प्रस्तुत की। भास कितने लोकप्रिय नाटककार थे, इसका अनुमान तो कालिदास के ''मालविकाग्निमित्र'' के सूत्रधार के कथन से ही हो जाता है –

''प्रथितयशसां भाससौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य कथं वर्तमानस्य कवेः कालिदासस्य क तौ बहुमानः।'' अर्थात् भास, सौमिल्ल, कविपुत्र जैसे रव्यातिप्राप्त नाटककारों की कृतियों के रहते हुये इस कालिदास को किस प्रकार समादर प्राप्त होगा।

2.2 भास का परिचय –

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि कालिदास, शूद्रक आदि के समान भास ने भी अपने जीवन चरित्र

के विषय में कोई प्रकाश नहीं डाला है, यहाँ तक कि अपनी रचनाओं में अपना नामोल्लेख भी नहीं किया है।

भास को संस्कृत नाट्य साहित्य का जनक कहा गया है। नाटककार के रूप में इनका नाम अत्यन्त प्राचीनकाल से ही अत्यन्त प्रसिद्ध है। कालिदास के पश्चात् बाणभट्ट ने अपने ''हर्षचरित'' में भास के नाटकों की उन विशेषताओं को उपन्यस्त किया है, जिनसे उसने यशलाभ प्राप्त किया :–

''सूत्रधार क तारंभै र्नाटकै र्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशोलेभे भासो देवकुलैरिव।।

यह उल्लेख इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है कि संस्कृत नाट्य क्षेत्र में लगभग सातवीं सदी तक के विस्तृत कालखण्ड में भास की कीर्तिपताका छायी रही थी।

महाकवि दण्डी ने भी ''अवन्तिसुन्दरी कथा'' में भास का स्मरण किया है। राजशेखर ने अपने ग्रन्थ काव्यमीमांसा में कहा है कि जब नागरिकों ने परीक्षा करने के लिए भास के नाटक चक्र को अग्नि में डाला तो ''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक को अग्नि ने नहीं जलाया –

''भासनाटकचक्रेऽपि छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः।।

''प्रसन्नराघव'' के कर्ता पीयूषवर्ष जयदेव ने ''भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः'' कहकर नाट्यकारों में भास का प्रथम उल्लेख किया है।

इन सब प्रसंगों से ज्ञात होता है कि भास बहुत प्राचीन काल से ही लब्धप्रतिष्ठ हैं। भास का व्यक्तित्व निश्चित रूपसे असंदिग्ध है तथापि खेद का विषय है कि उनके जीवनवृत्त के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है। सन् 1912 से पूर्व इनका नाम एक समस्या सा था। परन्तु 1912 में महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री जी ने जब त्रिवेन्द्रम में भास के तेरह नाटकों का प्रकाशन किया तो विद्वानों के आश्चर्य व आनन्द का ठिकाना न रहा।

इसके बाद इन नाटकों की प्रामाणिकता को लेकर विद्वानों में तर्क–वितर्क प्रारंभ हुआ तथा एक भीषण विवाद उड़ खड़ा हुआ। इस नाट्य समूह का कर्तत्व एवं साथ ही विभिन्न अन्तरंग एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर भास का समय निर्धारित करने में विद्वानों ने पर्याप्त परिश्रम किया। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि अन्य प्राचीन महाकवियों के समान ही इन रचनाओं में भी लेखक के नाम अथवा स्थितिकाल के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं है।

2.3 भास का जीवनवृत्त –

भास का जीवनवृत्त ज्ञात नहीं है। विद्वानों ने मात्र अन्तरंग प्रमाणों के आधार पर अनुमान लगाने का प्रयास किया है, जैसे उनकी जाति के सम्बन्ध में विद्वानों का अनुमान है कि वे ब्राह्मण थे। डॉ• पुसालकर तथा ए•एस•पी• अय्यर आदि विद्वानों ने उनके द्वारा विरचित साहित्य के अध्ययनोपरान्त ऐसा मत व्यक्त किया है। ब्राह्मणीय धर्म तथा समाज व्यवस्था के प्रति उनका महान् आग्रह, अनुकुलीनों का सुरुप न होना (अविमारक) आदि तथ्य उन्हें ब्राह्मण सिद्ध करते हैं।

कालिदास के समान भास के विषय में भी यह ज्ञात नहीं कि वे किस क्षेत्र के रहने वाले थे, उनका कहाँ जन्म हुआ था तथा शिक्षा–दीक्षा कहाँ हुई थी ? विद्वानों की मान्यता है कि वे उत्तरी भारत के

निवासी थे। इसका कारण उनके नाटकों में उत्तरी भारत के नगर, नदी, पर्वत तथा रीति–रिवाजों का बड़ा व्यापक वर्णन होना माना गया है। उज्जैनी, अयोध्या तथा मथुरा में इनकी वृत्ति विशेष रमी है। अतः यह प्रतीत होता है कि भास ने इस स्थानों का आँखों देखा वर्णन किया है। ''हिमवद् विन्ध्यकुण्डलाम्'' स्पष्ट संकेत करता है कि वे उत्तरी भारत के निवासी थे। उत्तरी भारत की तुलना में भास का दक्षिणी भारत का ज्ञान बहुत ही सीमित प्रतीत होता है। उनका दक्षिणी भारत का ज्ञान रामायण तथा महाभारत तक सीमित प्रतीत होता है। रामकथा वर्णित करने पर भी रामेश्वरम् जैसे तीर्थं का उल्लेख न करना इस अनुमान की पुष्टि करता है।

भास का राजकुलों से गहन सम्बन्ध दृष्टिगत होता है। राजप्रासादों, अन्तःपुरों आदि के वर्णन में इन्होंने विशेष रूचि प्रदर्शित की है। अतः ऐसा लगता है कि किसी राजसभा से इनका सम्बन्ध रहा हो। ''राजसिंहः प्रशास्तु नः'' की उक्ति इसी का समर्थन करती दिखाई पड़ती है। अमात्यों, सेना, द्वन्द्व आदि का वर्णन इनके नाटकों मे ंसर्वथा दिखाई पड़ता है। राजकुल के अलावा धनी मानी नागरजनों से भी इनका सम्पर्क रहा होगा। चारूदत्त नाटक नागरजनों के जीवन का सच्चा प्रतिनिधि है।

भास के नाटकों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि भास अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। वेद, इतिहास, पुराण लोककथाएँ, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि नाना शास्त्रों का इन्होंने गंभीर अध्ययन किया था। साहित्य शास्त्र में उनकी निपुणता असन्दिग्ध है।

जहाँ तक भास के धर्म का सम्बन्ध है, वे वैष्णव धर्म के अनुयायी प्रतीत होते हैं। राम तथा कृष्ण के चरित्रों में उनकी अनुरक्ति इस विषय में प्रमाण है। वैष्णव होने के साथ साथ वैदिक कर्मकाण्ड में भी वे पूर्ण विश्वास रखते थे। गौ–ब्राह्मणों में भी उनकी अत्यधिक अनुरक्ति थी।

2.4 महाकवि भास का काल –

महाकवि भास का स्थितिकाल निर्धारित करना प्रायः एक अत्यन्त जटिल प्रश्न है। फिर भी कुछ तथ्य ऐसे हैं, जिनके आधार पर भास की स्थिति की सीमा निर्धारित की जा सकती है। जैसे –

1. महाकवि कालिदास ने ''मालविकाग्निमित्र'' की प्रस्तावना में भास का उल्लेख किया है, अतः भास कालिदास के पूर्ववर्ती प्रतीत होते हैं। किन्तु कालिदास के स्थितिकाल का प्रश्न विवादास्पद होने से भास के स्थितिकाल का वास्तविक निर्धारण करना कठिन है। अधिकांश पाश्चात्य विद्वान्, कालिदास को गुप्तकालीन अर्थात् चतुर्थ शताब्दी का मानते हैं। इस दृष्टि से भास कालिदास से पूर्व अर्थात् चतुर्थ शताब्दी पूर्व के होते हैं। इसलिए कुछ विद्वान् उन्हें ईसा की दूसरी शताब्दी में मानते हैं।

   भारतीय विद्वान् कालिदास का समय ई•पू• 57 ई• के पूर्व मानते हैं। अतः भास उनसे कम से कम सौ वर्ष पहले अवश्य होंगे जबकि उनकी ख्याति पूर्ण रूप से फैल गई होगी।

2. इस विषय पर प्रायः सभी विद्वान् एकमत हैं कि ''मृच्छकटिक'' की रचना का आधार भास का ''चारुदत्त'' नाटक है। मृच्छाकटिक शूद्रक की रचना है, अतः भास शूद्रक के पूर्ववर्ती हैं।

3. कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में भास रचित प्रतिज्ञा

   यौगन्धरायण का एक श्लोक उद्धृत किया है, जो इस प्रकार है –

''नवं शरावं सलिलस्य पूर्णं,
सुसंस्कृतं दर्भकृतोत्तरीयम्।
तत्तस्य मा भून्नरकं च गच्छेद्,
यो भर्तृपिण्डस्य कृते न बुध्येत्।।

कौटिल्य जैसे प्रखर राजनीतिज्ञ द्वारा भास का प्रमाण रूप से उद्धृत किया जाना इस बात का सूचक है कि भास कौटिल्य के समय चतुर्थ शताब्दी ई•पू• के उत्तरार्द्ध में एक प्रमाणिक ग्रन्थकार के रूप में विख्यात हो चुके थे।

4. भास ने उदयन से सम्बन्धित नाटकों की रचना की है, अतः उनका उदयन के काल से परवर्ती होना सिद्ध होता है। चूंकि उदयन का काल ई•पू• तृतीय शती माना जाता है, अतः भास तृतीय शती ई• पूर्व से अधिक प्राचीन नहीं हो सकते।

5. अश्वघोष ने अपने ''बुद्धचरित'' महाकाव्य में भास का एक श्लोक अविकल रूप से उद्धृत किया है, जो इस प्रकार है :–

''काष्ठं हि मथ्नन् लभते हुताशं,
भूमिं खनन् विन्दति चापि तोयम्।।
निर्बन्धितः किन्चन्, नास्त्यसाध्यं,
न्यायेन भुक्तं च क तं च सर्वम्''।।

इससे स्पष्ट है कि भास अश्वघोष से पर्याप्त पूर्ववर्ती रहे हैं तथा अश्वघोष ने उन्हें प्रमाणिक ग्रन्थकार की श्रेणी प्रदान की है।

6. प्रतिमा नाटक के पंचम अंक के रावण के परिचय में जिन अधीत विद्याओं का उल्लेख है, उनका अध्ययन अध्यापन ई•पू• चतुर्थ शताब्दी के लगभग का था, अतः भास इसके उपरान्त ही हो सकते हैं, इसके पूर्व के नहीं।

7. भास की रचनाओं पर जिस पौराणिक ब्राह्मणधर्म का प्रभाव दिखाई पड़ता है, उसका पुनरुत्थानकाल ई•पू• तृतीय शताब्दी रहा है। अतः भास इस काल में या इसके उत्तरवर्ती काल में ही अवश्य हुये होंगे।

8. डॉ• लेस्नी, प्रिन्ट्ज तथा सुकथंनकर जैसे विद्वानों ने प्राकृत भाषा की समीक्षा कर इन्हें कालिदास से प्राचीन तथा अश्वघोष से नवीन सिद्ध किया है। भास की प्राकृत भाषा कालिदास से प्राचीन ठहरती है पर अश्वघोष की भाषा का समय इससे भी पूर्वत्तर है। ये विद्वान् कालिदास को ईसा की पाँचवीं सदी में मानते हैं। इस आधार पर वे भास का समय तीसरी सदी में निश्चित करते हैं।

9. भास के नाटकों का आधार रामायण, महाभारत तथा लोककथाएँ हैं। उदयन का आख्यान ऐतिहासिक है। उदयन, प्रद्योत तथा दर्शक छठी सदी ई• पूर्व के ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। ई•पू• छठी सदी में रामायण तथा महाभारत भी मूल रूप में विद्यमान थे, अतः भास की उपरितम समय सीमा ई•पू• छठी सदी ठहरती है।

10. भास के नाटकों में वर्णित सामाजिक दशायें, अर्थशास्त्र तथा अन्य शास्त्रों से सम्बद्ध प्रतीत होती है। प्रतिमा में मंदिर के परिवेश में बालुका डालने का विधान केवल आपस्तम्भ सूत्रों में ही मिलता है। मरे हुये व्यक्तियों की प्रतिमाओं की स्थापना भी शिशुनाग राजाओं के युग की याद दिलाता

है मथुरा में शिशुनाग राजाओं की प्रस्तर मूर्तियाँ खोज में मिली हैं।

11. भरतवाक्यों में उल्लिखित ''राजसिंह'' शब्द व्यक्ति वाचक नहीं है। हिमालय से लेकर विन्ध्य तक शासन करने वाला राजा का संकेत संभवतः नन्दवंश की ओर है।

उक्त अन्तरंग एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर पाश्चात्य विद्वानों ने भास का समय चतुर्थ शतक तथा पंचम शतक के बीच माना है। वही भारतीय विद्वानों की धारणा ई•पू• तृतीय शताब्दी से लेकर ई•पू• द्वितीय शताब्दी के बीच की है।

2.5 भास की रचनायें –

श्री टी• गणपति शास्त्री ने सर्वप्रथम भास के तेरह नाटकों को भास के नाम से प्रकाशित करवाया। जब ये नाटक प्रकाश में आये तो यह प्रश्न प्रारंभ से ही पुरजोर शब्दों में उठाया गया कि क्या ये ग्रन्थ भास के द्वारा ही लिखे गये और यदि भास इनके लेखक हैं तो क्या सभी नाटकों के हैं अथवा कुछेक के ही। पर इन नाटकों के सूक्ष्म अन्वीक्षण से यह स्पष्ट लक्षित हो जाता है कि इन सभी नाटकों के रचयिता एक ही व्यक्ति थे। इस संदर्भ में अनेक प्रमाण व इन नाटकों में पायी जाने वाली समानताओं को प्रस्तुत किया गया। उन साम्यों के आधार पर यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया कि इन नाटकों का रचयिता कोई एक ही व्यक्ति था।

इनके पश्चात् यह विवाद उपस्थित हुआ कि इन नाटकों के प्रणेता भास ही थे अथवा अन्य कोई। डॉ• ए•डी• पुसालकर तथा प्रो• ए•बी• कीथ इन्हें भासकृत बताते हैं। इसके ठीक विपरीत पिशरोती, कुन्हनराजा, देवधर तथा विन्टरनित्ज इन्हें भासकृत नहीं मानते। मध्यम मार्ग डॉ• सुकथनकर आदि का है जो कुछ नाटकों को तो भासकृत मानते हैं पर कुछ को भास के नाम के साथ पीछे से जोड़ा गया मानते हैं।

यह सब प्रारंभिक स्थिति थी। वर्तमान में प्रायः अधिकांश विद्वानों की यह मान्यता है कि ये रचनायें भास की हैं। इन कृतियों के मूलतः तीन स्त्रोत हैं – रामकथा, महाभारत तथा लोककथा।

क. रामकथा पर आश्रित नाटक – 1. प्रतिमा 2. अभिषेक

ख. महाभारत पर आश्रित नाटक – 1. मध्यम व्यायोग 2. दूतघटोत्कच 3. कर्णभार 4. दूतवाक्य 5. उरुभंग 6. पंचरात्र 7. बालचरित

ग. लोककथा पर आश्रित नाटक – 1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण 2. स्वप्नवासवदत्तम् 3. अविमारक 4. दरिद्रचारूदत्त।

भास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

1. **प्रतिमा** – यह सात अंकों का नाटक है, जिसमें भास ने राम वनगमन से लेकर रावणवध तथा राम राज्याभिषेक तक की घटनाओं को स्थान दिया है। महाराज दशरथ की मृत्यु के उपरान्त ननिहाल से लौट रहे भरत अयोध्या के पास मार्ग में स्थित देवकुल में पूर्वजों की प्रतिमायें देखते हैं, वहाँ दशरथ की प्रतिमा देखकर वे उनकी मृत्यु का अनुमान कर लेते हैं। प्रतिमा दर्शन की घटना प्रधान होने से इसका नाम प्रतिमा नाटक रखा गया है।

प्रतिमा निर्माण की कथा भास की अपनी मौलिकता है। भास ने इस नाटक में मौलिकता

लाने में प्रचलित रामचरित से पर्याप्त पार्थक्य ला दिया है। यद्यपि ये सारी घटनायें प्रचलित कथा से भिन्न हैं, पर नाटकीय दृष्टि से इनका महत्व सुतरां ऊँचा है और पाठक अथवा दर्शक की कुतूहल वृद्धि में ये घटनायें सहायक हुई हैं। इस नाटक में रामायणीय कथा से भिन्नतायें इस प्रकार हैं – प्रथम अंक में सीता द्वारा परिहास में वल्कल पहनना भास की मौलिकता है। तृतीय अंक में प्रतिमा का सम्पूर्ण प्रकरण ही कवि कल्पित है और यह कल्पना ही नाटक की आधारभूमि बनायी गयी है। पाँचवें अंक में सीता का हरण भी यहाँ नवीन ढंग से बताया गया है।

यहाँ राम के उटज में वर्तमान रहने पर ही रावण वहाँ आता है और दशरथ के श्राद्ध के लिए उन्हें काञ्चनपार्श्व मृग लाने को कहता है तथा उन्हें काञ्चन मृग दिखाकर दूर हटाता है। यह सम्पूर्ण प्रसंग नाटककार द्वारा गढ़ा गया है। पांचवें अंक में सुमंत्र का वन में जाना तथा लौटकर भरत से सीताहरण बताना कवि कल्पना का प्रसाद है। कैकेयी द्वारा यह कहना भी कि उसने ऋषिवचन सत्य करने के लिए राम को वन भेजा भास की प्रसूति है। अन्ततः सप्तम अंक में राम का वन में ही राज्याभिषेक इस नाटक में मौलिक ही है।

प्रतिमा नाटक भास के सर्वोत्तम नाटकों में से एक है। सात अंकों के इस नाटक में भास की कला पर्याप्त ऊँचाईं को प्राप्त कर चुकी है। इस नाटक में भास ने पात्रों का चारित्रिक उत्कर्ष दिखाने का भरसक प्रयास किया है। इतिवृत्त तथा चरित्र चित्रण दोनों दृष्टियों से यह नाटक सफल हुआ है। भावों के अनुकूल भाषा तथा लघु विस्तारी वाक्य भास के नाटकों की अपनी विशेषताएँ हैं। यह करुणरस प्रधान नाटक है तथा अन्य रस इसी में सहायक बनकर आये हैं।

2. **अभिषेक** – यह भी रामकथा पर आश्रित है। इसमें छः अंक हैं। इसमें रामायण के किष्किंधाकाण्ड से युद्धकाण्ड की समाप्ति तक की कथा अर्थात् बालिवध से राम राज्याभिषेक तक की कथा वर्णित है। रामराज्याभिषेक के आधार पर ही इसका नामकरण किया गया है। कथानक को सजाने संवारने में नाटककार ने पर्याप्त मौलिकता का परिचय दिया है। बालिवध को न्याय्य रूप देने का भी नाटककार ने पर्याप्त प्रयास किया है।

इस नाटक के नायक मर्यादापुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र हैं। लोकोपदेश उनके चरित्र का प्रधान भाग है। लक्ष्मण का चरित्र इस नाटक में विशेष प्रस्फुटित नहीं हो सका है। वे श्रीराम के एक आज्ञाकारी सेवक तथा विनीत भक्त के रूप में सामने आते हैं। सुग्रीव का चरित्र इस नाटक में प्रारंभ से लेकर अन्त तक किसी न किसी रूप में वर्तमान रहता है। विभीषण न्यायप्रिय भगवद् भक्त के रूप में अंकित किया गया है। रावण क्रूर, दुराचारी तथा परस्त्री लम्पट के रूप में चित्रित किया गया है।

अभिषेक नाटक के प्रणयन में भास ने पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। यद्यपि काव्य तथा नाटकीयता की दृष्टि से यह नाटक प्रतिमा नाटक की अपेक्षा अवर कोटि का है तथापि इस नाटक की अपनी विशेषतायें हैं। राम–रावण युद्ध अपनी विशिष्टताओं में बेजोड़ है। पात्रों का कथोपकथन आकर्षक है। छोटे–छोटे तथा सरल वाक्यों का विन्यास भास की अपनी विशेषता है तथा उस विशेषता का दर्शन इस नाटक में होता है।

इस नाटक का प्रधान रस वीर है जो समग्र नाटक में व्याप्त है, पर करूण रस भी यत्र तत्र अनुस्यूत है। इसकी सत्ता बालिवध के अनन्तर, सीता के सन्ताप आदि में देखी जा सकती हैं। श्रृंगार का इसमें अभाव है तथा उसके लिए कहीं अवसर भी नहीं आया है।

3. **मध्यम व्यायोग** – यह एक अंक का व्यायोग है। व्यायोग रुपक का एक भेद होता है। इसकी

कथावस्तु का आधार महाभारत है। इसमें पाण्डवों के वनवास काल में भीम द्वारा घटोत्कच के पंजे से एक ब्राह्मण बालक की मुक्ति की कथा है। मध्यम शब्द मध्यम पाण्डव भीम और ब्राह्मण के मध्यम पुत्र दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसलिए इस नाटक का नाम ''मध्यम व्यायोग'' है।

नाटकीय दृष्टि से यह नाटक उत्तम कोटि का है, क्योंकि इस परिपाक तथा भावोन्मेष में नाटककार को पूरी सफलता प्राप्त हुई है। कथोपकथनों में कहीं वैरस्य नहीं आता तथा दर्शक का कुतूहल प्रतिक्षण बढ़ता हुआ दिखाई देता है। इन कथोपकथनों में भाषा भी बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। लम्बे समासान्त पदों का यहाँ अभाव है। भाषा सरलता में बेजोड़ है। घटनाक्रम में सत्वरता प्रभावोत्पादन में चार–चाँद लगा देती है। भास का काव्य कर्म भी इस रुपक में सफल रहा है।

4. **कर्णभार** – यह भी एक अंक के कथानक वाला महाभारत की कथावस्तु से सम्बद्ध व्यायोग है। द्रोणाचार्य के परलोक सिधारे जाने पर कर्ण को सेनापति बनाया जाता है तथा युद्ध का भार उस पर आ पड़ता है, इसलिए नाटक का नाम ''कर्णभार'' है।

''कर्णभार'' शीर्षक की व्याख्या विद्वानों ने अनेक प्रकार से की है। प्रो• ए•डी• पुसालकर की सम्मति में कानों के भारभूत कुण्डलों का दानकर यहाँ कर्ण की अद्‌भुत दानशीलता वर्णित की गई है। अतः कानों के आधारभूत कुण्डलों के दान को केन्द्र मानकर इस नाटक की रचना करने से इस नाटक का नाम ''कर्णभार'' है। डॉ• विन्टरनित्स ने कर्णभार की व्याख्या कर्ण के कठिन कार्य से की है। डॉ• भट्‌ट की धारणा है कि कर्ण की चिन्ता ही भारस्वरूप हो गई है। इसी बात को ध्यान में रखकर इस नाटक का नाम कर्णभार रखा गया है। कुछ लोगों के मत में कर्ण द्वारा प्राप्त युद्ध कौशल उनके लिए भारभूत हो गया था, अतः इस नाटक का नाम कर्णभार पड़ा।

इस नाटक में दो पात्रों का चरित्र मुख्य रूप से चित्रित है। एक है इस नाटक के नायक कर्ण और दूसरे हैं, छद्म ब्राह्मण वेशधारी देवराज इन्द्र। कर्ण के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता जो यहाँ उभर कर सामने आयी है, वह है उसकी अपूर्व ब्राह्मण निष्ठा तथा महती दानशीलता। वह ब्राह्मणों के लिए सर्वस्व दान करने के लिए तत्पर दिखाई पड़ता है। जब इन्द्र गौ, सुवर्ण आदि लेना अस्वीकार करते हैं, तब वह अपना सिर देने की बात कहता है। उसका विश्वास है कि मरने पर भी यश ही स्थिर रहता है – <u>''हतेषु देहेषु गुणा धरन्ते''</u>। कर्ण के चरित्र की दूसरी बड़ी विशे ाता है कि वह दान से किसी प्रतिफल की आशा नहीं रखता।

इन्द्र के चरित्र में स्वार्थी रुप के अतिरिक्त अन्य कोई विशेषता लक्षित नहीं होती। शल्य का चरित्र कोई विशेष उभरकर सामने नहीं आया है।

अपने लघु विस्तार में यह नाटक पूर्ण है। काव्यरस के परिपाक तथा नाटकीय तत्वों के निर्वाह दोनों दृष्टियों से यह नाटक उच्च कोटि का है। यद्यपि नाटक का विषय वीर रस और युद्ध भूमि से ही सम्बन्ध रखता है, पर नाटक में करुण रस की ही विशष प्रभा दिखाई पड़ती है।

5. **पंचरात्र** – यह तीन अंकों का ''समवकार'' हे। इसकी कथा महाभारत के विराट पर्व पर आधारित है। इसका नामकरण स्पष्ट रूप से पॉच रात्रियों में पाण्डवों को ढूँढनें की बात से हुआ है। द्रोणाचार्य के सत्प्रयास से पाण्डव मिल जाते हैं तथा दुर्योधन द्वारा उन्हें आधा राज्य दे दिया जाता है।

इस नाटक में सबसे प्रधान चरित्र दुर्योधन का चित्रित है। आरंभ से अन्त तक वह नाटक में वर्तमान है। नाटक में सर्वप्रथम एक धार्मिक राजा के रूप में उसका चरित्र सामने आया है।

पाण्डवों को राज्य भ्रष्ट कर वह महान् यज्ञ का प्रवर्तन करता है। यज्ञ में सभी देश देशान्तर के राजा उसको कर देने उपस्थित होते हैं। यह उनके महान् शौर्य पराक्रम को घोषित करता है। अवभृथ स्नान के समय दुर्योधन की अटूट गुरूभक्ति भी सामने आती है।

काव्योत्कर्ष की दृष्टि से यह रुपक उत्तम कोटि का कहा जायेगा। सरल शब्दावली में भावोन्मेष भास की अपनी विशेषता है। शब्दों के आश्रय से भास ऐसा चित्र खड़ा कर देते हैं कि पूरा दृश्य ही सामने आ जाता है। अलंकारों की संघटना भी नितान्त आकर्षक है। स्थान–स्थान पर सूक्तियाँ इस बारीकी के साथ दी गई हैं कि प्रभावोत्पादन में वे दूनी वृद्धि कर देती हैं।

इस रूपक का प्रधान रस वीर है। श्रृगांर का इसमें पूर्णरूपेण अभाव है, जो नाटक में स्त्रीपात्रों के न आने से हुआ है। संक्षेप में इसे भासे की नाट्यचातुरी का अनुपम उदाहरण कहा जा सकता है।

6. **उरुभंग** – यह भी महाभारत की कथा पर आश्रित एक एकांकी है, इसमें व्यायोग के लक्षण घटित होते हैं। द्रोपदी के अपमान का प्रतिशोध लेने हेतु भीम व दुर्योधन का गदायुद्ध इसमें वर्णित हुआ है। इसमें एक ही अंक है तथा समय व स्थान की अन्विति का पूर्ण रूप से पालन किया गया है। नाटक की विशि टता इसके दुःखान्त होने के कारण है।

इस रुपक का नायक दुर्योधन है। उसके चरित्र विन्यास में नाटककार ने पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है। इस एंकाकी में नाटककार ने उसके चरित्र को नितान्त उदात्त तथा प्राञ्जल रूप में प्रदर्शित किया है। वह शौर्य पराक्रम का जीवन्त प्रतीक है। दुर्योधन के अतिरिक्त अश्वत्थामा तथा बलराम का व्यक्तित्व भी अपने में महत्वपूर्ण है।

संस्कृत नाट्य–साहित्य में उरुभंग अपना विशिष्ट स्थान रखता है। नाटकीय कौशल की दृष्टि से यह नाटक प्रशंसनीय है। कथोपकथनों में स्वाभाविकता सर्वत्र परिलक्षित होती है। समय और पात्र के अनुकूल ही वार्तालापों की संघटना की गई है। दुर्योधन के उरुभंग हो जाने पर बलराम जी की चे टाओं तथा कथनों में पर्याप्त स्वाभाविकता है।

रस की दृष्टि से भी नाटककार को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। नाटक में करुण तथा वीर रस परस्पर अनुस्यूत हैं। इन दोनों रसों के चित्रण में लेखक को पर्याप्त सफलता मिली है।

7. **बाल चरित** – इसमें पाँच अंक हैं, यह नाटक भगवान् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित है। पुराणों मे ंयह प्रसंग बहुचर्चित है। विशेषतः श्रीमद्भागत महापुराण का तो यही सार है। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से कंस वध तक की कथा वर्णित है।

इसमें बाल रुपधारी भगवान् श्री कृष्ण की लीलायें व चरित्र प्रदर्शित है। अतः इस नाटक का नाम बालचरित रखा गया है।

इस नाटक में नायक के रूप में भगवान् श्री कृष्ण का चरित्र वर्णित है। नाटककार इन्हें साक्षात् परात्पर ब्रह्म के रूप में चित्रित करता है। पृथ्वी के भार को दूर करने तथा गो–ब्राह्मण की रक्षा एवं असुरों के संहार के लिये उन्होंने नर रूप धारण किया है। इसमें कृष्ण का अलौकिक एवं मानवीय दोनों रूप स्पष्टतः देखेन को मिलते हैं।

कृष्ण के अलावा बलराम, वसुदेव जी एवं कंस का चरित्र भी इस नाटक में चित्रित किया गया है। वासुदेव जी का चरित्र शालीनता से ओतप्रोत है। कंस का चरित्र अत्यधिक कठोर प्रदर्शित किया गया है।

नाटकीय दृष्टि से इसे एक सफल नाटक कहा जा सकता है। इसका नायक प्रख्यात तथा धीरोदात्त है। वह नायक के सभी गुणों से सम्पन्न है। इस की दृष्टि से इसमें वीर रस प्रधान है तथा करूण, रौद्र आदि रस अंग रूप में आये हैं। भाषा कथोपकथनों के अनुरूप है। सरल भाषा दर्शक के हृदय पर अपना अपूर्व प्रभाव डालती है।

काव्य परिपाक की दृष्टि से यह नाटक अत्यन्त प्रशंसनीय है। अलंकारों का सुन्दर व समुचित प्रयोग किया गया है। बालचरित का निम्न श्लोक अनेक अलंकार ग्रन्थों में उल्लिखित हुआ है –

''लिम्पतीव तमोऽगांनि वर्षतीवान्जनं नभः।
असत्पुरूष सेवेव दृष्टिर्निष्फलतां गता।। (1/15)

रात्रि के वर्णन में नाटककार को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। शब्दों के द्वारा भावदशा के चित्रण में भास ने महान् सफलता प्राप्त की है। शब्दों के आश्रय से सम्पूर्ण भावदशा सारी परिस्थितियाँ साक्षात् दृष्टिगत होने लगती हैं।

8. **दूतवाक्य** – यह भी एकांकी नाटक है। रुपक के भेदानुसार यह ''व्यायोग'' है। इसमें श्रीक भण का दूत के रूप में वर्णन हुआ है। श्रीकृष्ण दुर्योधन के पास संधि का प्रस्ताव लेकर आते हैं किन्तु उनका वहाँ अपमान किया जाता है तथा वे असफल होकर लौटते हैं। वे कुद्ध होकर सुदर्शन चक्र का आह्वान करते हैं तथा उसे दुर्योधन का वध करने का आदेश देते हैं। परन्तु वह वैसा करने से रोकता है। इसकी कथावस्तु महाभारत से ली गई है।

इसका नामकरण बहुत ही सटीक है। सम्पूर्ण नाटक दूतवेषधारी श्रीकृष्ण के वचनों से अनुप्रमाणित है। अतः ''दूतवाक्य'' नाम पूर्णतया सार्थक है। सम्पूर्ण नाटक वीररस से ओतप्रोत है। श्रीक भण के अस्त्रों की सहसा उद्भावना तथा विराट रूप प्रदर्शन में अद्भुत रस का चमत्कार है। प्रधान रूप से आरभटी वृत्ति की योजना है।

राजनीतिक सिद्धान्तों की यह नाटक खान है। ''दायाद्य'' को लेकर दुर्योधन एवं श्रीकृष्ण के मध्य हुआ वार्तालाप अत्यन्त रोचक एवं सटीक है। राज्यशासन के संदर्भ में दुर्योधन का कथन अत्यन्त सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण है। वह कहता है कि ''राज्य शासन असक्तों का काम नहीं वह तो महान् बलशालियों से सिद्ध होता है –

''राज्यं नाम नृपात्मजैः सहृदयैर्जित्वा रिपून् भुज्यते।
तल्लोके न तु याच्यते न तु पुनर्दीनाय वा दीयते।।

भास की भाषा सरल, पात्रानुकूल व रसानुरूप है।

9. **दूत घटोत्कच** – यह एकांकी भी महाभारत की कथा पर आधारित है। इसमें अभिमन्यु की मृत्यु के पश्चात् श्रीकृष्ण घटोत्कच को दूत रूप में धृतराष्ट्र के पास भेजते हैं। दुर्योधन क्रुद्ध होकर घटोत्कच का तिरस्कार करता है। दोनों में परस्पर वाद विवाद होता है। घटोत्कच दुर्योधन को युद्ध के लिये ललकारता है। धृतराष्ट्र उसे ान्त करते हैं। अन्त में घटोत्कच अर्जुन द्वारा अभिमन्यु का बदला लेने की बात कहकर धमकी देते हुये निकल जाता है। घटोत्कच के दूत बनकर जाने के कारण ही इसका नाम ''दूत घटोत्कच'' रखा गया है।

इस नाटक का प्रधान पात्र घटोत्कच है। वह वीर रस से ओतप्रोत है। वीरता के साथ–साथ उसमें शालीनता तथा शिष्टता भी समभावेन दृष्टिगत होती है। वह वाक्पटु भी है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि नाटककार ने घटोत्कच का चरित्र बहुत ही उन्नत रूप में प्रस्तुत किया है।

घटोत्कच के अलावा दुर्योधन, शकुनि तथा दुःशासन के चरित्र भी इस नाटक में उभरकर समाने आये हैं। ये सभी अत्यन्त अभिमानी तथा क्रूर प्रकृति के हैं। निहत्थे बालक अभिमन्यु को मारकर वे प्रसन्न होते हैं।

नाटक वीर तथा करुण रस का सम्मिलन है। एक और अभिमन्यु की मृत्यु से करुण रस का वातावरण प्रस्तुत है तो दूसरी और घटोत्कच तथा दुर्योधनादि के विवाद में वीररस अपना अस्तित्व व्यक्त करता है। यह नाटक वास्तविकता के निकट प्रतीत होता है मानव हृदय की आकांक्षाओं एवं कमजोरियों के चित्रण में नाटककार अत्यन्त सफल है।

इस नाटक में भरतवाक्य का अभाव है, अतः कुछ लोग इसे अपूर्ण बतलाते हैं, संभव है आगे इसमें कुछ अंश रहा हो। परन्तु यह नाटक अपने प्रयोजन में पूर्ण है।

10. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** – यह लोककथाश्रित नाटक है। इसमें कौशाम्बी के राजा वत्सराज उदयन द्वारा उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता के हरण की कथा है। इसमें चार अंक हैं। इस नाटक का नामकरण अमात्य यौगन्धरायण की प्रतिज्ञाओं पर आश्रित है। इस नाटक में अमात्य यौगन्धरायण अपने स्वामी को शत्रु के बन्दीगृह से छुड़ा लाने की प्रतिज्ञा करता है तथा अनेक विघ्नों के उपस्थित होने पर भी उसे पूर्ण कर बताता है।

इस नाटक का नायक वत्स देश का राजा उदयन कलाकारों का सिरमौर है। वह भरतवंशी राजा है। वह अत्यन्त रूपवान है तथा उसके रूप पर महासेन प्रद्योत की स्त्री भी मुग्ध है। वीणावादन में वह आचार्य है। उसके वीणावादन की प्रसिद्धि देश देशान्तर में व्याप्त है तथा बन्दी अवस्था में ही उसे प्रद्योतपुत्री वासवदत्ता को वीणा सिखाने का दायित्व मिलता है। अतुलित कला प्रेमी होने के साथ–साथ वह शौर्य तथा पराक्रम से भी ओतप्रोत है। कृत्रिम गज को पकड़ने का प्रयास करते समय जब प्रद्योत की सेना उस पर टूट पड़ती है, वह किंचित् मात्र भी विचलित नहीं होता तथा अनेकों को मृत्यु के घाट भेज देता है। यहाँ उसके धैर्य तथा पराक्रम की परीक्षा होती है जिसमें वह सफल होता है।

जब उसे बन्दी बना लिया जाता है तो वह अपने आपको मन से बन्दी नहीं मानता तथा यौगन्धरायण द्वारा मुक्ति का पूरा प्रबन्ध कर लेने पर भी वासवदत्ता को लेकर चलने का निश्चय करता है। इस काम में वह अपने कौशल तथा यौगन्धरायण के बुद्धि कौशल से सफल होता है।

उदयन के अलावा अमात्य यौगन्धरायण की भी इस नाटक में महती भूमिका है। वह बुद्धिमत्ता तथा नीतिकौशल का चूडान्त निदर्शन है। अन्य पात्रों में उज्जयिनी के राजा महासेन प्रद्योत प्रतापी राजा हैं। सर्वत्र उनके आधिपत्य का सम्मान है। वह गुणग्राहक है। मन ही मन वह वत्सराज उदयन के गुणों का प्रशंसक है। रुमण्वान तथा विदूषक दोनों स्वामिभक्त हैं।

'प्रतिज्ञायौगन्धरायण'' भास के सफल नाटकों में अपना स्थान रखता है। कथानक का विन्यास, पात्रों का चरित्र–चित्रण, संवाद योजना एवं रसयोजना सभी का इस नाटक में सुन्दर समन्वय है। काव्यकला के परिपाक की दृष्टि से भी यह नाटक उच्चस्तरीय है। इसमें राजनीति एवं कूटनीति का साम्राज्य है। स्वामीभक्ति का महत्त्व इस नाटक में सर्वत्र लक्षित होता है। सूक्तियों का इसमें प्राचुर्य है।

11. **स्वप्नवासवदत्तम्** – भास विरचित रूपकों मं यह सर्वश्रेष्ठ है। वस्तुतः यह भास की नाट्यकला का चूडान्त निदर्शन है। यह छः अंकों का नाटक है। इसमें प्रतिज्ञायौगन्धरायण से आगे की कथा का वर्णन है। इस नाटक का नामकरण राजा उदयन के द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता के दर्शन पर आधारित है। स्वप्न वाला दृश्य संस्कृत नाट्य साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है।

यह नाटक नाट्यकला की सर्वोत्तम परिणिति है। वस्तु, नेता एवं रस–तीनों ही दृष्टि से यह उत्तम कोटि का है। नाटकीय संविधान, कथोपकथन, चरित्र–चित्रण, प्राकृतिक वर्णन तथा रसों का सुन्दर सामन्जस्य इस नाटक में पूर्ण परिपाक को प्राप्त हुये हैं। मानव हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव दशाओं का चित्रण इस नाटक में सर्वत्र देखा जा सकता है। नाटक का प्रधान रस श्रृंगार है तथा हास्य की भी सुन्दर उद्भावना हुई है।

12. **अविमारक** – यह लोककथा सम्बन्धी छः अंकों का रूपक है। इसमें राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरंगी का राजकुमार अविमारक से प्रणय एवं विवाह का वर्णन है। नायक के आधार पर इसका नामकरण अविमारक रखा गया है। अविमारक का यथार्थ नाम वि णुसेन था तथा अवि रूपधारी असुर को मारने से उसकी संज्ञा अविमारक है।

नाटक का नायक अविमारक है। वह अतुलित पराक्रमशाली है। सहज पराक्रमशीलता तथा पर दुःखकातरता उसके स्वभाव के अंग हैं। इसी कारण वह राजकुमारी कुरंगी पर हाथी के आक्रमण करने पर उसे मुक्त करता है। अविमारक एक धीरललित नायक के रूप में इस नाटक में प्रस्तुत किये गये हैं। नाटक की नायिका कुरंगी है। वह रूपयौवन सम्पन्ना है। अन्य पात्र सौवीरराज तथा कुन्तिभोज हैं।

नाटकीयता की दृष्टि से भास के अन्य नाटकों की तरह यह नाटक भी सफल है। सरल भाषा का प्रयोग नाटक की अभिनेयता में चार–चाँद लगा देता है, कथोपकथनों में स्वाभाविकता तथा भावांकन भास की अपनी विशेषता है। छोटे–छोटे वाक्य, सरल भाषा, रसानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग इस नाटक को उच्चकोटि में ला खड़ा करता है। इस नाटक का प्रधान रस श्रृंगार है तथा अन्य रस उसके सहायक बनकर आये हैं।

काव्यकला की दृष्टि से भी यह नाटक नितान्त उदात्त है। परिस्थितियों, अवस्थाओं एवं भावों का सटीक शब्दों एवं आलंकारिक भाषा में वणर्न सर्वत्र विद्यमान है। प्रकृति चित्रण में नाटककार पूर्णतया सफल रहे हैं। नाटक में सूक्तियाँ यत्र–तत्र बिखरी हुई हैं। प्रसिद्ध सूक्ति ''कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्टम्'' का भास ने यहाँ उत्तर उपस्थित किया है – ''कन्या पितृत्वं बहुवन्दनीयम्।''

इस प्रकार सभी दृष्टियों से यह रूपक प्रशस्त कहा जा सकता है।

13. **चारुदत्त** – महाकवि भास की नाट्य श्रृंखला में चारुदत्त अन्तिम कड़ी माना जाता है। इसकी कथावस्तु चार अंकों में विभाजित है। शूद्रक के प्रसिद्ध प्रकरण ''मृच्छकटिक'' का आधार यही माना जाता है। इसमें कवि ने दरिद्र चारूदत्त एवं वेश्या वसन्तसेना की प्रणय–कथा का वर्णन किया है। एक अन्य पात्र शकार है जो प्रतिनायक के रूप में है। प्रेम के आदर्श की सामाजिक प्रस्तुति इसमें दृष्टव्य है।

इस नाटक का नायक वणिक्पुत्र आर्य चारूदत्त है। उसी के नाम पर इस नाटक का नामकरण हुआ है। नाटक की सम्पूर्ण घटनाएँ उसी के सुकृत्यों पर केन्द्रित हैं। चारुदत्त की दरिद्रता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण इसमें किया गया है। चारुदत्त अत्यन्त दानी, गुणवान् एवं

रूपवान है। दानशीलता के कारण ही वह दरिद्र हो गया है। चारुदत्त धीर प्रक ति का मानव है। वह कला मर्मज्ञ है। वह महान् धार्मिक है तथा निर्धनावस्था में भी पूजा एवं बलिकर्म सम्पन्न करता है।

नाटक की नायिका वसन्तसेना है। वह उज्जयिनी की एक प्रसिद्ध गणिका है। वह अत्यन्त रूपवती है। शकार तथा विट उसके रुप–जल के पिपासु हैं। गणिका होते हुये भी उसका चारित्रिक स्तर ऊँचा है। वह चारुदत्त के गुणों पर अनुरक्त है। उसके एक–एक गुण वसन्तसेना के प्रेम को दृढ़ करते जाते हैं। शकार से रात्रि में रक्षा और विदूषक के साथ वसन्तसेना को सकुशल घर पहुँचाना, चेट को प्रवारक देना, वसन्तसेना के न्यास की चोरी हो जाने पर उसे अपने स्त्री का अत्यन्त मूल्यवान हार देना – ये सभी गुण वसन्तसेना के हृदय में स्थायी प्रभा डालते हैं तथा वह स्वयं अभिसार के लिये उसके पास चल देती है। वसन्तसेना गणिका होने पर भी धन लोभिनी नहीं है। वह अत्यन्त उदार मनवाली नायिका है।

नाटक के अन्य पात्रों में चारुदत्त का मित्र मैत्रेय विदूषक है। वह जन्म का ब्राह्मण है। वह अपने मित्र का विपत्ति–सम्पत्ति दोनों समयों में साथ देने वाला है। मैत्रेय संस्कृत नाट्कों में अन्य विदूषकों के समान केवल भोजनभट्ट मूर्ख ब्राह्मण नहीं है। वह समयानुसार उसके हित सम्पादन के लिए कठिन कार्यों को भी सम्पन्न करता है।

शकार इस नाटक में खलनायक है। वह मूर्ख है। सामान्य से सामान्य बात का भी उसे ज्ञान नहीं है। गुणवानों के प्रति उसका कोई आकर्षण नहीं है। वह वसन्तसेना के रूप पर मुग्ध है तथा बलात् उससे प्रेम करना चाहता है।

यह नाटक दैव–दुर्विपाकवश अकस्मात् समाप्त हो जाता है तथा यह सहज में अनुमित हो जाता है कि अपने वर्तमान रूप में यह पूर्ण नहीं है। यह भी संभावना है कि इस नाटक की रचना करते समय भास की मृत्यु हो गई हो तथा इस प्रकार यह अधूरा रह गया हो।

यह नाटक सरल व सुबोध है। चरित्र–चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है। नाना प्रकार के सज्जन से सज्जन तथा दुर्जन से दुर्जन यहाँ वर्तमान हैं। एक ओर चारुदत्त सज्जनता की सीमा है तो दूसरी ओर शकार दुर्जनता का चूडान्त प्रतीक है, कथोपकथन की दृष्टि से भी यह नाटक उच्च कोटि का है।

इस नाटक में भास का कविहृदय भी पूर्णरूप से अभिव्यक्ति को प्राप्त हुआ है। प्रकृति का चित्रण भी स्वाभाविक एवं हृदयाकर्षक है। नाटक का प्रधान रस श्रृंगार है तथा अन्य रसों का भी समयानुसार सुन्दर प्रयोग किया गया है।

इस नाटक में देशकाल का चित्रण बड़ा ही स्वाभाविक है। द्यूत का वर्णन दृष्टव्य है। दास–प्रथा का संकेत सज्जलक द्वारा वसन्तसेना की चोरी को मुक्त कराने के उद्योग से लगता है। चोरी का दृष्टान्त सज्जलक का कृत्य है।

नाटक की भाषा सरल, सरस एवं पात्रानुकूल है।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये तथा अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

निम्न प्रश्नों के उत्तर सामने अंकित को ठक में लिखिये –

1. संस्कृत नाट्य साहित्य का जनक कहा गया है –

(अ)	भरत को	(ब)	भास को	
(स)	कालिदास को	(द)	शूद्रक को	( )

2. ''भासो हासः'' कथन है –

(अ)	दण्डी का	(ब)	राजशेखर का	
(स)	जयदेव का	(द)	वामन का	( )

3. भास जाति से थे –

(अ)	ब्राह्मण	(ब)	शूद्र	
(स)	क्षत्रिय	(द)	वैश्य	( )

4. भास निवासी थे –

(अ)	दक्षिणी भारत के	(ब)	उत्तरी भारत के	
(स)	कश्मीर के	(द)	पश्चिमी भारत के	( )

5. महाकवि कालिदास ने भास का उल्लेख किस ग्रन्थ में किया है –

(अ)	अभिज्ञान शकुन्तलम् में	(ब)	विक्रमोर्वशीयम् में	
(स)	मालविकाग्निमित्रम् में	(द)	कुमारसंभवम् में	( )

6. मरे हुये व्यक्तियों की प्रतिमाओं की स्थापना किस युग की याद दिलाता है–

(अ)	शुंग राजाओं के युग की	(ब)	शिशुनाग राजाओं के युग की	
(स)	क्षत्रप राजाओं के युग की	(द)	चन्द्रवंशी राजाओं के युग की	( )

7. भास विरचित रचनायें हैं –

(अ)	ग्यारह	(ब)	पन्द्रह	
(स)	तेरह	(द)	बारह	( )

8. ''प्रतिमा'' नाटक में अंकों की संख्या है –

(अ)	पाँच	(ब)	छः	
(स)	चार	(द)	सात	( )

9. ''मध्यम व्यायोग'' की कथावस्तु का आधार है –

(अ)	महाभारत	(ब)	रामायण	
(स)	लोककथा	(द)	जातकमाला	( )

10. ''पंचरात्र'' किस विधा का रूपक है –

(अ) नाटक (ब) प्रकरण

(स) समवकार (द) व्यायोग ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न – (उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिये)

1. नाटक को पंचम वेद होने का गौरव किसने प्रदान किया ?

2. नाट्‌य साहित्य के इतिहास में चिरस्मरणीय क्या बात है ?

3. महाकवि दण्डी ने किस ग्रन्थ में भास का स्मरण किया है ?

4. सर्वप्रथम भास के नाटकों का प्रकाशन कब व किसने किया ?

5. भास ने अपनी रचनाओं में विशेष रूचि किन वर्णनों में प्रदर्शित की है ?

6. भास किस धर्म के अनुयायी थे ?

7. अधिकांश पाश्चात्य विद्वान् कालिदास का समय क्या मानते हैं ?

8. कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में भास की किस कृति का श्लोक उद्‌धृत किया है ?

9. भास के नाटकों का आधार क्या है ?

10. भास के काल को लेकर भारतीय विद्वानों की क्या धारणा है ?

अभ्यास प्रश्न –

1. महाकवि भास के जीवनवृत्त पर संक्षेप में प्रकाश डालिये ?

(उत्तर सीमा – 100 शब्द)

2. महाकवि भास विरचित निम्नलिखित रचनाओं पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिये ?

(1) प्रतिमा नाटक (2) प्रतिज्ञा यौगन्धरायण (3) दूतवाक्यम्

3. महाकवि भास के स्थितिकाल पर एक लेख लिखिये ?

2.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

1 (ब), 2 (स), 3 (अ), 4 (ब), 5 (स), 6 (ब), 7 (स), 8 (द), 9 (अ), 10 (स),

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर :–

1. नाटक को पञ्चम वेद होने का गौरव भरत ने प्रदान किया।
2. भास द्वारा तेरह नाटकों की रचना करना नाट्य साहित्य के इतिहास में चिरस्मरणीय बात है।
3. महाकवि दण्डी ने अवन्तिसुन्दरीकथा' नामक ग्रन्थ में भास का स्मरण किया है।
4. सर्व प्रथम भास के नाटकों का प्रकाशन सन् 1912 में टी• गणपति शास्त्री ने किया।
5. भास ने अपनी रचनाओं में विशेष रुचि राजप्रसादों, अन्तःपुरों आदि के वर्णन में ली है।
6. भास वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
7. अधिकांश पाश्चात्यविद्वान् कालिदास का समय गुप्तकाल अर्थात् चतुर्थ शताब्दी मानते हैं।
8. कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में भास विरचित प्रतिज्ञा यौगन्धरायण के लोक को उद्धृत किया है।
9. भास के नाटकों को आधार रामायण, महाभारत तथा लोक कथायें हैं।
10. भास के काल को लेकर भारतीय विद्वानों की धारणा ई•पू• तृतीय शताब्दी से लेकर ई•पू• द्वितीय शताब्दी के बीच की है।

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर –

1. देखिये उपभाग 2.3
2. देखिये उपभाग 2.5
3. देखिये उपभाग 2.4

—————————

इकाई –3

स्वप्नवासवदत्तम् की समीक्षा एवं पात्रों के चरित्र चित्रण

इकाई की रूपरेखा :

3.0 उद्देश्य :–

संस्कृत के ऐच्छिक पाठ्यक्रम में महाकवि भास विरचित ''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक निर्धारित किया गया है। प्रस्तुत इकाई में उस नाटक की समीक्षा विविध मानदण्डों के आधार पर की गई है। साथ ही उस नाटक के प्रमुख पात्रों का भी चरित्रांकन किया गया है। इस इकाई को पढ़ाने के बाद आप–

i) ''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

ii) उसकी कथावस्तु को समझ सकेंगे।

iii) उसके प्रमुख पात्रों का परिचय प्राप्त करेंगे।

iv) नाटक की रस योजना के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

v) नाटककार की भाषा–शैली के विषय में जान सकेंगे।

vi) तत्कालीन परिस्थितियाँ एवं वातावरण का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

vii) नाटक की अभिनेयता के विषय में भी आपको जानकारी प्राप्त होगी।

viii) प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना :—

संस्कृत कविता कामिनी के हास भास का नाम संस्कृत नाट्य विधा के इतिहास में अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। उसके द्वारा विरचित त्रयोदश नाट्यकृतियों में ''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक का प्रमुख स्थान है। यह नाटक भास की नाट्यकला की सर्वोत्तम परिणति है। राजशेखर ने काव्यमीमांसा में कहा है कि जब नागरिकों ने परीक्षा करने के लिए भास के नाटक चक्र को अग्नि में डाला तो ''स्वप्नवासवदत्तम्'' को अग्नि ने नहीं जलाया। उनका यह कथन ''स्वप्नवासवदत्तम्'' की श्रेष्ठता को प्रमाणित करता है।

3.2 ''स्वप्नवासवदत्तम्'' की समीक्षा :—

किसी भी नाटक, कविता, कहानी या उपन्यास की जब समीक्षा की जाती है तो उसके कुछ निश्चित मानदण्ड निर्धारित होते हैं, उनके आधार पर उस कृति की समीक्षा की जाती है। जहाँ तक नाटक की समीक्षा का प्रश्न है, उसके लिए आचार्यों द्वारा मानदण्ड निर्धारित किये गये हैं। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी में जिस अर्थ में ''ड्रामा'' शब्द का प्रयोग होता है, उस अर्थ में संस्कृत साहित्य में ''रूपक'' शब्द का प्रयोग पाया जाता है। वैसे सामान्य तौर पर अधिकांश लोग इसे नाटक कहकर ही पुकारते हैं। किन्तु नाटक रूपकों का एक भेद मात्र है, वह रूपकों के दस प्रकारों में से एक प्रकार है। प्रमुख रूप से वस्तु, नेता तथा रस के आधार पर रूपक के दस भेद किये गये हैं —

''वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः'' (दशरूपक)

इस प्रकार किसी एक रूपक की कथावस्तु, उसके नायक नायिका की प्रकृति तथा उसका प्रतिपाद्य रस उसे अन्य प्रकारों से भिन्न करता है। अतः उस रूपक की समीक्षा के मूल आधार हम कथावस्तु, नेता या पात्र योजना तथा रस योजना को मान सकते हैं। इनके अतिरिक्त उसकी भाषा—शैली, देशकाल एवं वातावरण, अभिनेयता एवं उद्देश्य भी समीक्षकों द्वारा समीक्षा के मूल आधार माने गये हैं।

उक्त तत्वों के आधार पर ''स्वप्नवासवदत्तम्'' नाटक की समीक्षा संक्षेप में हम इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं —

(क) **वस्तु या कथावस्तु —** कथानक या कथावस्तु नाटक का प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण तत्व है। आचार्य धनन्जय के अनुसार नाट्यवस्तु दो प्रकार की होती है, एक आधिकारिक तथा दूसरी प्रासंगिक। मूल कथावस्तु को आधिकारिक तथा गौण कथावस्तु को प्रासंगिक कहते हैं। प्रासंगिक कथावस्तु का उद्देश्य अधिकारिक कथावस्तु की सौन्दर्य वृद्धि करना और मूल कार्य या व्यापार के विकास में सहायता देना है।

संस्कृत नाट्य साहित्य में सुप्रसिद्ध —'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की कथावस्तु का मूल आधार वत्सराज उदयन से संबंधित लोककथा है। यह कथा मूल रूप से कहाँ से ली गई है—पुराणों से अथवा कथासरित्सागर से या वृहत्कथा से इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। कतिपय विद्वानों का मत है कि यह वर्णन जिस रूप में कथा साहित्सागर में तथा भास के ''स्वप्नवासवदत्तम्'' में वर्णित है, इतना भिन्न है कि इस नाटक को वृहत्कथा पर आधारित नहीं माना जा सकता। साथ ही कोई भी इस प्रकार के अन्तः या बाह्य साक्ष्य भी उपलब्ध नहीं हैं जो इसको वृहत्कथा का ऋणी सिद्ध करने में समर्थ हो। ऐसा प्रतीत होता है कि महाकवि भास ने तत्कालीन जन समाज में प्रचलित दन्तकथाओं तथा मौखिक परम्पराओं का आश्रय लिया

हो, जो गुणाढ्य की वृहत्कथा की आधार रही हो। महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध गीतिकाव्य ''मेघदूत'' में ''प्राप्यावन्तीमुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्'' के द्वारा अवन्ति देश के गॉव–गॉव, जन–जन के मुख से सुनी जाने वाली उदयन की कथा का निर्देश कर इस सत्य को और अधिक प्रमाणित कर दिया है। संभवतः भास ने अवन्ति देश के जन–जन के कण्ठ से निकली हुई उदयन कथा को ही अपनी अलौकिक प्रतिभा से नाटकीय रूप प्रदान किया, ऐसा प्रतीत होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि या तो वृहत्कथा अथवा मौखिक परम्परा से प्राप्त लोककथा ही भास के ''स्वप्नवास्वदत्तम्'' नाटक का मूल आधार थी।

महाकवि भास ने अपनी प्रतिभा एवं कल्पना शक्ति के आधार पर लोक प्रसिद्ध उदयन की कथा को नाटकीय रूप प्रदान कर छः अंकों के एक सर्वश्रेष्ठ नाटक ''स्वप्नवासनदत्तम्'' की रचना की। इस नाटक की कथावस्तु को अंकानुसार संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रथम अंक :–

इस नाटक का प्रारंभ ''नान्द्यन्ते तत्रः प्रविशति सूत्रधारः'' इसी क्रम से होता है। सूत्रधार रंगमंच पर आकर प्रार्थना करता है कि बलराम जी की भुजाएँ दर्शकों की रक्षा करें। अनन्तर वह कुछ कहना ही चाहता है कि नेपथ्य में ''हटो हटो'' की आवाज होती है। उसे ध्यान से सुनने के बाद वह कहता है, अरे! यह तो मगध राजकुमारी के नौकर तपस्वियों को हटा रहे हैं। इतना कहकर वह चला जाता है।

इसके बाद अमात्य यौगन्धरायण परिव्राजक के वेष में तथा वासवदत्ता आवन्तिका के वेष में दिखाई पड़ते हैं। मगध नरेश दर्शक की माता तपोवन में निवास कर रही है उसी को देखने के लिए मगधेश्वर की बहिन पद्मावती आ रही है। इसी समय पद्मावती का कन्चुकी घोषणा करता है कि जिसे कुछ माँगना हो वह आये तथा राजकुमारी से माँगे, वहाँ के तापसों में से कोई याचना नहीं करता पर यौगन्धरायण आगे बढ़कर कहता है कि ''यह मेरी भगिनी है, इसका आप संरक्षण करें।'' पद्मावती कन्चुकी के द्वारा अपनी स्वीकृति देती है। इस पर यौगन्धरायण अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है।

इसी समय वत्सदेश के लावाणक ग्राम से एक ब्रह्मचारी वहाँ आता है। वह तापेवन के लोगों को वासवदत्ता के वियोग से दुःखी राजा उदयन का वृत्तान्त बतलाता है। वह कहता है कि पत्नी के विरह से उसकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई है परन्तु मंत्री रूमण्वान् उनका अच्छी प्रकार से संरक्षण कर रहा है। ब्रह्मचारी यह सुनाकर वहाँ से चला जाता है। इसके बाद पद्मावती से आज्ञा पाकर यौगन्धरायण के चले जाने के बाद तापसी से अनुरूप पति की प्राप्ति का आशीर्वाद लेकर पद्मावती वासवदत्ता एवं अपने परिवार के साथ प्रस्थान कर देती है।

द्वितीय अंक :–

इस अंक के प्रारंभ में पद्मावती तथा वासवदत्ता कन्दुक खेलती दिखाई देती हैं वासवदत्ता पद्मावती के साथ परिहास भी कर रही है। पद्मावती को वह महासेन की होने वाली वधू कहती है। इसी समय चेटी कहती है कि भर्तृदारिका पद्मावती उसके साथ सम्बन्ध नहीं चाहती। वह वत्सराज उदयन को चाहती है, क्योंकि वह बड़ा दयालु है। इसी समय धात्री का आगमन होता है। वह कहती है कि पद्मावती उदयन को दे दी गई है। वासवदत्ता को यह सुनकर ठेस लगती है तथा सहसा कह उठती है कि यह तो बड़ा बुरा हुआ। यद्यपि मनोवेग के कारण वह बोल जाती है परन्तु बाद में समाधान करते हुए कहती है कि पहले तो वह अपनी स्त्री के लिए इतना उन्मत्त था तथा अब विरक्त हो गया। इसी समय एक चेटी आकर कहती हे कि आज ही मंगल–मुहूर्त है अतः शीघ्रता कीजिए। धात्री के साथ सभी चली जाती हैं।

तृतीय अंक –

अंक के प्रारंभ में वासवदत्ता चिन्ताकुला दिखाई देती है। उसे बड़ा दुःख है कि वत्सराज उदयन भी अब दूसरे के हो गये। वह तर्क–वितर्क कर ही रही थी कि पुष्पों को लेने वहां एक चेटी पहुंचती है। वह उससे पद्मावती के लिए विवाहमाला (वरमाला) गूंथ देने के लिए अपनी महारानी का संदेश सुनाती है। विवशतः वासवदत्ता माला गूंथने लगती है। परन्तु उस माला में वह अविधवाकरण औषध को ही गूंथती है, सपली मर्दन को नहीं। इसी समय दूसरी दासी आकर हार को ले जाती है। इधर वासवदत्ता उदयन के द्वितीय विवाह को सुनकर दुःखी होती है तथा दुःख भुलाने के उद्देश्य से शयनागार में चली जाती है।

चतुर्थ अंक –

राजकीय उपवन का दृश्य है। उपवन में पद्मावती वासवदत्ता तथा एक दासी बैठी है। इसी समय उदयन और विदूषक भी वहां आ जाते हैं। उन्हें देखकर पद्मावती व वासवदत्ता दोनों लतामण्डप में चली जाती हैं। राजा और विदूषक शरत्कालीन सूर्य की धूप से व्याकुल होकर लतामण्डप में प्रवेश करना चाहते हैं परन्तु दासी भंवरों से व्याप्त अवलम्बन लता को हिलाकर उन्हें रोक देती है।

अतः वे लतामण्डप के बाह्य भाग में बैठक्र परस्पर वार्तालाप करते हैं। वहां विदूषक राजा से पूछता है – 'आप को तब वासवदत्ता अधिक प्रिय थी या अब पद्मावती?' राजा प्रारंभ में टालने का प्रयास करता है परन्तु अधिक आग्रह करने पर रूप, गुण और सौन्दर्य द्वारा पद्मावती की प्रशंसा करता है, साथ ही वह यह भी कहता है कि वह वासवदत्ता में अनुरक्त मेरे मन को खींच नहीं पाती है। यह सुनकर वासवदत्ता को परम प्रसन्नता होती है तथा राजा के दाक्षिण्य की पद्मावती भी प्रशंसा करती है। इसके बाद राजा विदूषक का मत पूछता है कि उसे कौन प्रिय है, इस प्रकार पारस्परिक वार्तालाप में वासवदत्ता का शोक उमडने के कारण राजा की आंखों में आंसू आने लगते हैं। विदूषक मुंह धोने के लिए पानी लाने जाता है। इधर अवसर पाकर वासवदत्ता पद्मावती को राजा के पास भेजकर स्वयं वहां से खिसक जाती है। विदूषक के लौटने पर पद्मावती उससे राजा के आंसू आने का कारण पूछती है। वह चतुरता से रहस्य छिपाते हुए उत्तर देता है कि आंखों में काश पुष्प का पराग पड़ जाने से आंसू आ गये। तब पद्मावती जल से राजा का मुखमार्जन कराती है। इसके बाद राजा को प्रणय संकट से बचाने के लिए विदूषक स्मरण दिलाता है कि उनको तो मगधराज के सम्मानार्थ एक उत्सव में जाना है, अतः शीघ्रता करनी चाहिए। राजा भी उसके प्रस्ताव का समर्थन कर वहां से प्रस्थान कर देता है।

पंचम अंक –

पंचम अंक में ज्ञात होता है कि पद्मावती शीर्षवेदना से पीड़ित है। इसकी सूचना राजा तथा वासवदत्ता को प्राप्त होती है। राजा अपनी रोग पीड़ित पत्नी के औषधोपचार के लिए शीघ्रता से सम्रुदगृहक जाते हैं। परन्तु वहां शय्या को रिक्त पाते हैं। वे उसकी प्रतीक्षा में शय्या पर स्वयं लेट जाते हैं। विदूषक उन्हें कहानी सुनाने लगता है। कहानी सुनते–सुनते उन्हें नींद आ जाती है। विदूषक प्रावारक लाने के लिए वहां से चला जाता है। इसी समय वासवदत्ता वहां आ जाती है। वह उदयन को सोया हुआ देखकर उसे पद्मावती समझती है तथा पार्श्व में लेट जाती है। उदयन स्वप्न में वासवदत्ता का नाम लेकर बोलने लगता है। वासवदत्ता को पता लगता है कि यह पद्मावती नहीं अपितु उदयन है। वह पलंग से उठ जाती है तथा अपने प्रियतम का मुंह निहारते हुए उसकी नीचे लटकती हुयी भुजा को धीरे से शय्या पर रखकर बाहर चली जाती है।

प्रियतमा के हाथ का स्पर्श पाकर राजा उठ जाता है तथा उसे पकड़ने के लिए लपकता है परन्तु दरवाजे से टक्कर खाकर गिर पड़ता है। इसी समय विदूषक वहां आ जाता है। उदयन उससे कहता

है कि उसने वासवदत्ता का दर्शन कर लिया है। पर विदूषक इसे स्वप्न अथवा माया बतलाता है। उदयन कहता है कि यदि यह स्वप्न है तो स्वप्न ही सदैव बना रहे क्योंकि जागरण से यही अधिक हितकर है। उनके बातचीत करते समय ही मगधराज का कांचुकीय वहां आता है तथा कहता है कि आपका अभात्य रूमण्वान् आरूणि नामक शत्रु पर चढ़ाई करने जा रहा है। आप शीघ्र तैयार हों। इस प्रकार संदेश पाकर राजा युद्धोचित उत्साह दिखलाते हुए लड़ाई के लिए प्रस्थान कर देता है।

षष्ठम अंक –

षष्ठम अंक में महासेन का कंचुकी रैम्य तथा वासवदत्ता की धात्री वसुन्धरा अवन्ती से उदयन से भेंट करने के लिए आती हैं। प्रतिहारा से यह भी सूचना मिलती है कि किसी व्यक्ति ने नर्मटातटीय जंगल में घोषवती नामक वीणा प्राप्त की थी जिसकी ध्वनि को सुनकर महाराज ने उसे मंगा लिया है तथा वासवदत्ता का स्मरण कर विलाप कर रहे हैं। उदयन को महासेन के यहां से कांचुकीय तथा धात्री के आने की सूचना दी जाती है। वह पद्मावती के साथ उनसे भेंट करता है। महासेन की महिषी अंगाखती का संदेश सुनाते हुए धात्री कहती है कि महारानी ने कहा है कि "तुम्हारा और वासवदत्ता का संबंध तो हम लोगों को अभीष्ट था ही, पर तुम चपलतावश शीघ्र ही भाग गये। तुम्हारे जाने पर हम लोगों ने चित्रफलक के सहारे तुम दोनों का विवाह कर दिया। अब इस चित्रफलक को लेकर धैर्य धारण करो।" उस चित्रफलक को देखकर पद्मावती कहती है कि ऐसी ही एक स्त्री मेरे पास है जिसे एक ब्राह्मण ने प्रोषितपतिका कहकर न्यास के रूप में रखा है। उसका नाम अवन्तिका है। यह सुनकर राजा उसें बुला लाने की आज्ञा देता है।

इसी बीच योगन्धरायण अपनी धरोहर वापस लेने के लिए उपस्थित हो जाता है। अवन्तिका के वेष में वासवदत्ता जब वहां लाई जाती है तो उसकी धाई वसुन्धरा उसे पहचानकर कहती है – "अरे! यह तो वासवदत्ता है।" इस पर राजा अपनी आज्ञा से उसका घूंघट हटवाता है। अवसर देखकर यौगन्धरायण भी अपना कल्पित वेश हटाकर राजा का जयघोष करता है। वासवदत्ता भी उसके स्वर में स्वर मिलाती है। यौगन्धरायण राजा के पैरों में गिर पड़ता है। पद्मावती भी अविनय के लिए वासवदत्ता से क्षमा मांगती है। वत्सराज उदयन के द्वारा इस प्रपन्च का रहस्य पूछे जाने पर यौगन्धरायण बताता है कि दैवज्ञों ने आपका पद्मावती के साथ परिणय बताया था। अतः यह परिणय तथा मगधराज के साहाय्य से वत्सभूमि की प्राप्ति दोनों ही कार्य सिद्ध हो गये। इसके बाद महासेन को यह प्रिय संवाद सुनाने के लिए पद्मावती के साथ सभी लोग उज्जयिनी जाने के लिए प्रस्तुत होते हैं। भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

कथावस्तु समीक्षा –

भास विरचित इस प्रसिद्ध नाटक "**स्वप्नवासवदत्तम्**" की कथावस्तु लोकथाश्रित है। भास ने अपनी प्रतिभा एवं कल्पना शक्ति के आधार पर उसे विस्तार प्रदान किया है तथा छः अंकों में उसे प्रस्तुत किया है। '**नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः**' के साथ नाटक का शुभांरभ किया गया है। हम देखते हैं कि भास विरचित सभी नाटकों का प्रारंभ इसी प्रकार हुआ है। उसमें महाकवि भास ने "**मंगलादीनि मंगलमध्यानि मंगलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते**" आचार्यों की इस प्राचीन परम्परा का निर्वाह किया है। नाटककार ने '**सूचयेद्वस्तुबीजं वा मुखं पात्रमथापि वा**' नाट्यशास्त्र की इस परम्परा के अनुसार प्रथम पद्य में नाटक के चार प्रमुख पात्रों क्रमशः उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती एवं विदूषक वसन्तक के नामों को उपन्यस्त किया गया है।

शास्त्रीय विधानानुसार नान्दी के बाद आमुख या प्रस्तावना का विधान है। तद्नुकूल ही

स्वप्नवासवदत्तम् में भी नाटककार ने 'स्थापना' रखी है। यहां पर यह उल्लेखनीय है कि नाटककार भास के प्रायः सभी नाटकों में 'स्थापना' शब्द का प्रयोग किया है। भासोत्तरकालीन नाट्यकृतियों में 'प्रस्तावना' तथा 'आमुख' शब्दों के प्रयोग दिखाई देते हैं। प्रस्तावना, आमुख आदि का लक्षण लक्षण–ग्रंथों में पृथक्–पृथक् प्राप्त होता है। इनके भेद भी वहाँ प्रदर्शित किये गये हैं, जहाँ तक इस नाटक की प्रस्तावना का संबंध है, यह '**प्रयोगातिशय**' नाम प्रस्तावना है।

प्रस्तावना अथवा स्थापना का विधान नाटक में इस दृष्टि से रखा गया है कि उसके द्वारा सामाजिकों के ध्यान को अन्य दृष्टियों से हटाकर उनकी रूचि एवं ध्यान को एक ओर केवल नाटक के प्रति आकर्षित किया जाय। प्रस्तावना के द्वारा दर्शकों के नाटक के रचयिता व कृति के विषय में संक्षिप्त परिचय प्रदान कर दिया जाता है।

'स्वप्नवासवदत्तम्' की प्रस्तावना में यद्यपि लेखक का परिचय तो नहीं कराया गया है परन्तु मगधराज की कन्या पद्मावती जो कि नाटक की एक प्रमुख पात्र है उसके विषय में सूचित किया गया है।

नाट्यविधानानुसार प्रस्तावना के बाद नाटक का प्रारंभ होता है। सूत्रधार मगधराज की कन्या पद्मावती तथा उसके पीछे चलने वाले सेवकों को रंगमंच पर प्रस्तुत कर चला जाता है। इसके बाद दो सिपाही प्रवेश करते हैं तथा लोगों को हटाने का निर्देश देते हैं। इसी के साथ नाटक का शुभारंभ होता है।

एक श्रेष्ठ नाटक के लिए 6 या 7 अंक होना आवश्यक बतलाया है। उस दृष्टि से 'स्वप्नवासवदत्तम्' छः अंकों का नाटक है। नाटककार ने कथावस्तु को छः अंकों में विभाजित कर घटना संयोजन में असाधारण कुशलता प्रदर्शित की है। घटनाओं का संयोजन इस प्रकार किया गया है कि उनमें पूर्णरूप से स्वाभाविकता ज्ञात होती है। प्रत्येक घटना सार्थक है। प्रत्येक घटना सार्थक होने के कारण कथानक के विकास में पूर्ण योग देती है। सम्पूर्ण नाटक की प्रत्येक घटना बहुत विचारपूर्वक यथास्थान रखी गई है। इसके परिणामस्वरूप नाटक की गति स्वाभाविक तथा अविच्छिन्न रहती है।

जहाँ तक कथावस्तु में अर्थ, प्रकृति, अवस्थाओं एवं संधियों में विनियोग का संबंध है नाटककार भास 'स्वप्नवासवदत्तम्' में इस दृष्टि से पूर्ण सफल कहे जा सकते हैं। कथानक का प्रारंभ, उसका मध्य एवं अंत सभी आकर्षक हैं। राजा उदयन एवं वासवदत्ता के प्रणय की कथा आधिकारिक है। महाकवि भास ने दोनों के प्रेम, यौगन्धरायण व रूमण्वान् की स्वामीभक्ति, विदूषक की मैत्री, पद्मावती व वासवदत्ता की विशालहृदयता का सुंदर चित्रण किया है। नायक उदयन का कलाप्रेम यदि एक ओर सहृदय हृदय का आवर्जन करता है तो दूसरी ओर नीतिज्ञ यौगन्धरायण का बुद्धिविलास मस्तिष्क को चमत्कृत कर देता है। अंत में उदयन एवं वासवदत्ता का नाटकीय ढंग से मिलन अत्यन्त सुंदर बन पड़ा है।

नाटक का नामकरण राजा के द्वारा स्वप्न में 'वासवदत्ता' के दर्शन पर आधारित है। स्वप्न वाला दृश्य संस्कृत नाट्य साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है। पंचम अंक की यह घटना बड़ी ही सरस तथा हृदयावर्जक है। भास की कल्पना ने पद्मावती की शीर्षवेदना के व्याज से उदयन तथा वासवदत्ता को एकत्र संघटित कर दिया है। कुछ लोग इस नाटक के नामकरण के विषय में कहते हैं कि इसका नाम 'पद्मावती परिणय' या 'उदयनोदय' होना चाहिए। परन्तु, जो सरसता और कल्पना का प्रसाद स्वप्न दृश्य में है वह इस नाटक की आत्मा है तथा उस आधार पर यह नामकरण सर्वथा यथार्थ एवं समुचित है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि 'स्वप्नवासवदत्तम्' का संविधानक सुलझा हुआ, रूचिकर एवं अन्तःसूत्र से अनुस्यूत है। प्रारंभ से अन्त तक पाठक व दर्शक को बांधे रखता है उनका औत्सुक्य उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहता है।

नेता (पात्र) –

वस्तु के पश्चात् 'नेता' नाटक का द्वितीय महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। 'नेता' से तात्पर्य चरित्र–चित्रण से है। इस दृष्टि से भी स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक श्रेष्ठ कहा जायेगा। भास ने अपने इस नाटक में प्रायः सभी पात्रों के साथ समान वर्ताव किया है। इसमें उदयन, विदूषक वसन्तक, यौगन्धरायण एवं रूमण्वान् ये प्रमुख पुरूष पात्र तथा वासवदत्ता, पद्मावती, वृद्धा तापसी एवं धात्री ये स्त्री पात्र महत्त्वपूर्ण हैं।

कालिदास के समान ही भास का चरित्र–चित्रण यद्यपि आदर्शोन्मुख है तथापि वह सर्वथा स्वाभाविक एवं सजीव है। नाटक के सभी पात्र इस लोक के ही पात्र हैं और उनका स्वाभाविक एवं यथार्थ चित्रण किया गया है।

नोट :– प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण इकाई उपभाग 3.4 के अन्तर्गत किया गया है।

(स) रस–योजना –

भारतीय नाट्य–समीक्षा के अनुसर 'रस' रूपक का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। दृश्य काव्य के तीन भेदक तत्त्वों में एक 'रस' भी है। वैसे तो कथा, आख्यायिका व महाकाव्य आदि सभी में रसास्वाद होता है परन्तु इसकी व्यंजना करना सामाजिकों के हृदय में रसोद्रेक उत्पन्न करना दृश्य काव्य का प्रमुख लक्ष्य है।

रस क्या है? इस विषय में यहां हम इतना ही कहना चाहेंगे कि विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से सहृदयों को जो एक अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है, वही रस है तथा इस रस की प्रतीति करना या कराना रूपकों का मुख्य प्रयोजन है। क्योंकि रस भेदक तत्व है, अतः विविध रूपकों में भिन्न–भिन्न प्रकार के रसों की प्रधानता और गौणता होती है। जहां तक प्रस्तुत रूपक का संबंध है यह 'नाटक' कोटि का है। अतः इसमें नाट्यशास्त्र के नियमानुसार श्रृंगार अथवा वीर रस प्रधान होता है तथा अन्य रस उसके अंग के रूप में विद्यमान रहते हैं।

इस नाटक का प्रधान रस श्रृंगार है। वासवदत्ता एवं उदयन की दृष्टि से विप्रलंभ श्रृंगार का ही प्राधान्य है, इसमें श्रृंगार की अनेकानेक परिस्थितियां मर्मस्पर्शी बनकर आती हैं, क्या संचारी भाव, क्या विभाव, क्या अनुभाव सभी बिना प्रयत्न के पात्रों की नाट्यकला में अवतरित हुए हैं। भास की रसाभिव्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शब्दावली स्वाभाविक और सरल है, उसमें आडम्बर और कृत्रिमता नहीं है।

श्रृंगार के अलावा हास्य रस का भी इसमें वर्णन प्राप्त होता है। पद्मावती तथा वासवदत्ता के विनोद में शिष्ट हास्य दृष्टिगत होता है। विदूषक के वचनों से भी हास्य की उद्भावना होती है। नाटक के चतुर्थ अंक के प्रारंभ में विदूषक के कथन से हास्य रस की सुंदर उद्भावना होती है। इसी प्रकार पंचम अंक में भी राजा एवं विदूषक के वार्तालाप में सुमधुर हास्य रस की सृष्टि कवि द्वारा की गई है।

(घ) भाषा – शैली –

किसी भी कवि या नाटककार का मूल्यांकन करने की महत्वपूर्ण कसौटी यदि कोई है तो वह उसके द्वारा प्रयुक्त भाषा व शैली है जिसका कि उसने अपनी कृति में प्रयोग किया है। दृष्य या श्रव्य काव्य की कथावस्तु की सामग्री से हम उसके रचयिता का मूल्यांकन उतना नही कर सकते हैं जितना की भाषा शैली से। भाष व शैली ही उसकी स्वयं की होती है जिसके माध्यम

से वह अपने स्वयं व अन्य स्थानों तथा विभिन्न स्त्रोतों से ग्रहण किये गये भावों व विचारों को अपनी कृति में प्रकट करता है। कथानक कभी भी पूर्णरूप से आविष्कृत नहीं हो सकता। एक ही कथानक को अनेक रूपों में भाषा व शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार एक काव्य में भाषा व शैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काव्यों में भी मूलतः दृश्य काव्य में भाषा व शैली महत्त्वपूर्ण तत्व है, क्योंकि नाटक अथवा एकांकी प्रत्यक्ष दर्शन का साहित्य है, अतः उसकी भाषा व शैली सरल तथा सुबोध होनी चाहिए।

वही नाटक दर्शकों को प्रभावित व आह्लादित कर सकता है जिसकी भाषा सहज बोधगम्य हो। सहज बोधगम्य होने के साथ–साथ भाषा का पात्रानुकूल होना भी आवश्यक है। एक बच्चा न तो प्रौढ भाषा बोले और न एक अशिक्षित साहित्यिक भाषा अथवा विदेशी भाषा। भाषा का महत्त्व इस दृष्टि से भी है कि भाषा के माध्यम से पात्रों का चरित्र–चित्रण होता है, क्योंकि बोलचाल से ही किसी का व्यक्तित्व आंका जा सकता है। अतः भाषा ऐसी होनी चाहिए जोकि प्रथम सहज बोधगम्य हो अर्थात् प्रसाद गुण से युक्त हो, द्वितीय पात्रानुकूल व परिस्थितियों के अनुकूल हो। अधिक आलंकारिक चमत्कारयुक्त भाषा में लिखित नाटक कभी भी दर्शकों को प्रभावित नहीं कर सकता।

भाषा व शैली की कसौटी पर भास विरचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक एक खरा व अनुपम नाटक है। इसकी भाषा अत्यन्त सरल एवं प्रसादगुण युक्त है। भाषा में स्वाभाविक प्रवाह है, जैसे वास्तविक जीवन में बोली जा रही है। कवि ने समास प्रधान भाषा का अधिक प्रयोग नहीं किया है। इस नाटक में भास की भाषा शैली पात्रों के भावों और विचारों के अनुकूल है। सूक्तिपूर्ण वाक्यों के प्रयोग से भाषा–शैली को सशक्त बनाया है। शास्त्रीय दृष्टि से इनकी शैली में माधुर्य, ओज और प्रसाद इस तीनों गुणों का समावेश पाया जाता है। इनकी शैली के संदर्भ में श्री रामजी मिश्र का निम्न कथन उल्लेखनीय है –

"शैली की सारी विशेषताओं से विशिष्ट भास कवि की अभिव्यंजना बड़ी ही प्रभावोत्पादक है। प्रसाद और ओज के साथ–साथ माधुर्य की संयोजना सहृदयों को मुगध कर देती है। पूरे के पूरे नाटक पर जाइए – कहीं भी दूरारूढ़ कल्पना, समास बहुलता का प्रवाह में अवरोध नहीं मिलेगा। इसे कुछ विद्वानों ने रामायण का प्रभाव माना है। इनकी शैली अंलकारों पर नहीं भावनाओं के निखार पर गर्व करती है, जिससे कृत्रिमता की जगह स्वाभाविकता आ गई है। सरलता से समझ में आने वाले उन अलंकारों का प्रयोग भास ने किया है जिनसे वस्तु–चित्र और भी स्पष्ट हो गये हैं। भाषा–शैली में जैसी सफलता इन्हें मिली इनके पूर्ववर्ती किसी भी कवि को नहीं मिली।"

भास के इस नाटक में एक विचित्र अनूठापन है। लघुविस्तारी वाक्यों में जितना सरल पद न्यास प्रभावित करता है उतने ही भाव भी रसाप्लावित करते हैं। मानव हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावदशाओं का चित्रण इस नाटक में सर्वत्र देखा जा सकता है।

भास की भाषा–शैली को संक्षेप में निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर प्रस्तुत किया जा सकता है –

1. सरल व सरस भाषा
2. प्रभावपूर्ण भाषा
3. अद्भुत वाक्य संघटना

4. पात्रानुकूल भाषा
5. व्यंजकता एवं प्रभावोत्पादकता का समन्वय
6. वाग्विस्तार का परिहार
7. प्रसाद, ओज एवं माधुर्य का अद्भुत समन्वय
8. सशक्त शैली का प्रयोग
9. नाटक व काव्यत्व का संतुलन

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि भास सरल पद्धति के जनक हैं। इनके नाटक सामान्य संस्कृत ज्ञाताओं के लिए भी सहज सुबोध हैं।

(ड.) देशकाल एवं वातावरण –

देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से भी 'स्वप्नवासवदत्तम्' एक सफल नाटक है। कथानक के अनुसार तपोवन का सुन्दर वातावरण, संध्याकालीन शोभा का सजीव वर्णन, वासवदत्ता के वियोग में विरह पीड़ित उदयन की दशा का सजीव चित्रण, वासवदत्ता की मनोदशा का चित्रण, प्रकृति का सजीव वर्णन सभी बहुत सुन्दर हैं।

(च) अभिनेयता –

नाटक का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व अभिनेयता है क्योंकि नाटक दृश्य काव्य है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक इस कसौटी पर भी पूर्ण खरा उतरता है। देश एवं विदेश में यह नाटक अनेक बार रंगमंच पर प्रस्तुत किया जा चुका है। इसका कारण यह है कि इसमें न तो कहीं वर्णन की अधिकता है और न कहीं कथावस्तु का ही अनावश्यक विस्तार है। यह नाटकीय दृष्टि से चुस्त, व्यवस्थित एवं सुसंगठित है। पात्रों के संवाद भी विस्तृत नहीं हैं। प्रत्येक पात्र अपना मन्तव्य थोड़े शब्दों में व्यक्त करना ही पसन्द करता है। इन संक्षिप्त एवं सारगर्भित कथनों में वे ऐसी सूक्तियों का भी प्रयोग कर डालते हैं जो आज तक अमर हैं। सच बात तो यह है कि महाकवि भास संवाद तत्व के विशेष मर्मज्ञ हैं। उनमें यत्र तत्र शिष्ट हास्य एवं व्यंग्य का भी पुट मिलता है जिससे दर्शकों का मन कभी ऊबने नहीं पाता।

(छ) उद्देश्य –

किसी भी कृति का निर्माण सोद्देश्य किया जाता है क्योंकि निष्प्रयोजन तो मन्दबृद्धि भी किसी काम में प्रवृत्त नहीं होता है। भास द्वारा 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की रचना भी उद्देश्यपूर्वक की गई है। उस उद्देश्य में नाटककार को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। राजा उदयन अपनी पत्नी वासवदत्ता के लावण्य में इतना खो गया था कि राज्य तक की भी उसे परवाह नहीं रही। मंत्री यौगन्धरायण की योजना द्वारा राजा को अपने कर्त्तव्य की ओर उन्मुक्त करना नाटककार का उद्देश्य था जिसमें वह पूर्ण सफल रहा है। साथ ही तत्कालीन संस्कृति का यथार्थ चित्रण करना भी भास का उद्देश्य था। उसमें भी उसे सफलता प्राप्त हुई है। संक्षेप में भारतीय जीवन दर्शन, प्रेम की उदात्त भावनाओं का चित्रण, त्याग एवं तपोवन का चित्रण इस नाटक का उद्देश्य है।

उपसंहार –

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि समीक्षा के मानदण्डों की कसौटी पर यह नाटक पूर्णरूपेण खरा उतरता है न केवल भास की, अपितु समूचे संस्कृत नाट्य साहित्य की यह अमूल्य कृति है।

3.4 प्रमुख पात्रों का चरित्र–निर्माण

(1) **राजा उदयन** – महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक उदयन है। वह वत्सदेश का राजा है। नाटककार ने जिस रूप में उदयन का प्रस्तुतीकरण इस नाटक में किया है, उससे उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं व्यक्त हुई हैं –

(क) **धीरललित नायक** – नाट्यशास्त्रीय ग्रंथों में जो नायक के भेद प्रस्तुत किये गये हैं, उस वर्गीकरण के अन्तर्गत उदयन धीरललित नायक की श्रेणी में आता है। दशरूपक के रचयिता आचार्य धनन्जय के अनुसार धीरललित नायक **''निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।''** अर्थात् धीरललित नायक प्रकृति से निश्चिन्त, कला प्रेमी व मृदु स्वभाव का होता है। ये सभी गुण उदयन में विद्यमान हैं। निश्चिन्त तो वह इतना है कि सम्पूर्ण राज्यभार पूर्णतः मंत्रियों पर छोड़ देता है। कलापरायणता के विषय में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। उसकी वीणावादन की प्रसिद्धि सर्वत्र फैल चुकी है। वह प्रकृति से इतना मृदु है कि कहीं भी क्रोध की मुद्रा में दिखाई नहीं देते।

(ख) **रूपवान** – राजा उदयन अत्यन्त रूपवान है। उसके रूप की प्रशंसा सभी समानरूपेण करते हैं। द्वितीय अंक में वासवदत्ता उसे दर्शनीय कहती है तो तृतीय अंक में चेटी उसे शरचापहीन कामदेव कहती है। उसके सौन्दर्य के कारण उज्जयिनी के सभी लोग आकर्षित है।

(ग) **विविधगुण सम्पन्न** – उदयन विविध गुणों से युक्त है। वह रूपवान होने के साथ–साथ समुद्र के समान गंभीर एवं धीर प्रकृति का है। वह सुशीलता की प्रतिमूर्ति है। उसका हृदय अत्यन्त कोमल तथा दृढ़ निश्चयी है। वह मृगया प्रेमी है। वह दाक्षिण्य गुण से युक्त है। इसी दाक्षिण्य गुण के कारण अपने वासवदत्ता के प्रति प्रेम को वह पद्मावती के सामने प्रकट नहीं होने देता।

(घ) **आदर्श पत्नीव्रत** – उदयन का पत्नीव्रत उल्लेखनीय है। उसका अपनी पत्नी के प्रति प्रेम बड़ा ही अचल एवं निष्कपट है। जब उसकी प्रियतमा वासवदत्ता के अग्नि में जल जाने का प्रवाद प्रसारित हो जाता है तथा यह समाचार जब उदयन तक पहुँचता है तो वह इतना व्यथित एवं उन्मत्त हो जाता है कि स्वयं को भी उसी अग्नि में भस्मसात् कर देना चाहता है। मन्त्रियों द्वारा रोके जाने पर वह वासवदत्ता के आभूषणों को छाती से लगा कर मूर्च्छित हो जाता है। उसके इस अनन्य प्रेम का वर्णन करते हुये ब्रह्मचारी को भी कहना पड़ता है–

''नैवेदानीं तादृशाश्चक्रवाका नैवाप्यन्ये स्त्रीविशेषैर्वियुक्ता।''

पद्मावती से विवाहोपरान्त भी वासवदत्ता को नहीं भूलते हैं, उसकी स्मृति उसे सदैव बनी रहती है। विदूषक जब उससे दोनों के विषय में पूछता है तब वह स्पष्टतया कहता है –

'पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः
वासवदत्ताबद्धं न तु तावन्मे मनो हरति।।

जब पदमावती के बीमार होने का समाचार उसे मिलता है तो वह तुरन्त समुद्रग्रह में पहॅुचता है। जब स्वप्नावस्था में वासवदत्ता के स्पर्श–सुख की अनुभूति होती है तो वह रोमांचित हो जाता है तथा उसके पीछे दौड़ता हुआ दरवाजे से टकरा जाता है। वह उसके जीवित होने की बात विदूषक को कहता है। विदूषक इसे स्वप्न में देखना बतलाता है। तब उदयन कहता है 'यदि यह स्वप्न था तो मेरा न जागना ही अच्छा था, और यदि यह मतिभ्रम है तो मेरा (यह मतिभ्रम) चिरकाल तक बना रहे –

''यदि तावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्।
अथायं विभ्रमो वा स्यात् विभ्रमो ह्यस्तुमेचिरम्।।

इसका मतलब यह नहीं कि वह पद्मावती से कम प्रेम करता है। पद्मावती के प्रति भी उसका प्रगाढ़ प्रेम है। वह उसके सिर के दर्द की बात सुनकर व्याकुल हो जाता है तथा मन में अनेक प्रकार की आशंकायें करते हुये कहता है –

'रूपश्रियां समुदितां गुणतश्च युक्तां
लब्ध्वाप्रियां यम तु मन्द इवाद्य शोकः।
पूर्वाभिघातसरुजोऽप्यनुभूतदुःखः
पद्मावतीमपि तथैव समर्थयामि।।

इस प्रकार एक आदर्श प्रति के रूप में उसका चरित्र नाटक में उभरकर सामने आया है।

(5) **वीर एवं व्यवहार कुशल** – यद्यपि वह धीर ललित नायक है तथापि उसमें शौर्य का अभाव नहीं है। पञ्चम अंक के अन्त में जब उसे सूचना मिलती है कि रूमण्वान् ने आरूणि पर आक्रमण कर दिया है तब वह वीरोचित शब्दों में कहता है–

''उपेत्य नागेन्द्र तुरंगतीर्णं तमारूणिं दारूणकर्मदक्षम्
विकीर्ण बाणोग्रतरंग ड्गे महार्णवाभे युधि नाशयामि।।

उक्त वाक्य एक वीर एवं साहसी व्यक्ति ही बोल सकता है भीरू अथवा विलासी नहीं।

उदयन की पराक्रमता एवं उत्साह सम्पन्नता का उल्लेख कंचुकी भी करता है–

''कातराः येऽप्याशक्ता वा नोत्साहस्तेषुजायते।
प्रायेण हि नरेन्द्र श्रीः सोत्साहैरवे भुज्यते।।''

उदयन व्यवहार कुशल एवं गुरूजनों के प्रति आदर सत्कार की भावना रखने वाला है। जब महासेन तथा अंगारखती के यहॉ से आया ब्राह्मण तथा धात्री सन्देश सुनाती है, तो 'क्या आज्ञा है' यह कहकर आसन से उठा जाता है। जो व्यक्ति किसी के आदेश को सुनने के लिए आसन से उठ जाता है, वह गुरुजनों के प्रत्यक्ष में उपस्थित होने पर कितना आदर सत्कार करेगा – यह सहज अनुमेय है।

अवन्तिका को लौटाने के समय साक्षियों की नियुक्ति करना उसके व्यावहारिक ज्ञान को व्यक्त करती है। इसी प्रकार वासवदत्ता के पिता महासेन जी को वह अपने पिता तुल्य ही मानता है तथा अपने ऊपर उनकी महान् कृपा का उल्लेख करता है, जो बडों के प्रति उनके सम्मान भाव को प्रकट करता है –

'अहमवजितः पूर्वं तावत् सुतैः सह लालितो
दृढमपह्वता कन्या भूयो मया न च रक्षिता।
निधनमपि च श्रुत्वा तस्यास्तथैव मयि स्वता
ननु यदुचितान् वत्सान् प्राप्तुं न्पोऽत्र हि कारणम्।।

(च) **विलासप्रिय** – राजा उदयन वीर, कला प्रेमी, व्यवहार कुशल है तथापि मनुष्य होने के नाते कुछ कमजोरियॉ उसके चरित्र में हैं। यथा – वह इतना अधिक विलासी एवं कामुक प्रवृत्ति का है कि वासवदत्ता के सौन्दर्य पर आसक्त होकर राज्य तक को खो बैठता है।

(छ) **विवेक की कमी** – इसके अलावा उसमें कुछ विवेक की भी कमी है। यही कारण है कि अन्तिम अंक में यौगन्धरायण के विरोध करने पर भी वह वासवदत्ता को भीतर आने के लिए कहता है, यद्यपि उसे उसका पूर्ण परिचय नहीं प्राप्त हो सका है। यह उसके सद्यः पूर्व के वक्तव्य

''परस्परगता लोके दृश्यतो तुल्यरुपता।'' से मेल नहीं खाता। यवनिका प्रक्षेप के बाद ही उसे वस्तुस्थिति का ठीक ज्ञान होता है।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि उदयन का चरित्र एक नायक के रूप में चित्रित करने में भास को पूर्ण सकलता प्राप्त हुई है।

2. **वासवदत्ता** – महाकवि भास विरचित तेरह नाटकों में 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक सर्वश्रेष्ठ है। इसकी दो नायिका हैं – वासवदत्ता एवं पद्मावती। रुपयौवन शालिनी अवन्तिदेश की राजकुमारी वासवदत्ता नाटक की प्रधान स्वीया नायिका है। उसमें राजमहिषी के अनुरूप बुद्धिमत्ता एवं संवेदनशीलता है। उसके चरित्र की निम्न लिखित विशेषतायें नाटक मं अभिव्यक्त हुई हैं –

(क) **स्वाभिमानिनी महिला** – वासवदत्ता स्वाभिमान की भावना से ओतप्रोत है। नाटक के प्रारम्भ में अवधीरणा की बात सुनकर वह कांप उठती है। संन्यास वेशधारी यौगन्धरायण के साथ प्रविष्ट होती हुई वह दो कर्मचारियों द्वारा ''उत्सरत, उत्सरत आर्याः।'' का जब आदेश सुनती है उस समय वह अपने को हटाये जाने की आशंका से स्वाभिमान को ठेस लगती देखकर तुरन्त प्रतिक्रिया स्वरूप यौगन्धरायण से प्रश्न कर बैठती है – ''अहमपि नामोत्सारयितव्या भवामि?'' वह इस उत्सारणा जन्य अपमान को इतनी संवेदनशीलता के साथ अनुभव करती है कि हठात् उसके मुख से निकल जाता है – 'आर्य! तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति यथायं परिभवः।'

(ख) **पति–परायणा** – वासवदत्ता पतिपरायणा एवं निःस्वार्थ पत्नी है जो अपने पति के लिए सर्वस्व समर्पण करने के लिए तत्पर रहती है। वह मन्त्री यौगन्धरायण की योजना बिना किसी तर्क – वितर्क के स्वीकार कर लेती है। योजना की सफलीभूत अवधिपर्यन्त उसे अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं परन्तु उसमें भी वह अनुपम आनन्द का ही अनुभव करती है क्योंकि उसमें उसके पति का हित सन्निहित है। उसके लिए पति का सुख ही सब कुछ है। पति के हित के लिए राजकुमारी व पटरानी होते हुए भी वह एक दासी के रूप में पद्मावती के पास रहती है। एकान्त में अपने पति को पाकर व उनके स्पर्श से भी अपनी भावनाओं को रोककर केवल पति के हित के लिए दूर हट जाती है। ऐसा त्याग सामान्यतः अन्य स्त्रियों में देखने को नहीं मिलता। यही कारण है कि राजा उसे जन्म – जन्मान्तरों तक नहीं भूलने की बात कहता है :–

''महासेवस्य दुहिता शिष्या देवी च मे प्रिया
कथं सा नु मया शक्या स्मर्तुं देहान्तरेष्वपि।। 6।।

वासवदत्ता उदयन के प्रति प्रारम्भ से ही पूर्णतः आसक्त थी। इस बात का उल्लेख स्वयं उदयन ने पञ्चम अंक में किया है। उदयन जब वासवदत्ता को वीणा बजाने सम्बन्धी शिक्षा प्रदान करते थे, उस समय वह उदयन के मनोहर मुख को एकटक देखने लगती थी। उस समय वह उदयन के प्रति प्रेम–भावना में इतनी तल्लीन हो जाती थी कि उसको यह भी पता नहीं रहता था कि। कब और कैसे उसकी अंगुली से वीणा बजाने का छल्ला गिर पड़ा। उदयन द्वारा ध्यान दिलाये जाने पर भी वह अपनी सूनी अंगुली को ही शून्य आकाश में चलाती रहती थी, मानो वह छल्ला पहने हुये वीणा – बजा रही है। यह आसक्ति की पराकाष्ठा है।

(ग) **गुण ग्रहिणी** – वासवदत्ता गुण ग्राहिणी है। पद्मावती के रुप की प्रशंसा वह खुले मुंह से करती है – 'अभिजनानुरूपं खल्वस्यरूपम्।'

(घ) **नारी सुलभ ईर्ष्या** – वासवदत्ता गुण ग्रहिणी व विवेकशीला है। परन्तु एक नारी है अतः नारी सुलभ ईर्ष्या भाव उसमें भी विद्यमान है। अदृष्ट के परिहास से नाटक में वह अपनी भावी सयली

पद्मावती के संरक्षण में न्यास के रूप में रख दी गई है। यद्यपि प्रकृति से उदार है परन्तु उसके अन्तस् में छिपे नारी सुलभ ईर्ष्या के भाव कभी–कभी उसे कोसने से लगते हैं। वह यह सोचकर कि उसका पति अब दूसरी स्त्री का पति हो गया है। 'आर्यपुत्रोऽपि परकीयः संवृत्तः' अत्यन्त व्यथित होती है। वह पद्मावती की वैवाहिक माला में 'सपलीमर्दन' नामक जड़ी नहीं गूंथती। उसका पति दूसरी स्त्री से विवाह विधि सम्पन्न करे – उसे वह देखने में असमर्थ है। अतः पद्मावती के विवाह – संस्कार के समय अपने को प्रमदवन के कुञ्ज में छिपा लेती है। इतने पर भी वह प्रतिक्षण जागरूक रहती है कि कहीं यौगन्धरायण की योजना निष्फल न हो जाये।

(च) **कोमल हृदया** – यद्यपि नारी होने के कारण ईर्ष्या भाव से वह युक्त है परन्तु फिर भी हृदय से अत्यन्त कोमल है। वह पद्मावती के प्रति सदैव स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है। जब उसे पद्मावती के अस्वस्थ होने का समाचार मालूम होता है तो वह तुरन्त समुद्रगृहक में पहुॅचती है। यह समाचार सुनकर उसे बड़ा कष्ट होता है क्योंकि उसका पति जो कि उसके वियोग के कारण शोकातुर है, अपने इस एक मात्र मनोविनोद के साधन के अभाव में अधिक दुःखी होगा।

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते हैं कि वासवदत्ता विधाता की एक सुन्दर सृष्टि है। नारी सुलभ समस्त गुणा दोषों में से युक्त होते हुए भी एक आदर्श नारी है। नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से वह 'धीरा' वर्ग की नायिका है।

3. **पद्मावती** – पद्मावती 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की दूसरी स्वीया नायिका है। नाटक में सर्व प्रथम उसका परिचय कन्या के रूप में होता है। वह मगध नरेश दर्शक की भगिनी तथा मगध के पूर्व राजा अजातशत्रु की पुत्री है। नाटक में उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषतायें उभरकर सामने आई हैं –

(i) **धर्मप्रिया एवं दानशील** – नाटक में प्रथम अंक में जिस रूप में उसका परिचय हमें मिलता है, तदनुसार वह उदारहृदया, धर्मप्रिया एवं दानशील है। जब वह तपोवन में अपनी माता के दर्शनार्थ आती है तो उसके आगे चलने वाले अंगरक्षक मार्ग में आने वाले लोगों एवं तपस्वियों को हटाते हैं। यह देखकर पद्मावती उन्हें पीडित न करने का आदेश देती है। कञ्चुकी इसी समय पद्मावती एवं उसके कुल की धर्मप्रियता के विषय में उद्घोषणा करता है –

''धर्मप्रिया नृपसुता न हि धर्मपीडा–
मिच्छेत् तपस्विषु कुलव्रतमेतदस्याः।।1/6।।

इसी सन्दर्भ में पद्मावती की दानशीलता का भी सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है। वह कञ्चुकी द्वारा तपोवन में दान देने की घोषणा करवाती है –

''कस्यार्थ : कलशेन को मृगयते वासो यथानिश्चितम्
दीक्षां पारितवान् किमिच्छति पुर्नेदयं गुरोर्यद्भवेत्।
आत्मानुग्रहमिच्छतीह नृपजा धर्माभिरामप्रिया
यद्यस्यास्ति समीप्सितं वदतु तत् कस्याद्य किं दीयताम्।।

पद्मावती की उत्कृष्ट इच्छा है कि तपस्वी जन निःशंक होकर अपनी आवश्यकताओं को उनके सामने प्रस्तुत करें। वे इच्छानुसार वस्तुएँ मांगे तथा प्राप्त करें।

यह भावना पद्मावती की धर्मप्रियता, दानशीलता एवं उदारता को व्यक्त करती है।

(ii) **अत्यन्त रूपवती** – पद्मावती अत्यन्त रूपवती है। उसके रूप की प्रशंसा स्वयं वासवदत्ता प्रथम अंक में करती है। चतुर्थ एवं पञ्चम अंक में स्वयं राजा उदयन भी उसके रूप की प्रशंसा करता

है। चतुर्थ अंक में वह अपने मित्र विदूषक से इस प्रकार कहता है –

''पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रुपशीलमाधुर्यैः।।

पञ्चम अंक में जब उसके अस्वस्थ होने का समाचार सुनता है तो अत्यन्त दुःखी होता हुआ कहता हैः–

''रूपश्रियां समुदितां गुणतश्च युक्तां''

दोनों स्थलों पर हम उसके द्वारा पद्मावती के सौन्दर्य की बात सुनते हैं।

विदूषक के शब्दों में वह सद्गुणों की आकर है।'' वह तरूणी, दर्शनीया, अकोपना, अनहंकारा, मधुरवाक् एवं सदाक्षिण्या है।

(iii) **पतिपरायणा** – वासवदत्ता के समान पद्मावती भी अपने पति के प्रति समर्पिता है। अपने पति के लिए उसके ह्रदय में अपार एवं शाश्वत प्रेम है। वह अपने पति में किसी प्रकार का दोष देखना अथवा सुनना नहीं चाहती है। वह स्वयं कष्ट उठाकर भी अपने पति को सदैव सुखी देखने का प्रयास करती रहती है। चेटी जब एक बार उदयन को पद्मावती की अपेक्षा वासवदत्ता पर अधिक प्रेम प्रकट करने के कारण 'अदाक्षिण्य' कह देती है तो तत्काल चेटी को रोकते हुए कहती है – **'हला! मा मैवम्। सदाक्षिण्य एवार्य पुत्रः य इदानीमप्यार्याया वासवदत्तायाः गुणान् स्मरति।''**

(iv) **उदारमना** – पद्मावती उदारमना एवं विशाल हृदया है। तपोवन में वह जिस किसी को उसका अभीष्ट पूरा करने की उद्घोषणा करती है। वासवदत्ता को न्यास के रूप में रखकर वह उसके प्रति जैसा व्यवहार करती है उससे उसकी उदारता स्पष्टतया अभिव्यक्त होती है। विवाहोपरान्त अपनी सौत वासवदत्ता के प्रति अपने पति उदयन का प्रेम देखकर वह अन्य स्त्रियों की तरह न तो दुःखी होती है और न ईर्ष्या करती है। प्रत्युत सम्मान का भाव रखते हुए जब भी उसका नाम लेती है तो उसके नाम से पहले ''आर्या'' शब्द का प्रयोग अवश्य करती है। एक सौत के प्रति इस प्रकार का व्यवहार उसके हृदय की उदारता एवं महानता का द्योतक है।

(अ) **पूज्य एवं अग्रजों के प्रति सम्मान** – पद्मावती अपने से उम्र में बडों तथा पूज्य जनों के प्रति आदर भाव रखती है। वह सदैव पूज्य व्यक्तियों का सम्मान करती है। तपोवन में वह तपस्वियों का सम्मान करते हुये उन्हें स्वेच्छापूर्वक घूमने एवं जो वस्तु उन्हें चाहिए उसे ग्रहण करने का निर्देश कञ्चुकी के माध्यम से प्रदान करती है। यौगन्धरायण के साथ भी वह अत्यन्त सम्मानपूर्वक वार्तालाप करती है। विवाहोपरान्त वासवदत्ता के माता–पिता का अपने माता–पिता के तुल्य ही सम्मान करती है। चित्रफलक में अवन्तिका के समान वासवदत्ता का रूप देखकर वह वासवदत्ता के जीवित होने के विचार से गद्गद् हो जाती है। इसके बाद वासवदत्ता के प्रकट होने पर वह किसी प्रकार का ईर्ष्या भाव व्यक्त नहीं करती अपितु एक सहज स्नेह का परिचय देते हुये उसके पैरों पर गिरकर क्षमा याचना करते हुये कहती है– **''आर्ये! सखीजन समुदाचारेणातिक्रान्तः समुदाचारः। तच्छीर्षेण प्रसादयामि।''**

संक्षेप में, पद्मावती का चरित्र एक आदर्श चरित्र है। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में हम उसका मूल्यांकन करें तो नारी जगत् में ऐसा चरित्र मिलना अति दुर्लभ हैं।

4. **यौगन्धरायण** – यह वत्सराज उदयन का मन्त्री एवं राजनीति में चाणक्य के समान अत्यन्त दूरदर्शी व कुशल है। नाटक में यद्यपि उससे साक्षात्कार प्रथम एवं षष्ठ अंक में होता है तथापि वह नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र है। नाटक का सम्पूर्ण घटनाचक्र उसी के बुद्धिकौशल से चल रहा है। नाटक में

उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषतायें अभिव्यक्त हुई हैं –

1. **स्वामिभक्त** – स्वामिभक्ति उसके चरित्र की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है। वह स्वाभिभक्ति की भावना से परिपूर्ण है। अपने स्वामी तथा राज्य हित के लिये वह सर्वस्व त्याग सकता है। नाटक में अपने स्वामी उदयन के हित सम्पादन हेतु उसने प्रारम्भ से लेकर अन्त तक अनेक प्रकार की आपत्तियों का सामना किया है। अपने स्वामी को संकट से निकालने के लिये उसने अनेक योजनायें बनाई। उसकी स्वामिभक्ति पर उदयन की पटरानी वासवदत्ता को भी पूरा विश्वास था। इसीलिये उसने अपने पति की उन्नति के लिये उस पर पूर्ण विश्वास करते हुये उसकी योजना को सफल बनाने में पूरा सहयोग प्रदान किया। जब उसे अवन्तिका के वेश में यौगन्धरायण पद्मावती के पास न्यास के रूप में सौंपता है तब वह कहती है – **''इह मां निक्षेप्तु काम आर्य यौगन्धरायणः। भवतु अविचार्य कार्य न करिष्यति।''**

वासवदत्ता की प्राप्ति, उदयन की महासेन की कैद से मुक्ति, प्रद्योत की सेना को पराजित करना, पद्मावती के साथ उदयन का विवाह तथा खोये हुऐ राज्य की पुनः प्राप्ति आदि सम्पूर्ण कार्यों में यौगन्धरायण की ही बुद्धि व पराक्रम सफलता के कारण थे। इस बात को स्वयं राजा उदयन ने भी अनुभव किया। उसने नाटक के अन्तिम अंक में उसकी योग्यता के अनुरूप ही उसकी प्रशंसा की –

''मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च मन्त्रितैः।
भवद्यन्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धताः।।''

2. **गुणी एवं गुण ग्राहक** – यौगन्धरायण स्वयं गुणी है तथा दूसरे के गुणों का ग्राहक भी है। उसमें दूसरे के गुणों को पहचानने की अद्भुत क्षमता है। रूमण्वान् द्वारा किये गये परिश्रम को सुनकर वह उसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करता है :–

''अहो महद्भारमुद्वहति रूमण्वान्। कुतः –
''सविश्रमो ह्यदयं भारः प्रसक्तस्य तु श्रमः।
तस्मिन् सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः।।

3. **निरभिमानी** – बुद्धिकौशल, गुणग्राहकता एवं स्वामिभक्ति से ओतप्रोत होने पर भी उसमें लेशमात्र भी अभिमान की भावना नहीं है। कहीं पर भी हमें उसकी गर्वोक्ति सुनाई नहीं देती। वह कहता है – **''स्वामिभाग्यानुगन्तारो वयम्।''** नाटक के अन्तिम अंक में जब उदयन को खोयी हुई वत्सभूमि तथा वासदवदत्ता की पुनः प्राप्ति हो जाती है, उस समय यौगन्धरायण उसके पैरों पर गिर पडता है। यह स्वामिभक्ति की पराकाष्ठा हैं। उस समय वह कहता है कि यह सम्पूर्ण प्रपञ्च उसने इसलिए रचा जिससे कि राज्य विस्तार हो तथा पद्मावती से विवाह सम्पन्न हो। वास्तव में वह एक आदर्श मन्त्री है।

संक्षेप में वह चाणक्य का पटु शिष्य है। वह एक ब्राह्मण मन्त्री का यथार्थ प्रतिरूप, युद्धकाल का वीर सेनापति, शान्तिकाल का कुशल शासन प्रबन्धकर्ता तथा आपत्ति के समय राजा को समुचित परामर्श देने वाला दृढ़ सचिव है।

5. **विदूषक** – संस्कृत नाटकों में विदूषक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रायः इन नाटकों में वह नायक के मित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शास्त्रीय ग्रन्थों में संक्षेप में विदूषक को हास्य रस की सृष्टि करने वाले के रूप में स्वीकार किया गया है – **''हास्यकृत च विदूषकः।''**

इस नाटक का विदूषक वसन्तक है। वह उदयन का मित्र है। भास के अन्य नाटकों के विदूषकों की तुलना में वह अधिक गम्भीर है। नाटक में हमारा उसके साथ साक्षात्कार केवल दो अंकां में होता है।

इस नाटक में हम देखते हैं कि वह केवल हास्य रस की सृष्टि करने वाला अथवा भोजनभट्ट

ही नहीं हैं अपितु वह सदैव अपने मित्र राजा उदयन के साथ रहकर उसके प्रत्येक कार्य में पूर्ण सावधानी के साथ प्रहरी के तुल्य सहायता प्रदान करता है। वह राजा को अपनी सजगता के कारण विषम परिस्थितियों से बचा लेता है तथा एक अच्छे मित्र के समान उसे उचित कार्य करने का परामर्श प्रदान करता है। अनेक अवसरों पर वह अपनी चतुराई तथा प्रत्युत्पन्नमतित्व का परिचय देता है। एक उदाहरण इस सन्दर्भ में यहॉ प्रस्तुत है। राजा व विदूषक में वसन्तसेना व पद्मावती के सन्दर्भ में वार्तालाप के अन्तर्गत राजा वासवदत्ता की याद आने से रोने लगता है, उसी समय वहॉ पद्मावती का आगमन होता है। पद्मावती आंसू आने का कारण पूंछती है तब वह बडी सावधानी एवं बुद्धिमत्ता से पद्मावती को राजा की आंखों में आंसू आने का कारण बताते हये कहता है – **''भवति! वातनीतेन काशकुसुमरेणुना अक्षिनिपतितेन साश्रुपातं खलु तत्रभवतो मुखम्। तद् गृह्णातु भवतीदं मुखोदकम्''** यह सुनकर पद्मावती भी अपने मन ही मन कहती है –''अहो! चतुर व्यक्ति का सेवक भी चतुर ही होता है।''

पुनः यही विदूषक राजा को प्रणय – संकट से बचाने का कार्य करता है। वह राजा को स्मरण दिलाकर कि '' आपको मगघेश्वर के साथ स्वागत – समारोह में चलना है। शीघ्र प्रस्थान कीजिये,'' वहॉ से हटा देता है।

अन्य विदूषकों की भांति वह पेटू भी है। पेट पूजा का ध्यान उसे सदैव बना रहता है भले ही अधिक खाने से उदर पीड़ा हो। मगधराज के यहाँ अधिक खाने से वह बीमार पड़ गया था। उसका ज्ञान बहुत सीमित है। नाटक में वह अपने मित्र उदयन का मन बहलाने के लिए कहानी तो सुनाता है परन्तु उसे यह पता नहीं कि नगर का ब्रह्मदत्त नाम है या व्यक्ति का। वह राजा का अत्यधिक विश्वासपात्र है।

अन्य–पात्र – उक्त प्रमुख पात्रों के अलावा एक अन्य अमात्य रूमण्वान् ब्रह्मचारी, वृद्धा तापसी एवं कांचुकीय आदि पात्र भी इस नाटक में हैं। नाटककार ने उनकी भूमिका के अनुरूप उनका चरित्र–चित्रण किया है। रूमण्वान् नामक अमात्य यौगन्धरायण की अनुपस्थिति में अपने स्वामी उदयन की निष्ठापूर्वक देखभाल कर रहा है। ब्रह्मचारी के शब्दों में वह महाराज को प्रकृतिस्थ करने में अत्यधिक प्रयत्नशील है। वह दिन रात प्रयत्नपूर्वक महाराज उदयन की सेवाशुश्रूषा में लगा रहता है। उसकी स्थिति इस प्रकार की है कि राजा यदि प्राण त्याग दे तो उसकी मृत्यु भी तत्काल हो जाय।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि भास की नाट्यकला की सफलता में पात्रों के चरित्र – चित्रण का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। भास ने सभी प्रकार के पात्रों का चित्रण अत्यन्त कुशलता के साथ किया है।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये तथा अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

निम्न प्रश्नों के उत्तर सामने अंकित कोष्ठक में लिखिये –

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नायक नाटकीय परिभाषा में किस प्रकार का है –

(क) धीर ललित (ख) धीर प्रशान्त
(ग) धीरोदात्त (घ) धीरोद्धत ( )

2. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का प्रधान रस है –

(क) वीर (ख) श्रृंगार

(ग) हास्य (घ) अद्भुत ( )

3. नाटक के विदूषक का नाम है –

(क) मैत्रेय (ख) कामन्दक
(ग) वसन्तक (घ) माढ़व्य ( )

4. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में सम्पूर्ण घटनाओं का सूत्रधार है –

(क) यौगन्धरायण (ख) उदयन
(ग) रूमण्वान् (घ) वासवदत्ता ( )

5. **''तत्र खल्वतिदारुणं व्यसनं संवृत्तम्''** नाटक में यह कथन किसका है –

(क) उदयन का (ख) ब्रह्मचारी का
(ग) यौगन्धरायण का (घ) विदूषक का ( )

6. 'यदि तावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्' – यह कथन है –

(क) राजा उदयन का (ख) वासवदत्ता का
(ग) विदूषक का (घ) यौगन्धरायण का ( )

7. भास की भाषा है –

(क) समास प्रधान (ख) सहज एवं सरल
(ग) गौडी रीति प्रधान (घ) दीर्घ समास वाली ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न – (उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिये)

1. नाटक की समीक्षा के किन्हीं तीन मानदण्डों का उल्लेख कीजिये।

2. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नामकरण नाटक के किस अंक की घटना पर आधारित है ?

3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की कथावस्तु का क्या आधार है ?

4. 'नेता' से क्या तात्पर्य है ?

5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' की भाषा – शैली की दो विशेषतायें लिखिये ?

6. नाटक की कौनसी विशेषतायें अभिनेयता में सार्थक हैं ?

7. पद्मावती के चरित्र की कोई दो विशेषतायें लिखिये ?

8. महाकवि भास किन्हें प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त कवि हैं ?

9. भास की रसाभिव्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

10. संस्कृत नाट्य साहित्य में 'स्वप्नवासवदत्तम्' का कौन सा दृश्य अपना विशेष स्थान रखता है ?

अभ्यास प्रश्न –

1. वस्तु, नेता एवं रस के आधार पर 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की समीक्षा कीजिये।
(उत्तर सीमा – 150 शब्द)

2. वासवदत्ता के चरित्र की प्रमुख दो विशेषताओं को लिखिये।
(उत्तर सीमा – 100 शब्द)

3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के नायक की चारित्रिक विशेषतओं पर एक लेख लिखिये।
(उत्तर सीमा – 150 शब्द)

4. यौगन्धरायण के चरित्र की किन्हीं दो विशेषताओं का विवेचन कीजिये।
(उत्तर सीमा – 150 शब्द)

बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख) 6. (क) 7. (ख)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर :–

1. नाटक की समीक्षा के प्रमुख तीन मानदण्ड वस्तु, नेता तथा रस हैं।
2. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नामकरण नाटक के पंचम अंक की घटना पर आधारित हैं।
3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की कथावस्तु का आधार वृहत्कथा अथवा उदयन से सम्बन्धित लोक कथायें हैं।
4. नेता से तात्पर्य 'नायक' तथा अन्य पात्रों के चरित्र–चित्रण से है।
5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' की भाषा शैली
   (i) पात्रों के भावों और विचारों के अनुकूल है।
   (ii) भाषा सहज, सरल व सुबोध है।
6. नाटक में छोटे–छोटे वाक्य, दृश्यों का विन्यास, घटनाओं का घात–प्रतिघात, अन्तःसंघर्ष आदि विशेषतायें नाटक की अभिनेयता में सार्थक हैं।
7. पद्मावती अनुपम सुन्दरी, धर्मप्रिया एवं दानशील प्रकृति की हैं।
8. महाकवि भास मानवीय संवेदनाओं को प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त कवि हैं।
9. भास की रसाभिव्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शब्दावली स्वाभाविक और सरल है, उसमें आड़म्बर और कृत्रिमता नहीं है।
10. संस्कृत नाट्य साहित्य में 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के पञ्चम अंक का 'स्वप्न दृश्य' अपना विशेष स्थान रखता हैं।

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर :

1. देखिये 3.2.1 भाग का क, ख व ग
2. देखिये 3.4 भाग में वासवदत्ता का चरित्र।
3. देखिये 3.4 भाग में उदयन का चरित्र।
4. देखिये 3.4 भाग में यौगन्धरायण का चरित्र।

इकाई –4

स्वप्नवासवदत्तम (भास)

4.0 उद्देश्य

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के स्नातक (प्रथम वर्ष) संस्कृत विषय के प्रथम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम की इकाई संख्या 4 से संबंधित स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत) के प्रथम तथा द्वितीय अंक के महत्त्वपूर्ण श्लोकों का संदर्भ, प्रसंग सहित अनुवाद एवं नाटकीय वैशिष्ट्य को प्रस्तुत किया गया है तथा साथ ही व्याकरणिक टिप्पणी के अंतर्गत सन्धि–समास–प्रत्यय–लकार– विभँक्ति–वचन इत्यादि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थीगण –

1. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम व द्वितीय अंक के श्लोकों का संदर्भ–प्रसंग सहित अनुवाद कर सकेंगे।
2. प्रथम व द्वितीय अंक के श्लोकों का नाटकीय वैशिष्ट्य प्रतिपादित कर सकेंगे।
3. प्रथम व द्वितीय अंक के श्लोकों के अंतर्गत विद्यमान सन्धि, समास, प्रत्यय, लकार, वचन, विभँक्ति इत्यादि को सहजता से हृदयंगम कर सकेंगे।
4. प्रथम व द्वितीय अंक के श्लोकों में निहित गूढ़ रहस्यों तथा विशेष सन्देश को बता सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम की इकाई संख्या 4 के अंतर्गत भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम व द्वितीय अंकों की विषय–वस्तु, श्लोकान्वय, संदर्भ, प्रसंग, अनुवाद, व्याकरणिक टिप्पणी तथा नाटकीय वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त कर रहे हैं।

इस इकाई के प्रथम व द्वितीय अंक के श्लोकों के अनुवाद के साथ–साथ उनका विशेष छन्द, अलंकार, गुण, रस, वृत्ति, रीति इत्यादि का परिचय भी प्राप्त कर रहे हैं।

4.2 प्रथमोऽंक :

नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधार :

सूत्रधार :–

उदयनेन्दुसवर्णा वासवदत्ताबलौबलस्यत्वाम् ।
पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौत्वां पाताम् ।।1।।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत मंगलाचरण महाकवि भासकृत स्वप्नवासवदत्तम के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग :– प्रस्तुत श्लोक में नाटककार भास ने बलराम की भुजाओं से रक्षा करने की प्रार्थना की गयी है।

अनुवाद :– उदयकालीन नवीन चन्द्रमा के समान उज्ज्वल वर्णवाली, मदिरा पीने से वृद्धि को प्राप्त होने वाली या प्रियतमा रेवती को मदिरा पिलाने वाली श्री (लक्ष्मी और सौन्दर्य) से विभूषित तथा बसन्त ऋतु के समान सुन्दर बलराम की दोनों भुजाएँ आप दर्शकों (पाठकों, सहृदयों) की रक्षा करें।

विशेष :– नाटक के प्रारम्भ में नान्दी पाठ की परम्परा चिरकाल से चली आ रही है इसीलिए कहा गया है– रंगविघ्नोपशाान्त्यर्थं नान्दीमादौ प्रयोजयेत्।

(1) नान्दी शब्द की व्युत्पत्ति – नन्दति देवाअस्यामिति नान्दी अथवा नन्दयति देवद्विजनृपादीनाम् इति नान्दी।

आचार्य विश्वनाथ ने नान्दी का निम्नलिखित लक्षण किया है –

आशीर्वचन संयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।

नाटक के प्रारम्भ में उसकी निर्विघ्न परिसमाप्ति के लिये देवता, विप्र, नृप आदि की आर्शीवादात्मक स्तुति जिसके द्वारा की जाती है उसे नान्दी कहते हैं।

टिप्पणी – नान्दी–नन्द्+अच् नन्दः,अण्+ङीप्।

व्याकरणः – अवतीर्णम् त्र अव्+तृ+क्त प्रत्यय

पाताम् = पा रक्षणे+लोटलकारः । प्र0 पु0 ए0 व0

पदमावतीर्णपूर्णौ – पदमावर्तीर्णम्तेन पूर्णौ (तृ0तत्पुरुष)

बसन्तकम्रौ – बसन्त इव कम्रौ बसन्तकम्रौ – उपमित समास

विशेष – प्रस्तुत पद्य में महाकवि भास ने बलराम की भुजाओं से रक्षा करने की प्रार्थना की है। अतः यहाँ आशीर्वादात्मक मंगलाचरण है। इसके साथ ही नाटक के प्रमुख पात्रों – उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती और वसन्तक के माध्यम से कथावस्तु का निर्देश होने से यहाँ वस्तुनिर्देशत्मक मंगलाचरण भी है। यहाँ बलराम के प्रति नाटककार की देवता से सम्बन्धित श्रद्धा भक्ति प्रकट होने के कारण भाव ध्वनि है। प्रस्तुत पद्य में अनुप्रास तथा मुद्रालंकार है। इस श्लोक में आर्या छन्द है।

धीरस्याश्रम संश्रितस्य वसतस्तुष्टस्य वन्यैः फलैः।
मानार्हस्य जनस्य वल्कलवस्तस्त्रासः समुत्पाद्यते।
उत्सिक्तो विनयादपेतपुरुषो भाग्यैश्चलैर्विस्मितः।
कोऽयं भो निभृतं तपोवनमिदं ग्रामीकरोत्याज्ञया।।2।।

अन्वय :– भोः धीरस्य, आश्रमसंस्थितस्य, वन्यैः फलैः तुष्टस्य, मानार्हस्य वल्कलवतः वसतः जनस्य त्रासःसमुत्पाद्यते। अयं कः उत्सिक्तः विनयात् अपेतः, चलैः भाग्यैः विस्मितः पुरूषः इदं निभृतं तपोवनम् आज्ञया ग्रामीकरोति।

सन्दर्भ :– कविता–कामिनी के मधुरहास महाकवि भास संस्कृत साहित्य के नाटककारों में अग्रगण्य तथा सर्वाधिक प्राचीन हैं। यह श्लोक स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से समुद्धृत है।

प्रसंग :– प्रस्तुत श्लोक में मगध नरेश दर्शक की बहिन राजकुमारी पद्मावती का अनुगमन करने वाले भृत्यों के द्वारा आश्रमवासियों को हटाये जाने का वर्णन किया गया है।

अनुवाद :– संन्यासी के वेश में यौगन्धरायण तथा अवन्तिका के वेश में वासवदत्ता प्रवेश करते हैं। यौगन्धरायण कहता है कि क्या यहाँ आश्रमवासियों को भी हटाया जा रहा है?क्योंकि धैयशाली, आश्रम वासी, वन में उत्पन्न कन्द मूल फलों से सन्तुष्ट रहने वाले, सम्माननीय एवं वल्कल वस्त्र धारण करने वाले वनवासी मुनिजनों को भी त्रास उत्पन्न कर रहा है। अरे सिपाहियो ! मर्यादा रहित एवं नम्रतारहित यह कौन मनुष्य है, जो चञ्चल भाग्य से आश्चर्यान्वित होकर इस शान्त तपोवन की राजाज्ञा से गाँव की भाँति अशान्त बना रहा है।

व्याकरण :– (1) आश्रमसंस्थितस्य – आश्रमेसंस्थितः तस्य सप्तमी तत्पुरुष

(2) मार्नाहस्य – मानाय अर्हःतस्य – चतुर्थीतत्पुरुष

विनयोदपेत पुरुषः – विनयादपेतश्चासौपुरुषः (कर्मधारय)

तपोवनम् – तपसे वनम् – चतुर्थी तत्पुरुष

संश्रितस्य – सम्+श्रि+क्त+ङस्

वसतः– वस्+शतृ (षष्ठी)

तुष्टस्य – तुष्+क्त+ङस् (षष्ठी)

उत्सक्तिः – उत्+सिञ्च्+क्त

विशेष :– प्रस्तुत पद्य में आक्षेप अलंकार तथा शार्दूल विक्रीडितम् छन्द है।

पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासी–
च्छ्लाघ्य गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।
काल–क्रमेण जगतः परिवर्तमाना।
चक्रारःपंक्तिरिव गच्छति भाग्य–पंक्तिः।।4।।

अन्वय :– पूर्वं त्वया अपि एवम् अभिमतं गतम् आसीत्। पुनः भर्तुः विजयेन श्लाघ्यं गमिष्यसि। जगतः भाग्यपंक्तिः चक्रारपंक्तिः इव कालक्रमेण परिवर्तमाना गच्छति।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत पद्य भासोहासः द्वारा प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पद्य में महाकवि भास ने वासवदत्ता द्वारा यह कहने पर कि आर्य थकावट उतनी खिन्नता उत्पन्न नहीं करती जितना कि तिरस्कार। तब योगन्धरायण ने कहा कि महारानी आप द्वारा यह विषय मानोपूर्व में भोगकर छोड़ दिया गया। अतः आप इस विषय में चिन्ता न करें।

अनुवाद :– क्योंकि पहले तुमने भी इसी प्रकार अपने अभीष्ट को प्राप्त किया था और अब पुनः स्वामी की विजय के द्वारा पुनः प्रशंसा को प्राप्त करोगी। संसारी जीव की भाग्य रेखा पहिये के अरों की रेखाओं के समान समयानुसार बदलती रहती है।

व्याकरण :– कालक्रमेण :– कालस्यक्रमस्तेन (षष्ठी तत्पुरुष)

चक्रारपंक्ति – चक्राराणांपक्ति – षष्ठी तत्पुरुष

भाग्य पंक्ति – भाग्यस्य पंक्ति – षष्ठी तत्पुरुष

अभिमतम् – अभि+मन्+क्त।

गतम् – गम्+क्त।

श्लाघ्यम् – श्लाघ्+यत् ।

परिवर्तमाना –परि+वृत्+मुक्+शानच् ।

विशेष :– प्रस्तुत पद्य में अर्थान्तरन्यास अलंकार तथा वसन्ततिलका छन्द है। इस श्लोक में मन्त्री यौगन्धरायण वासवदत्ता को विश्वास दिलाता है कि अपने पति उदयन की विजय के अनन्तर तुम भी इस प्रकार के श्लाघनीय राजकीय समारोह का आनन्द पाओगी कोई भी वस्तु सदा एक ही अवस्था में नहीं रहती। तुम्हारा भी तो दिन भाग्योदय से चमकेगा, यद्यपि आज तुम भाग्य के विपरीत होने के कारण इस शोचनीय दशा को प्राप्त हो गई हो।

सम्भषकः! न खलु न खलूत्सारणा कार्या। पश्य,

परिहरतु भवान् नृपापवादं
न परूषमाश्रमवासिषु प्रयोज्यम्।
नगरपरिभवान् विमोक्तुमेते,
वनमभिगम्य मनस्विनो वसन्ति।।5।।

अन्वयः भवान् नृपापवादं परहरतु, आश्रमवासिषु परूषं न प्रयोज्यम्। एते मनस्विनः नगरपरिभवान् विमोक्तुम् वनम् अभिगम्य निवसन्ति।

अनुवाद :– राजा के विरुद्ध लोकापवाद मत होने दो। तपोवन में रहने वालों को कटु वचन नहीं कहने चाहिए। ये मनस्वी मुनिजन शहर की बुराइयों से बचने के लिए अरण्य (वन) में आकर रह रहे हैं।

विशेष :– इस पद्य में कञ्चुकी सेवकों को उनके अशिष्ट व्यवहार के लिए डांटता है। यहाँ नृपापवाद से तात्पर्य उस कलंक से है जो सेवकों के खराब व्यवहार के कारण राजा के मत्थे मढ़ा जाता है, क्योंकि लोग सोचेंगे कि वे राजा के द्वारा इस प्रकार कार्य करने के लिए आदिष्ट हैं।

व्याकरण :– नृपापवादम् – नृपस्य अपवादम् – षष्ठी तत्पुरुष

प्रयोज्यम् – प्र+युज्+ण्यत्

विमोक्तुम् – वि+मुच्+तुमुन्

अधिगम्य – अधि+गम्+ल्यप्

तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि दर्भान्
स्वैरं वनादुपनयन्तु तपोधनानि
धर्मप्रिया नृपसुता न हि धर्मपीड़ा–
मिच्छेत तपस्विषु कुलव्रतमेतदस्याः।।6।।

अन्वय :– तपोधनानि तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि दर्भान् च वनात् स्वैरम् उपनयन्तु। हि धर्मप्रिया नृपसृता तपस्विषु धर्मपीड़ां न इच्छेत्। एतत् अस्याः कुलव्रतम्।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत श्लोक में भासोहासः महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्त्म् के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कंचुकी कहता है कि महारानी पद्मावती जो कि दर्शक की बहिन है उन्हें आश्रम में रहना अभिप्रेत है। अतः आप लोगों को उनके लिए जल, समिधाएँ, कुश, पुष्पादि को वन से लाने का प्रबन्ध करें।

अनुवाद – तपस्या की साधनभूत सामग्री पवित्र जल, समिधाएँ, कुश, पुष्प इत्यादि स्वतन्त्रतापूर्वक वन से लाने का प्रयत्न करें क्योंकि धर्म में अनुराग रखने वाली राजकुमारी तपस्वियों के धर्माचरण में बाधा पहुँचाना नहीं चाहती ? यह इनका कुलक्रमागत नियम है।

तीर्थोदकानि – तीर्थस्य उदकानि तीर्थोदकानि (षष्ठी तत्पुरुष)

तीर्थ –'तरति पापादिकं यस्मात् सः तीर्थः' तृ+थक्। धर्मप्रिया – धर्मः प्रियाः यस्यासाः बहुब्रीहि

विशेष – प्रस्तुत पद्य में काव्यलिंग अलंकार तथा वसन्ततिलका छन्द है।

प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।

भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां मे महती स्वता।।7।।

अन्वय :– प्रद्वेषः वा बहुमानः, संकल्पात् (एव) उपजायते। भर्तृदाराभिलाषित्वात् अस्यां मे महती स्वता (अस्ति)।

संदर्भ : प्रस्तुत श्लोक भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में यौगन्धरायण कहता है कि मगध राज की कन्या पद्मावती के लिए पुष्पकभद्रादि ज्योतिषियों ने स्वामी उदयन की पत्नी होना बताया है अतः

अनुवाद – शत्रुता अथवा सम्मान, मन के संकल्प अथवा भवना से ही उत्पन्न होते हैं। इसलिए स्वामी उदयन की पत्नी बनाने की अभिलाषा के कारण ही इस पद्मावती में में मेरी अत्यधिक आत्मीयता है।

व्याकरण – प्रदेृष :– प्रकृष्टेदेृषः इति प्रदेृषः (प्रादि समास)

(2) संकल्पात् – सम्+क्लृप+घञ् ।

दारा – दार शब्द पुंसि बहुवचने च केवलम् ।

स्वता – स्व+तल् ।

प्रस्तुत पद्य में अर्थान्तरन्यास तथा काव्यलिंग अलंकार है।

इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

कस्यार्थः कलशेन को मृगयते वासो यथा निश्चितं

दीक्षां पारितवान् किमिच्छाति पुनर्देयं गुरोर्यद्भवेत्।

आत्मानुग्रहमिच्छतीह नृपजा धर्माभिरामप्रिया

यद् यस्यास्ति समीप्सितं वदतु तत् कस्याद्य किं दीयताम्।।8।।

अन्वय :– कस्य कलशेन अर्थ?कः वासः मृगयते?यथा निश्चितं दीक्षां पारितवान् (स्नातकः) पुनः किं इच्दति यत् गुरोः देयं भवेत्?धर्माभिरामप्रिया नृपजा इह आत्मानुग्रहं इच्छिति। यस्य यत् समीप्सितम् तत् वदतु, अद्य कस्य किं दीयताम्?

सन्दर्भ :– प्रस्तुत श्लोक भासोहासः कृत स्वप्नवासवदत्तम के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कञ्चुकी कहता है कि हे आश्रम में निवास करने वाले तपस्वियों को महारानी पद्मावती धर्माचरण की इच्छा से मन चाही वस्तु का दान देने के लिए आमन्त्रित कर रही है।

अनुवाद – किसको कमण्डलु की आवश्यकता है ?कौन वस्त्र खोज रहा है। विधिपूर्वक दक्षिणा लिये जाने पर भी गुरु को कौन गुरुदक्षिणा में क्या देना चाहता है ?धर्म का आचरण करने वाले तपस्वियों से अनुराग रखने वाली राजकुमारी इस आश्रम में अपने ऊपर आप लोगों की कृपा चाहती है। अतएव जिसको भी जो अभिष्ट हो, उसे कहें, किसे आज क्या किया जाय।

व्याकरण – यथा निश्चितम्–निश्चयं अनतिक्रम्य इति (अव्ययीभावः)

(2) धर्माभिरामप्रिया – धर्मे अभिरामः अभिरतिःरुचिः यस्या सा प्रिया धर्माभिराम प्रिया – बहुब्रीहि।

(3) देयम् त्र दा+यत् ।

(4) समीप्सित् त्र सम्+ईप्स्+क्त।

प्रस्तुत श्लोक में स्वभावोक्ति तथा अनुप्रास अलंकार है। इस श्लोक में शान्त रस व प्रसाद गुण परिलक्षित है। इस श्लोक में शार्दूलविक्रीडितम् छन्द है।

कार्यं नैवार्थैर्नापि भोगैर्न वासै–

र्नाहं काषायं वृत्तिहेतोः प्रपन्नः।

धीरा कन्येयं दृष्टधर्मप्रचारा

शक्ता चारित्र्यम् रक्षितु मे भगिन्या।।9।।

अन्वय :– (मम) न एव अर्थैः, न अपि भोगैः न(च) वस्त्रैः कार्यम् (अस्ति)। न अहं वृत्तिहेतोः काषायं प्रपन्नः। इयं कन्या धीरा दृष्टधर्मप्रचारा (अस्ति) अतएव मे भगिन्याः चारित्र्यं रक्षितुं शक्ता (अस्ति)।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक भासोहास कृत स्वप्नवासवदत्तम के प्रथम अंक से समुद्धृत किया गया है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में यौगंधरायण पद्मावती से कहते हैं कि यह मेरी बहन है। परदेश गये हुए पति वाली इसको आपके पास कुछ समय के लिए संरक्षण में रखना चाहता हूँ।

अनुवाद – न मुझे धन से प्रयोजन है, न मुझे सांसारिक भोगों से ही कोई लेना देना है और न ही वस्त्रों से कोई प्रयोजन है। तथा न मैंने ये काषाय वस्त्र आजीविका के लिए धारण किये हैं। धैर्यशाली धर्माचरण का ज्ञान रखने वाली यह महाराज की विदुषी कन्या धर्मप्रिया है, अतः मेरी बहिन के चरित्र की रक्षा करने में पूर्णतः समर्थ हैं।

व्याकरण – दीक्षाम् – दीक्षा+अ+टाप् पारितवान्– पार+क्तवत्। समीप्सितम् – सम्+आप्+सन्+क्त्। दीयताम् – दा+लोट्। दृष्ट धर्मप्रचारा – दृष्टः धर्मस्य प्रचारो यया सा (बहु.)

विशेष :– प्रस्तुत श्लोक में वैश्वदेवी नामक छन्द है। जिसका लक्षण आचार्यों ''पञ्चाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौयौ'' दिया है। वर्णसाम्य के कारण अनुप्रास अलंकार का प्रयोग मिलता है। शान्त रस प्रसाद गुण एवं छोटे वाक्यों के कारण दण्डक शैली का प्रयोग किया गया है।

सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।

सुखमन्यद् भवेत् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।।10।।

अन्वय :– (हे देवि!) अर्थः दातुं सुखं भवेत् प्राणाः तपः दातुं सुखं, (भवेत्) अन्यतः सर्वम् सुखं (दातुं भवेत्) परन्तु न्यासस्य रक्षणं (महत्) दुःखम्।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत श्लोक भासोहासः कृत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से समुद्धृत किया गया है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में काञ्चुकीय पद्मावती से कहती है कि हे देवि ! इस तपस्वी की बहिन को धरोहर के रूप में रखने की प्रार्थना बहुत कठिन है। इसे कैसे स्वीकार किया जाये क्योंकि–

अनुवाद – हे देवि ! धन देना सरल है ? प्राणों को त्याग देना सरल है तथा तपजन्य फल देना सरल है और सभी कुछ देना सरल है परन्तु न्यास (धरोहर) की रक्षा करना बड़ा कठिन है।

व्याकरण – दातुम् – दा+तुमुन् । प्राणा – प्राण शब्द पुलिंग और नित्य बहुवचनान्त है। न्यास – नि+अस्+धञ्। रक्षणम्– रक्ष+ल्युट् प्रत्यय

विशेष – प्रस्तुत श्लोक अर्थान्तरन्यास अलंकार एवं अनुष्टुप छन्द है। श्लोक में न्यास की रक्षा करना अत्यन्त कठिन बताया है। प्रसाद गुण है।

पद्मावती नरपतेर्महिषी भवित्री

दृष्टा विपत्तिरथ यैः प्रथमं प्रदिष्टा।

तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्या–

न्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि।।11।।

अन्वय :– यैः प्रथमं विपत्तिः प्रदिष्टा दृष्टा (तैः) अथ पद्मावती नरपतेः महिषी भवित्री तत्प्रत्ययात् इदं कृतम्। हि विधिः सुपरीक्षितानि सिद्धवाक्यानि उत्क्रम्य न गच्छति।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – यौगन्धरायण अपने मन ही मन में कहता है कि स्वामी उदयन के प्रतिष्ठित होने पर देवी के समीप ले जाते समय मेरे लिए यह मगधराजपुत्री ही इस विषय में साक्षी बनेगी क्योंकि –

अनुवाद – जिन पुष्पक भद्रक आदि ज्योतिषियों के द्वारा पहले ही विपत्ति के बारे में देख लिया गया था। वह हमने देख ली है उन्होंने ही इसके बाद महाराजा उदयन की महिषी पद्मावती होगी? भविष्य में होने वाली इस बात पर विश्वास करके ही यह धरोहर रूपकार्य किया है। निश्चय ही भली प्रकार परीक्षा किये सिद्ध पुरुष के वचनों का अतिक्रमण भाग्य भी नहीं कर सकता है।

व्याकरण – सिद्धवाक्यानि – सिद्धानां वाक्यानि (ष.त.पु.) सुपरीक्षितानि – सुष्ठु परीक्षितानि तानि (बहुब्रीहि) । दृष्टा – दृश+क्त+टाप्। विपत्ति – वि+पद्+क्तिन्। प्रदिष्टा – प्र+दिश्+क्त+टाप्। कृतम् – कृ+क्त। उत्क्रम्य – उत+क्रम+ल्यप् ।

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में काव्य लिंग अलंकार एवं बसन्ततिलका छन्द है। प्रस्तुत श्लोक से ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान मिलता है।

विस्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्यया

वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः।

भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनानयक्षेत्रवत्यो दिशो

निःसंदिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि बह्वाश्रयः।।12।।

अन्वय :– अत्र देशागतप्रत्ययाः हरिणाः अचकिताः (सन्तः) विश्रब्धं चरन्ति, सर्वे वृक्षा दयारक्षिताः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः (सन्ति) कपिलानि गोकुलधनानि भूयिष्ठं (सन्ति)। दिशः अक्षेत्रवत्यः। अयं बह्वाश्रयः धूमः (प्रसरति)। अतः निःसन्दिग्धम् इदम् तपोवनम् (अस्ति)।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – ब्रह्मचारी तपोवन को देखकर कहता है कि निश्चय ही यह तपोवन है क्योंकि ऐसा प्रतीत हो रहा है। जैसे

अनुवाद – यहाँ पर विश्वास उत्पन्न हो जाने के कारण हरिणों के झुण्ड भय त्याग कर विश्वासपूर्वक चर रहे हैं अथवा विचरण कर रहे हैं। सभी वृक्ष फलों एवं फूलों से युक्त हैं। तथा ऋषियों द्वारा प्रेमपूर्वक पाले–पोसे गये हैं। कपिल वर्ण वाली गायों का बड़ा समूह है। दिशायें खेतों वाली नहीं है। अनेक होम–द्रव्यों की गन्ध वाला धुंआ सर्वत्र फैल रहा है। अतः निश्चय ही यह तपोवन है।

व्याकरण – परिहरत्यार्या – परिहरति+आर्या (यण्) चकिता – चक्+क्त+जस् । सुपरिपालनीय – सु+परि+पाल्+णिच्+अनीयर । श्रुति –श्रु+क्तिन् । आगत – आ+गम्+क्त। गन्तव्यम्–गम्+तव्यत्। परिसमाप्ता– परि+सम्+आप्+क्त्+टाप्। संवृत्तम् –सम्+वृत्+क्त ।

विशेष :– महाकवि भास ने आश्रम का स्वाभाविक एवं मनोहर चित्र प्रस्तुत किया है। तपोवन का वातावरण शान्त, अहिंसक एवं पवित्र है।

प्रस्तुत श्लोक में तपोवन का स्वाभाविक वर्णन होने के कारण स्वाभावोक्ति व वाक्यार्थहेतुक होने से काव्यलिंग अलंकार है। तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

नैवदानीं तादृशाश्चक्रवाका नैवाप्यन्ये स्त्रीविशेषैर्वियुक्ताः।

धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्ति भर्ता भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा।13।।

अन्वय :– इदानीं तादृशाः चक्रवाकाः न एव (सन्ति), स्त्रीविशेषैः वियुक्ताः अन्ये अपि तादृशा न एव (सन्ति) सा स्त्री धन्या यां भर्ता तथा वेत्ति। हि सा दग्धा अपि भर्तृस्नेहात् अदग्धा (वर्तते)।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक भासोहासः कविता कामिनी विलासः महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में राजा उदयन के वासवदत्ता को स्मरण करते हुए बेहोश हो जाने का वर्णन किया गया है। ब्रह्मचारी कहता है कि भूमि पर लौटने से धूल धूसरित शरीर वाले राजा उदयन ने अचानक उठकर कहा कि हा वासवदत्ते ! हा अवन्ति राजपुत्रि! हा प्रिय शिष्ये! ऐसा कहकर बहुत देर तक विलाप करते रहे और अत्यधिक क्या कहूँ–

अनुवाद – इस समय वैसे चकवे भी नहीं है, न तो स्त्रियों से वियुक्त अन्य ही कोई है। वह स्त्री धन्य है जिसे पति उस भाँति मानता है। वस्तुतः वह जल जाने पर पति स्नेह के कारण जली नहीं है। अर्थात् जीवित हैं।

व्याकरणिक टिप्पणी – समास–भर्तुःस्नेह– भर्तृस्नेहः तस्मात् – भर्तृस्नेहात् (षष्ठी तत्पुरुष)

(2) स्त्री विशेषा – स्त्रीणां विशेषाःस्त्रीविशेषाः तैः (षष्ठी तत्पपुरुष समास)

चक्रवाक – चक्र(कृ+क) धञार्थे प्रत्ययःनिपातनाद् दित्वम्

वाका – (वच्+घञ्) चक्र इति संज्ञया उच्यते इति चक्रचाकः अथवा चक्र इति वाक् यस्य।

वियुक्ता – वि+युज्क्त।

भर्ता – भृ+तृच् ।

दग्धा – दह+क्त+टाप्।

नैवेदानीम् – न+एव+इदानीम्।

नैवाप्यन्ये – न+एव+अपि+अन्ये।

अदग्धा – न दग्धा इति (नञ्)

प्रस्तुत पद्य में विरोधाभस और प्रतीप अलंकार है लक्षण – प्रतीप मुपमानस्येपमेयत्व प्रकलप्नम्। प्रस्तुत श्लोक में शालिनी छन्द है। जिसका लक्षण है– मातौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।

विशेष – इसमें दाम्पत्य प्रेम का आदर्श उपस्थित किया गया है। साथ ही वासवदत्ता के वियोग में उदयन की विरह व्यथा की सशक्त व्यंजना हुई है।

अनाहारे तुल्यः प्रततरूदितक्षामवदनः,
शरीरे संस्कारं नृपतिसमदुःखं परिवहन्।
दिवा वा रात्रौ वा परिचरति यत्नैर्नरपतिं
नृपः प्राणान् सद्यस्त्यजति यदि तस्याप्युपरमः।।14।।

अन्वय :– (हि सः) अनाहारे तुल्यः, प्रततरूदितक्षामवदनः नृपतिसमदुःखं शरीरे संस्कारं परिवहन् दिवा वा रात्रौ वा यत्नैः नरपतिं परिचरति। यदि नृपः सद्यः प्राणान् त्यजति (तर्हि) तस्य अपि उपरमः निश्चितः।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक संस्कृत साहित्य के प्रथम नाटककार भासोहासः कृत षष्ठ अंकीय स्वप्न वासवदत्तम् से अवतरित है।

प्रसंग – राजा उदयन वासवदत्ता का स्मरण करते हुए शोकाकुल हो धरती पर लोटने लगते थे। अचानक उठकर वासवदत्ता को पुकारने लगते हैं तब यौगन्धरायण ने कहा कि क्या राजा को सान्त्वना देने का किसी मन्त्री ने प्रयास किया तब ब्रह्मचारी कहता है कि रुमण्वान नामक मन्त्री ने महाराज को होश में लाने का प्रयास किया–

अनुवाद – वह मन्त्री रूमण्वान राजा उदयन के न खाने पर स्वयं भी भोजन नहीं करता। सदैव रोते रहने के कारण राजा के समान उसका चेहरा भी म्लान हो गया है। उसकी वेशभूषा भी राजा के समान ही शोक प्रकट करने वाली हैं। क्या दिन, क्या रात वह बडे ही प्रयत्न से राजा की सेवा–शुश्रुषा करता है यहाँ तक कि यदि राजा प्राण छोडे तो उसका भी मरण हो जाये।

व्याकरणिक टिप्पणी –

(1) अनाहारे – न आहारः अनाहारः तस्मिन् अनाहारे (नञ्)

(2) प्रततरुदितम् – प्रततं च तद्रुदितं (कर्मधारय)

(3) नृपतिसमदृःखम् – नृपतिनासमं दुःखं यस्मिन् कर्मणि तत् नृपति समदृःखम् (बहुब्रीहि समास)

(4) संस्कार – सम्+कृ+घञ्

(5) परिचरति – परि+चर्+तिप् (लट् प्र.पु. एक व.)

(6) व्यजति – व्यज्+तिप् लट् प्र.पु.एक व.

विशेष – प्रस्तुत पद्य में शिखरिणी छन्द है जिसका लक्षण है – रसैरुद्रैश्छिन्ना यमन सभलागः शिखरिणी

प्रस्तुत श्लोक में काव्य लिंग अलंकार है। इस श्लोक में रूमण्वान की राजा उदयन के प्रति राजभक्ति का वर्णन है। इस आमात्य का स्थान यौगन्धरायण के बाद था। इसमें बताया गया है कि जब राजा शोक–सन्तप्त होता था तो मन्त्री रुमण्वान भी तदनुकूल चेष्टा करता था।

सविश्रमो ह्यहं भारः प्रसक्तस्तस्य तु श्रमः।

तस्मिन् सर्वमधीनं हि यस्याधीनो नराधिपः।।15।।

अन्वय :– हि अयं (मदीयः) भारः सविश्रमः, तु तस्य श्रमः प्रसक्तः। हि नराधिपः यस्याधीनः सर्वं तस्मिन् अधीनम्।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक नाटककार भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक से समुधृत है।

प्रसंग – वासवदत्ता कहती है कि आर्य पुत्र अब उत्तम पुरुषों के संरक्षण में है तब यौगन्धरायण मन में कहता है कि अरे रुमण्वान बहुत भार उठा रहा है क्योंकि –

अनुवाद – निश्चय ही यह मेरा भार विश्राम युक्त है परन्तु उस रुमण्वान का तो परिश्रम निरन्तर ही जारी है क्योंकि राजा जिस पर आश्रित है सभी कुछ उसी पर आश्रित रहता है।

(1) सविश्रम – विश्रमेणसहितःसविश्रमः (तत्पुरुष)

(2) नराधिपः – नराणामधिपः (तत्पुरुष षष्ठी)

(3) भार – भृ+अच् ।

(4) विश्राम – वि+श्रम+घञ् ।

(5) प्रसक्त – प्र+सज्ज+क्त।

विशेष – 'तस्मिन् .....नराधियः' इस पंक्ति में यौगन्धरायण ने स्पष्ट किया है कि साम्राज्य का सर्वेसर्वा राजा ही होता है और जब राजा की देखभाल का दायित्व रुमण्वान पर है तो निश्चय ही साम्राज्य का पूर्ण भार भी उसी के कन्धों पर आ पड़ा है।

प्रस्तुत श्लोक में अर्थान्तरन्यास अलंकार तथा अनुष्टुप छन्द विद्यमान हैं।

खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः

प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरित धूमो मुनिवनम्।

परिभ्रष्टो दूराद्रविरपि च संक्षिप्तकिरणो

रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।16।।

अन्वय :– खगाः वासोपेताः मुनिजनः, सलिलमवगाढ़ः, प्रदीप्तः अग्निःभाति, धूमः मुनिवनं प्रविचरति। अपि च दूरात् परिभ्रष्टः रविः संक्षिप्तकिरणः सन्, रथं व्यावर्त्य शनैः अस्तशिखरं प्रविशति।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक संस्कृत के प्रथम नाटककार भासोहासः कृत स्वप्न वासवदत्तम् के प्रथम अंक से समुधृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में कञ्चुकी कहता है कि हे वासवदत्ता। आइये। आप इधर से चलिये इधर से। क्योंकि इस समय –

अनुवाद – पक्षियों का समूह अपने अपने घोंसलों में चला गया है। मुनि जन जल में स्नान करने लगे हैं यज्ञ की प्रज्वलित अग्नि शोभित हो रही है यज्ञ का धुआँ आश्रम के चारों ओर फैल रहा है। दूर आकाश से गिरा हुआ तथा अपनी किरणों को समेटे हुए सूर्य भी अपने रथ को लौटाकर धीरे–धीरे अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहा है। इससे प्रतीत होता है कि सन्ध्या का समय हो गया है।

व्याकरणिक टिप्पणी–

(1) खगा – खेगच्छन्तीतिखगा – ख+गम्+उ

(2) अवगाढ – अव्+गाह्+क्त ।

(3) प्रदीप्त – प्र+दीप्+क्त।

(4) परिभ्रष्ट – परि+भ्रंश+क्त।

(5) व्यावर्त्य – वि+आ+वृत्त+णिच्+ल्यप्।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में सूर्यास्त का स्वाभविक तथा सजीव चित्रण करने में कवि का प्रकृति प्रेम दर्शनीय है।

उस श्लोक में शिखरिणी छन्द है। तथा अनुमान एवं स्वभावोक्ति अलंकार विद्यमान है।

4.3 द्वितीयोअङ्क

स्थान – मगधाधिपति दर्शक के प्रसाद का उपवन भाग।

समय – पूर्वाह्न से सायंकाल तक।

(ततः प्रविशति चेटी)

कुञ्जरिके! कुञ्जरिके! कुत्र कुत्र भर्तृदारिका पद्मावती। किं भणसि? एषा भर्तृदारिका माधवीलतामण्डपस्य पार्श्र्वतः कन्दुकेन क्रीडतीति। यावद् भर्तृदारिकामुपसर्पामि। अम्मो इयं भर्तृदारिका उत्कृतकर्णचूलिकेन व्यायामसंजातस्वेदबिन्दुविचित्रितेन परिश्रान्तरमणीयदर्शनेन मुखेन कन्दुकेन क्रीडन्तीत एवागच्छति ।यावदुपसर्पामि।

(तत्पश्चात् चेटी प्रवेश करती है)

(अनुवाद)– चेटी– (आकाशभाषित) अरी!कुञ्जरिका! कुञ्जरिका! राजकुमारी पद्मावती कहाँ है? कहाँ है?क्या कहा? यह राजकुमारी माधवी लता–कुंज के पास गेंद से खेल रही है? अच्छा, तो मैं राजकुमारी के पास जाती हूं। (घूमकर तथा देखकर) ओह? यह कान की बालियों को उपर उठाए हुए, परिश्रम से उत्पन्न पसीने की बूंदों से विचित्र शोभा और थकने से सुन्दर दिखाई देते मुख से पद्मावती गेंद खेलती हुई उधर ही आ रही है। तो मैं भी इनके पास चलती हूँ। (निकल जाती है)

(विशेष)– प्रस्तुत गद्यांश से यह ज्ञात होता है कि भासकालीन समाज में कन्दुक क्रीड़ा कन्याओं में लोकप्रिय थी। कल्हण की राजतरंगिणी में भी इसका चर्चा है।

प्रवेशकः

(ततः प्रविशति कन्दुकेन क्रीडन्ति पद्मावती सपरिवारा वासवदत्ता सह)

वासवदत्ता– हला! एष ते कन्दुकः।

पद्मावती– आर्ये! भवत्विदानीमेतावत्।

वासवदत्ता– हला! अतिचिरं कन्दुकेन क्रीडित्वाधिकसंजातरागौ पदकीयाविव ते हस्तौ संवृतौ।

चेटी– क्रीडतु क्रीडतु तावद् भर्तृदारिका निवर्तत्र्यताम् तावदयं कन्याभावरमीणयः काल।

पद्मावती– आर्ये! किमिदानीं मामुपहसितुमिव निध्यायसि।

(प्रवेशक समाप्त हुआ)

(तत्पश्चात् वासवदत्ता के साथ गेंद खेलती हुई पद्मावती परिजनों के साथ प्रवेश करती है)

(अनुवाद)– वासवदत्ता– सखि! यह तुम्हारी गेंद है।

पद्मावती– आर्ये! बस अब इतना ही बहुत है।

वासवदत्ता – सखि! बहुत देरे से गेंद खेलने के कारण तुम्हारे हाथ अधिक लाल होने के कारण पराये के समान हो रहे हैं। अर्थात् ऐसा प्रतीत होता है, कि यह तुम्हारे हाथ नहीं हैं, बल्कि दूसरे के हैं।

चेटी – खेलिये और खेलिये। राजकुमारी। कौमार्य अवस्था के समय को आनन्द से व्यतीत करें।

पद्मावती– आर्ये इस समय क्या तुम मेरा उपहास करने के लिए मुझे देख रही हो?

(विशेष)– किं भणसि?यह आकाशभाषित नामक नाट्योक्ति है। स्वगत, प्रकाश, अपवारित, त्रिपताक, पताका, जनान्तिक और आकाशभाषित ये सब नाट्योक्तियाँ कहलाती हैं।

वासवदत्ता– नहि नहि! हला! अधिकमद्य शोभते। अभित इव ते अद्य वरमुखं पश्यामि।

पद्मावती– अपेहि। मेदानीं मामुपहस।

वासवदत्ता– एषास्मि तूष्णीका भविष्यन्महासेनवधू।

पद्मावती– क एष महासेना नाम।

वासवदत्ता– अस्त्युज्जयिनीयो राजा प्रद्योतो नाम। तस्य बलपरिमाणनिवृत्तं नामधेयः महासेन इति।

चेटी– भर्तृदारिका तेन राज्ञा सह सम्बन्धं नेच्छति

(अनुवाद) – वासवदत्ता– ऐसा नहीं है। सखि, आज तुम्हारा मुख अधिक सुन्दर लग रहा है। तुम्हारा सुन्दर मुख– दोनों ओर से ही देखती हूँ।

पद्मावती– दूर हटो। इस समय मेरा उपहास मत करो।

वासवदत्ता– महासेन की होने वाली बहू! अब मैं चुप हो गयी।

पद्मावती– यह महासेन कौन है?

वासवदत्ता– उज्जयिनी का प्रद्योत नाम का राजा है। उसकी सेना विशाल होने के कारण उसे महासेन कहा जाता है।

चेटी– राजकुमारी उस राजा के साथ सम्बन्ध नहीं चाहती है।

(विशेष) – केवल नीच पात्रों के द्वारा दो अंकों के बीच में जो भावी और हो चुके अर्थों की सूचना दी जाती है वही प्रवेशक होता है।

वासवदत्ता– अथ केन खल्विदानीमभिलषति।

चेटी– अस्ति वत्सराज उदयनो नाम। तस्य गुणान् भर्तृदारिकाभिलषति।

वासवदत्ता– आर्यपुत्रं भर्तारमभिलषति (प्रकाशं) केन कारणेन।

(अनुवाद)– वासवदत्ता– तो फिर किसके साथ सम्बन्ध चाहती है।

चेटी– वत्सदेश का राजा उदयन है। उसके गुणों को राजकुमारी चाहती है।

वासवदत्ता– (मन में) आर्यपुत्र को पतिरूप में चाहती है। (प्रकटरूप में) किस कारण से?

(विशेष)– स्वाभाविक सरल, सरस संवाद के द्वारा कवि ने पद्मावती की पसंद की सूचना यहाँ दी है। साथ ही वासवदत्ता की मनःस्थिति का भी चित्रण किया है? इस प्रसंग में राजा उदयन की गुणवत्ता और लोकप्रियता की भी सूचना है।

चेटी– सानुक्रोश इति।?

वासवदत्ता– जानामि। अयमपि जन एवमुन्मादितः।

चेटी– भर्तृदारिके! यदि स राजा विरूपो भवेत्।

वासवदत्ता– नहि नहि! दर्शनीय एव।

पद्मावती– आर्ये! कथं त्वं जानासि।

वासवदत्ता– आर्यपुत्रपक्षपातेनातिक्रान्तः समुदाचारः किमिदानीं करिष्यामि। भवतु, दृष्टम्। हला! एवमुज्जयिनीयो जना मन्त्रयते।

(अनुवाद)– चेटी– वह अति विनम्र है, दयालु है (इसलिए)।

वासवदत्ता– (मन में) जानती हूँ, अच्छी प्रकार से जानती हूँ। यह जब मुझे भी इसी प्रकार उन्मत्त किया गया था। अर्थात् मैं भी ऐसे रीझ गई थी (दीवानी बन गई थी)

चेटी– राजकुमारी! यदि वे राजा सुन्दर न हों, तो!

वासवदत्ता– नहीं! नहीं! वे सुन्दर हैं।

पद्मावती– आर्ये आप कैसे जानती है?

वासवदत्ता– (मन में) आर्यपुत्र के प्रति पक्षपात (अतिशय प्रेम) के कारण (मैंने) औचित्य का उल्लंघन कर दिया। अब क्या करूं? अच्छा (देख) जान लिया। (प्रकट रूप में) सखि, ऐसा उज्जयिनी के लोग कहते हैं।

(विशेष)– ''मननात् त्रायते लोकांस्तत् मन्त्रम्'' जिसके मनन करने मात्र से लोक का त्राण होता है, वह मन्त्र है। वासवदत्ता ने बड़ी चतुरायी से ''ऐसा लोग कहते है'' (जनो मन्त्रयते) कहकर स्वयं की रक्षा कर ली। स्वयं को प्रत्युत्पन्नमति भी सिद्ध किया।

पद्मावती– न खल्वेष उज्जयिनीदुर्लभः सर्वजनमनोभिरामं खलु सौभाग्यं नाम।

(ततः प्रविशति धात्री)

धात्री– जयतु, भर्तृदारिके। भर्तृदारिके! दत्तासि।

वासवदत्ता– आर्ये! कस्मै।

धात्री– वत्सराजायोदयनाय।

वासवदत्ता– अथ कुशली स राजा।

धात्री– कुशली स आगतः तस्य भर्तृदारिका प्रतिगृहीता च।

वासवदत्ता– अत्याहितम्।

धात्री– किमत्रात्याहितम्।

(अनुवाद)– पद्मावती ठीक ही है। निश्चय ही उज्जयिनी में रहने वालों के लिए उदयन को देखना कठिन नहीं है। सुन्दरता वही है, जो सभी के मन को भा जाये।

(तत्पश्चात् धाय प्रवेश करती है)

धाय– राजकुमारी की जय हो। राजकुमारी तुम दे दी गयी हो।

वासवदत्ता– आर्ये! किसे?

धाय– वत्सराज उदयन को।

वासवदत्ता– वह राजा कुशल तो है?

धाय– वे यहाँ सकुशल आये हैं और उन्हें राजकुमारी स्वीकार है।

वासवदत्ता– बहुत बुरा हुआ।

धाय– क्या बुरा हुआ।

वासवदत्ता– न खलु किंचित्। तथा नाम संतप्योदासीनो भवतीति।

धात्री– आर्ये! आगमप्रधानानि सुलभपर्यवस्थानानि महापुरूषह्रदयानि भवन्ति।

वासवदत्ता– आर्ये! सत्यमेव तेन वृत्ता।

धात्री– नहि नहि अन्यप्रयोजनेनेहागतस्याभिजन विज्ञानवयोरूपं दृष्ट्वा स्वयमेव महाराजेन दत्ता।

वासवदत्ता– एवम्। अनपराद्ध इदानीमत्रार्यपुत्रः।

(अनुवाद) – नहीं कुछ नहीं। (पत्नी के वियोग में) उतना व्याकुल होकर फिर उदासीन हो जाता है।

धाय– आर्ये! शास्त्र ज्ञान प्रधान महापुरूषों के ह्रदय सरलता से ही स्वाभाविक अवस्था में आने वाले होते हैं।

वासवदत्ता– आर्य! क्या स्वयं ही उन्होंने पद्मावती का वरण किया है।

धाय– नहीं, नहीं। दूसरे किसी कार्य से आये हुए (महासेन ने) उनके कुल, ज्ञान, आयु तथा रूप को देखकर महाराज ने स्वयं उन्हें दे दी।

वासवदत्ता– (मन में) यदि ऐसा है, तो आर्यपुत्र दोषी नहीं है।

(विशेष) – प्रस्तुत संवाद स्वाभाविकता लिये हुए तथा मन को आकर्षित करने वाले हैं। सहज भाव तथा सुन्दरता से वासवदत्ता की मनःस्थिति का चित्रण भी करते हैं। नाटकप्रणेता द्वारा भाषा को सजीव बनाने के लिए ''सर्वजनमनोभिरामं खलु सौभाग्यं नाम तथा आमप्रधानानि सुलभपर्यवस्थानानि महापुरूषह्रदयानि भवन्ति' अर्थात् सुन्दरता वही है, जो सभी का मन मोह ले तथा अपनी ओर आकर्षित कर ले। सूक्तियाँ व मुहावरे देकर भाषा के सौन्दर्य को बढ़ाया है। यदि रूप में आकर्षण नहीं, तो वह रूप ही नहीं है।

(प्रविश्यापरा)

चेटी– त्वरतां त्वरतां तावदार्या। अद्येव किल शोभन– नक्षत्रम्। अद्येव कौतुकमंगलं कर्तव्यमित्यस्माकं भट्टिनी भणति।

वासवदत्ता– यथा यथा त्वरते, तथा तथान्धीकरोति में ह्रदयम्।

धात्री– एत्वेतु भर्तृदारिका।

(निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वितीयोऽङ्क

(दूसरी (चेटी) प्रवेश करके)

अनुवाद– चेटी– आर्या जल्दी करो, जल्दी करो। आज ही शुभ नक्षत्र है। आज ही मांगलिक कार्य करना है। (अर्थात् विवाह होना है) ऐसा महारानी ने कहा है।

वासवदत्ता– (मन में) यह जैसे–जैसे जल्दी करता है, वैसे–वैसे ही मेरे ह्रदय को अन्धा बना रही है।

धाय– आईये राजकुमारी, आईये।

(सभी निकल जाते हैं)

(विशेष)– प्रस्तुत अवतरणों में कवि ने जहाँ पद्मावती के विवाह के लिए उचित भूमिका तैयार की है, वहीं वासवदत्ता की मानसिक दशा को पूर्णतः स्वाभाविक दशा में प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है। अतः संवाद सजीव तथा रोचक है। कथा में भी प्रवाह बना रहता है। वासवदत्ता को सन्तोष है कि उदयन ने स्वयं वरण नहीं किया।

4.4 बोध प्रश्न

4.4.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. स्वप्नवासवदत्तम् किसकी रचना है?

(क) महाकवि कालिदास (ख) महाकवि माघ

(ग) महाकवि भास (घ) महाकवि श्रीहर्ष ( )

2. स्वप्नवासवदत्तम् की पाण्डुलिपि सर्वप्रथम किस विद्वान को प्राप्त हुई ?

(क) महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री को (ख) प्रोफेसर काणे को

(ग) महामहोपाध्याय टी गणपति शास्त्री को (घ) प्रोफेसर विंटरनीज को ( )

3. महाकवि भास का समय है ?

(क) ई0पू0 पंचम शताब्दी (ख) ई0 पूर्व चतुर्थ शताब्दी

(ग) ई0 पूर्व षष्ठ शताब्दी (घ) ई0पू0 द्वितीय शताब्दी ( )

4. स्वप्नवासवदत्तम् में कुल अंक कितने है?

(क) पांच (ख) षष्ठ

(ग) सात (घ) आठ ( )

5. वासवदत्ता की अत्यंत प्रिय वीणा का नाम क्या था ?

(क) स्वरमती (ख) गुणवती

(ग) घोषवती (घ) तंत्रीमुखी ( )

6. उदय नवेन्द्र सवर्णावासवदत्त बतौ बलस्यत्वाम्
पदमावतीर्णपूर्णौ वसन्तक भ्रौ भुजौ पाताम्।।?
उपर्युक्त श्लोक में अलंकार है–

(क) श्लेष (ख) यमक

(ग) मुद्रा (घ) उपमा ( )

7. कोऽयं भो निभृतं तपोवननिदं ग्रामीकरोत्याज्ञया?

(क) ब्रह्मचारी का (ख) सूत्रधार का

(ग) वासवदत्ता का (घ) यौगन्धरायण का। ( )

8. राजा उदयन किस देश का शासक है?

(क) वत्सदेश का (ख) उज्जयिनी का

(ग) मगध का (घ) काम्पिल्य देश का ( )

9. तपोवन में ब्रह्मचारी कहा से आया है?

(क) वत्सदेश से (ख) उज्जयिनी से

(ग) लावाणक ग्राम से (घ) काम्पिल्य देश से

10. भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्दग्धा' जल कर भी कौन नहीं जली है?

(क) वासवदत्ता (ख) पद्मावती

(ग) आवन्तिका (घ) अंगारवती ( )

11. यौगन्धरायण ने पद्मावती के पास वासवदत्ता को क्या बनाकर न्यास रूप में रखा?

(क) ब्राह्मणी अवन्तिका (ख) ब्राह्मण की बहिन

(ग) ब्राह्मणी (घ) राजकुमारी ( )

12. उज्जयिनी के राजा प्रद्योत का नाम 'महासेन' क्यो पडा?

(क) सेना के कारण (ख) सेना न होने से

(ग) सेना के महान होने से (घ) सेना के महान न होने से ( )

4.4.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न—

1. किस विद्वान् को 'स्वप्नवासवदत्तम्' की ताड़पत्र पर लिखित पाण्डुलिपि कब कहाँ प्राप्त हुई?

2. भाग्य पंक्ति किस प्रकार चलती है?

3. यौगधन्यरायण व वासवदत्ता ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब उन्होंने क्या देखा?

4. पद्मावती के अनुचरों द्वारा तपोवन में लोगों को ढीठतापूर्वक हटाने की घटना को देखकर कंचुकीय ने क्या कहा

5. यौगधन्रायण तपोवन में पद्मावती के प्रति अपनापन क्या सोचकर अनुभव करता है?

6. यद्यस्याति समीप्सितं वदतु तत् कस्याद्यद्वकिं दीयताम्।। यह कथन किसका है?

7. ''धर्मप्रिया नृपसुता नहि धर्म पीडा–
मिच्छेत् तपस्विषु कुलव्रत मेतदस्याः।''
इस कथन में कौनसी नृपसुता का चित्रण है?

4.4.3 निबन्धात्मक प्रश्न

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का नामकरण स्वप्नवासवदत्तम् क्यों रखा गया है। प्रमाण सहित सिद्ध कीजिये?

2. भास की नाट्यकला एवं काव्यगत विशेषतायें बतलाइयें?

3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की समीक्षा कीजिये?

4. स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत कीजिये ?

5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक कौन है?उदयन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये?

6. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर वासवदत्ता का चरित्र चित्रण कीजिये ?

7. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर पद्मावती की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

8. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर यौगन्धरायण की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

9. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर वसन्तक का चरित्र चित्रण कीजिये?

10. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के कर्ता भास का समय निर्धारण कीजिये?

11. भास की रचनाओं का नामोल्लेख करते हुए स्वप्नवासवदत्तम् की सार्थकता सिद्ध कीजिये ?

4.5 उपयोगी पुस्तकें

1. स्वप्नवासवदत्तम्– डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2
2. स्वप्नवासवदत्तम् व्याख्यार– डॉ0 जगन्नारायण पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
3. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– डॉ0 रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
4. स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– प्रो0 सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर
5. स्वप्नवासवदत्तम्– डॉ0 रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन जयपुर।
6. स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– श्रीकृष्ण ओझा– अभिषेक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
7. भासनाटकचक्र– संस्कृत रामजी उपाध्याय
8. स्वप्नवासदत्तम्– तारणीश झा
9. स्वप्नवासवदत्तम्– जयपाल विद्यालंकार
10. स्वप्नवासवदत्तम्– जगदीश प्रसाद पाण्डे
11. भास नाटकचक्र– संस्कृत हिन्दी व्याख्या, सुधाकर मालवीय
12. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा– पाण्डे एवं व्यास
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय
14. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
15. कवि दर्शन– भोलाशंकर व्यास

————————

इकाई –5

स्वप्नवासवदत्तम (भास)

5.0 उद्देश्य

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के स्नातक (प्रथम वर्ष) संस्कृत विषय के प्रथम प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम की इकाई संख्या 5 से संबंधित स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत) के तृतीय तथा चतुर्थ अंक के महत्त्वपूर्ण श्लोकों का संदर्भ, प्रसंग सहित अनुवाद एवं नाटकीय वैशिष्ट्य को प्रस्तुत किया गया है तथा साथ ही व्याकरणिक टिप्पणी के अंतर्गत सन्धि–समास–प्रत्यय–लकार– विभक्ति–वचन इत्यादि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थीगण –

1. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् के तृतीय व चतुर्थ अंक के श्लोकों का संदर्भ–प्रसंग सहित अनुवाद कर सकेंगे।
2. तृतीय व चतुर्थ अंक के श्लोकों का नाटकीय वैशिष्ट्य प्रतिपादित कर सकेंगे।
3. तृतीय व चतुर्थ अंक के श्लोकों के अंतर्गत विद्यमान सन्धि, समास, प्रत्यय, लकार, वचन, विभक्ति इत्यादि को सहजता से हृदयंगम कर सकेंगे।
4. तृतीय व चतुर्थ अंक के श्लोकों में निहित गूढ़ रहस्यों तथा विशेष सन्देश को बता सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम की इकाई संख्या 5 के अंतर्गत भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के तृतीय व चतुर्थ अंकों की विषय–वस्तु, श्लोकान्वय, संदर्भ, प्रसंग, अनुवाद, व्याकरणिक टिप्पणी तथा नाटकीय वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त कर रहे हैं।

इस इकाई के तृतीय व चतुर्थ अंक के श्लोकों के अनुवाद के साथ–साथ उनका विशेष छन्द, अलंकार, गुण, रस, वृत्ति, रीति इत्यादि का परिचय भी प्राप्त कर रहे हैं।

5.2 तृतीयोअङ्कः

कथासार– समय पूरा दिन।

स्थान – दर्शक के राजमहल का स्थान।

अंक के प्रारम्भ में ही सूचना मिलती है कि पद्मावती उदयन का विवाह होना निश्चित हो गया है। यह समाचार वासवदत्ता के हृदय को आघात पहुँचाता है और वह कहती है कि पहले तो आर्य से वियोग हुआ और अब पराये हो गये। दर्शक के महल में पद्मावती के विवाह उत्सव की चहल पहल है। इससे बचने के लिए वह एकान्त प्रमद वन में बैठी है। इसी समय दासी, महारानी के आदेश को उससे आकर कहती है कि – अवन्तिका उच्चकुलोत्पन्न तथा निपुण है, अतः महारानी की अभिलाषा है कि विवाह की सुहाग माला को वे ही अपने हाथ से गूँथे। इसे सुनकर उसकी चिन्तनीय दशा हो जाती है। वह अपने भविष्य के विषय में सोचने लगती है। इसी समय दासी, माला को जल्दी गूंथने के लिए कहती है। इसे सुनकर वह अत्यन्त चिन्तित हो उठती है पहले तो पति से अलग रहना और दूसरा अपनी आँखों के सामने ही दूसरी स्त्री से विवाह, नारी स्वभाव के लिए यह असह्य है, परन्तु वासवदत्ता को पति कल्याण के लिए सब कुछ सहना है। वह भी चुप रह कर। वह भाग्य को कोसती हुई माला को गूंथ देती है। वासवदत्ता की यही हार्दिक संवेदना इस अंक का आधार है। वह सहनशील होते हुए भी नारी है, नारी स्वभाव को आखिर कैसे छोड़ सकती है ? वह सब कुछ करते हुए भी सपत्नी मर्दन नामक औषधि को माला में गूँथने से मना कर देती है, माला गूँथने के साथ ही अंक की समाप्ति हो जाती है।

(ततः प्रविशति विचिन्तयन्ती वासवदत्ता)

वासवदत्ता– विवाहामोदसंङ्कुले अन्तःपुरचतुःशाले। परित्यज्य पद्मावतीमिहागतास्मि प्रमदवनम्। यावदिदानीं भागधेयनिर्वृतं दुःखं विनोदयामि। अहो अत्याहितम्। आर्यपुत्रोऽपि नाम परकीयः संवृत्तः। यावदुपविशामि। धन्या खलु चक्रवाकवधुः यान्योन्यविरहिता न जीवति। न खल्वहं प्राणान परिज्यजामि। आर्यपुत्रं पश्यामीत्यनेन मनोरथेन जीवामि मन्दभागा।

तृतीय अंक प्रारम्भ

(तत्पश्चात् सोचती हुई वासवदत्ता प्रवेश करती है।)

(अनुवाद)– वासवदत्ता– विवाह की प्रसन्नता से घिरे हुए अन्तःपुर की चौशाला में पद्मावती को छोड़कर मैं यहाँ प्रमदवन में (क्रीडोद्यान में) आ गयी हूँ। तब तक में भाग्य से प्राप्त दुःख को कम करूंगी। (घूमकर) अरे! बहुत बुरा हुआ। आर्यपुत्र भी अब पराये हो गये। अच्छा तो बैठती हूँ। (बैठकर) वह चकवे की पत्नी धन्य है, जो पति से अलग जीवित नहीं रहती है। मैं तो ऐसी अधम हूँ, जो पति से अलग होकर भी जीवित हूँ। यहाँ आर्यपुत्र के दर्शन होंगे, इसी इच्छा से अभागिन जी रही हूँ।

(ततः प्रविशति पुष्पाणि गृहीत्वा चेटी)

चेटी– क्व नु खलु गता आर्यावन्तिका (परिक्रम्यालोक्य च) अम्मो इयं चिन्ताशून्यहृदया नीहारप्रतिहतचन्द्रलेखेवामण्डितभद्रकं वेषं धारयन्ती प्रियंगुशिलापट्टके उपविष्टा। यावदुपसर्पामि। आर्ये! आवन्तिके! कः कालः, त्वामन्विष्यामि।

वासवदत्ता– किंनिमित्तम्।

चेटी– अस्मांक भट्टिनी भणति महाकुलप्रसूता स्निग्धा निपुणेति। इमां तावत् कौतुकमालिकां गुम्फत्वार्या।

वासवदत्ता– अथ कस्मै किल गुम्फितव्यम्।

चेटी– अस्माकं भर्तृदारिकायै।

(उसके बाद फूल लेकर दासी प्रवेश करती है)

(अनुवाद)– चेटी– आर्या अवन्तिका भला कहाँ चली गई? (घूमकर तथा देखकर) अरे! चिन्ता से शून्य हृदय वाली, कुहरे से घिरी चन्द्र लेखा के समान आभूषणरहित सुन्दर वेश धारण किये हुए प्रियंगुलता के नीचे शिलातल पर बैठी हुई है? तो उनके समीप जाती हूँ (समीप जाकर) आर्या अवन्तिका! कितना समय तुम्हें खोजते हुए हो गया है, अर्थात् बहुत देर से ढूंढ रही हूँ।

वासवदत्ता– किस कारण से।

चेटी– हमारी स्वामिनी कहती हैं कि (आप) उच्चकुल में उत्पन्न हैं। प्रिय हैं तथा कुशल हैं, अतः इस विवाहमाला को गूंथ दें।

वासवदत्ता– अच्छा किसके लिए गूंथनी है?

चेटी– हमारी राजकुमारी के लिए।

वासवदत्ता–– एतदपि मया कर्त्तव्यमासीत् अहो अकरूणाः खल्वीश्वराः।

चेटी– आर्ये! मेदानीमन्यच्चिन्तयित्वा। एष जामाता मणिभूम्यां स्नाति। शीघ्रं तावद् गुम्फत्वार्या।

वासवदत्ता– न शक्नोम्यन्यच्चिन्तयितुम् (प्रकाशम्) हला किं दृष्टो जामाता।

(अनुवाद)– वासवदत्ता (मन में)हाय, यह भी मुझे ही करना था?अहो निश्चय ही देवता कठोर (निर्दय) है।

चेटी– आर्ये! अब और कुछ मत सोचो। ये जामाता (दामाद) मणिमय भूमि पर स्नान कर रहे हैं?अतः आर्या जल्दी गूंथिए।

वासवदत्ता– (मन में) और कुछ सोच भी तो नहीं सकती हूँ। (प्रकट में) सखि, क्या तुमने जामाता को देखा है?

(विशेष) – वासवदत्ता के साथ भाग्य की विचित्र विडम्बना है कि उसके जीवित रहते हुए उसका पति उदयन विवाह को उद्यत है। वह भी उसकी उपस्थिति में। यही नहीं, दोनों के लिए वरमाला भी गूंथने का कार्य उसे ही सौंपा गया है। पत्नी से पति के हृदय में दूसरी की उपस्थिति सह्य नहीं होती, वह पूर्ण प्रणय चाहती है लेकिन वासवदत्ता को ही उसे सहना है। वह कुछ भी नहीं कह सकती। न व विलाप कर सकती है, न ही अपने भाग्य को कोस सकती है, विधाता की लीला भी विचित्र है।

चेटी– आम् दृष्टो भर्तृदारिकायाः स्नेहेनास्माकं कौतूहलेन च।

वासवदत्ता– कीदृशो जामाता।

चेटी– आर्ये भणामि तावद्, नेदृशो दृष्टपूर्वः।

वासवदत्ता– हला! भण भण, किं दर्शनीयः।

चेटी– शक्यं भणितु शरचापहीनः कामदेव इति।

(अनुवाद)– चेटी– हाँ राजकुमारी के स्नेह से तथा अपने कौतूहल के कारण देखा है।

वासवदत्ता– कैसा है?

चेटी– आर्ये! बस इतना ही कहती हूँ, पहले ऐसा कभी नहीं देखा।

वासवदत्ता– कहा! कहो! क्या वे देखने योग्य (सुन्दर) है?

चेटी– बस, धनुष–बाण–रहित कामदेव ही हैं, ऐसा कहा जा सकता है।

(विशेष)– कवि ने यहाँ वासवदत्ता की मानसिक दशा का यथार्थ चित्रण किया है। वह उदयन के द्वारा अपनी दूसरी पत्नी ग्रहण किये जाने से शोकाकुल है, परन्तु दुःखी होकर भी भाग्य को धिक्कारती हुई कहती हे– ::अहो अकरूणाःखल्वीश्वराः'' अर्थात् 'ईश्वर निश्चय ही निर्दयी है।' उच्च कुल की स्त्रियाँ विपत्ति आने पर अपने भाग्य को ही दोष देती है। पति को परमेश्वर मानकर दोषी होने पर भी उसे दोष नहीं देती। अहो अकरूणाः खल्वीश्वराः मुहावरा है। ऐसे मुहावरों के प्रयोग में भास निपुण है।

वासवदत्ता– भवत्वेतावद्।

चेटी– किंनिमित्तं वारयसि।

वासवदत्ता– अयुक्तं परपुरूषसंकीर्तनं श्रोतुम्।

चेटी– तेन ही गुम्फत्वार्या शीघ्रम।

वासवदत्ता– अयं गुम्फामि। आनय तावत्।

चेटी– गह्लत्वार्या।

वासवदत्ता– इदं तावदौषधं किं नाम।

चेटी– अविधावकरणं नाम।

वासवदत्ता– इदं बहुशो गुम्फितव्यं मम च पद्मावत्याश्च इदं तावदौषधं किं नाम।

चेटी– सपत्नीमर्दनं नाम।

(अनुवाद)– वासवदत्ता– अच्छा बस करो।

चेटी– (आप मुझे) क्यों रोकती हैं?

वासवदत्ता– पर पुरूष की प्रशंसा अनुचित है।

चेटी– तो फिर आर्या शीघ्र गूंथे।

वासवदत्ता– यह गूंथती हूँ ला तो।

चेटी– लो आर्या।

वासवदत्ता– (फूलों को हटाकर देखती है) यह कौनसी ओषधि है?

चेटी–वैधव्य निवारण की।

वासवदत्ता – (मन में) मेरे लिए तथा पद्मावती के लिए यह बहुत सी गूंथनी चाहिए। (प्रकट में) दूसरी ओर इशारा करके और यह औषधि क्या है?

चेटी– सौत का तिरस्कार करने वाली (मर्दन करने वाली)।

(विशेष)– वासवदत्ता का जन्म ऊँचे कुल में हुआ है अतः वह परपुरूष की सुन्दरता का बखान करने से रोकती है।

वासवदत्ता– इदं न गुम्फितव्यम्

चेटी–कस्मात्

वासवदत्ता– उपरता तस्य भार्या, तन्निष्प्रयोजनमिति।

(प्रविश्यापरा)

चेटी– त्वरतां त्वरतामार्या। एष जामाता, अविधवाभिरभ्यन्तरचतुःशालं प्रवेश्यते।

(अनुवाद)– वासवदत्ता– इसे नहीं गूंथना चाहिए।

चेटी– किस कारण से?

वासवदत्ता– उस (राजा) की पत्नी की मर चुकी हैं, अतः यह (गूंथना) व्यर्थ है।

(दूसरी प्रवेश करके)

चेटी– आर्या जल्दी करो! जल्दी करो! ये दामाद जी सुहागिनी स्त्रियों द्वारा चौशाले में प्रवेश कराये जा रहे हैं।

(विशेष) – अविधवाओं के साथ प्रवेश की सूचना से प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में विवाहादि मंगल कार्यों से विधवाओं को दूर रखा जाता था।

वासवदत्ता– अयि! वदामि गृहाणैतत्।

चेटी– शोभनम्। आर्ये! गच्छामि तावदहम्।

(उभे निष्क्रान्ते)

वासवदत्ता– गतैषा। अहो अत्याहितम्। आर्यपुत्रोऽपि नाम परकीयः संवृत्तः। अपि तावद् शय्यायां मम दुःखं विनोदयामि, यदि निद्रां लभे।

(निष्क्रान्ता)

इति तृतीयोअङ्क

(अनुवाद) – अरे कहती हूँ, इसे लो।

चेटी– अति सुन्दर, तो आर्ये! मैं जाती हूँ।

(दोनों निकल जाती हैं)

वासवदत्ता– यह चली गयी। ओह! यह बहुत बुरा हुआ। आर्यपुत्र भी पराये हो गये। ओह् मैं भी शय्या पर यदि नींद आ जाये तो अपने दुख को हल्का करूंगी।

(निकल जाती है)

तृतीय अंक समाप्त हुआ

(विशेष)– इस सम्पूर्ण अंक के संवाद सजीव व सरल हैं। कवि ने बीच बीच में मुहावरों का प्रयोग कर भाषा की सुन्दरता को और बढ़ा दिया है?नारी जाति के सहज स्वभाव इच्छा और रूचि को कवि ने सुन्दर ढंग से चित्रित किया है? विवाह जैसे मंगलकार्यों में केवल सुहागिन नारियाँ सम्मिलित होती हैं। यह अन्तिम पंक्तियों से प्रतीत होता है यह प्रथा आज भी प्रचलित है।

5.3 चतुर्थोअङ्कः

चतुर्थ अंक के महत्त्वपूर्ण श्लोको का संदर्भ, अनुवाद, वैशिष्ट्य, व्याकरणिक

टिप्पणी

कामेनोज्जयिनीं गते मयि तदाकामप्यवस्थां गते
दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पंचेषवः पातिताः।
तैरद्यापि सशल्यमेव हृदयं भूयश्च विद्वा वयं
पंचेषुर्मदना यदा कथमयं षष्ठः शरः पातितः।।1।।

अन्वय :– तदा उज्जयिनीं गते अवन्तिराजतनयां स्वैरं दृष्टवा काम् अपि अवस्थां गते मयि कामेन पंच इषवः पातिताः अद्य अपि हृदयं तैः सशल्यं एव (वर्तते), भूयः च वयम् विद्वाः यदा मदन् पंचेषुः (तर्हि) षष्ठः अयं शरः पातितः।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक कविता कामिनी के हास महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में राजा उदयन वासवदत्ता के जीवित होने का समाचार सुनकर व्यथित हो उठता है तथा वह अपने मित्र वसन्तक से प्रमद वन की रमणीयता वर्णन करते हुए कहता है कि–

अनुवाद – उस समय उज्जयिनी जाने पर अवन्ति राज पुत्री वासवदत्ता की मन भर कर देखने से अनिर्वचनीय (अवर्णनीय) दशा को प्राप्त हुए मुझ पर कामदेव ने पाँचों बाण गिरा दिये उनके द्वारा आज भी मेरा हृदय ब्रण (घाव) युक्त ही है फिर भी हम पुनः बींध दिये गये हैं। जब कामदेव के पास पाँच ही बाण हैं तो यह छठवाँ बाण किसने कैसे चलाया है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

(1) गते त्र गम्+क्त सप्तमी एकवचन
(2) सशल्यम् – श्शल्यै सहितम् (तुल्ययांग बहुब्रीहि)
(3) विद्धा – विध्+क्त।
(4) दृष्टवा – दृश्+क्त्वा
(5) पञ्चेषु – पञ्च इषवः यस्य सः (बहुब्रीहि)

(6) पातितः – पत्+णिच्+क्त।

(6) कामेनोज्जयिर्नाम् – कामेन+उज्जयिनीम्– गुणसन्धि

(7) कामप्यवस्थाम् – काम्+अपि+अवस्थाम् (यण सन्धि)

(8) तैरद्यापि – तैः+अद्यापि (विसर्ग सन्धि)

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में अनुप्रास अलंकार है– अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।

इस श्लोक में शार्दूल विक्रीडित छन्द है जिसका लक्षण है– सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्री डितम्।

प्रस्तुत श्लोक में वासवदत्ता के प्रति उदयन का उत्कट प्रेम प्रदर्शित किया गया है उदयन कामदेव के बाणों से घायल है। कवि परम्परा में अनुराग, आसक्ति, काम का देवता कामदेव को स्वीकार किया गया है। कामदेव के पाँच बाण निम्न प्रकार हैं–

अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः।।

ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां च,
सप्तर्षिवंशकुटिलां च विवर्तनेषु।
निर्मुच्यमानभुजगोदरनिर्मलस्य,
सीमामिवाम्बरतलस्य विभज्यमानाम्।।2।।

अन्वय :– ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां च विवर्त्तनेषु सप्तर्षिवंशकुटिलां निर्मुच्यमानभुजगोदरनिर्मलस्य अम्बरतलस्य विभज्यमानां सीमाम् इव (एनां सारसपंक्तिं पश्यामि)

अनुवाद – सीधी और फैली हुई बिखरी हुई झुकी हुई तथा उठी हुई और मुड़ने में सप्त ऋषि तारों जैसी टेढ़ी, कैंचुली छोड़े हुए साँप के पेट के समान रंगवाली आकाश तल की विभाजक रेखा के समान मैं इस सारस पंक्ति को देखता हूँ। यह सारसों की पंक्ति कैंचुली छोड़े हुए साँप के पेट के रंग वाले आकाश की विभाजक सीमा के समान दिखाई दे रही है। कहने का आशय यह है कि अति मनोरम दिखाई दे रही है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

(1) विवर्तनेषु – वि+वृत्+ल्युट सप्तमी बहुवचन

(2) निर्मुच्यमानाम् – निर्+मुञ्च्+कर्मणि लट्+शानच्।

(3) विभज्यमानाम् – वि+भज्+लट्+शानच्+टाप्।

सीमामिवाम्बर तलस्य – सीमाम्+इव+अम्बर तलस्य दीर्घ सन्धि

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में अनुप्रास, उपमा तथा स्वभावोक्ति अलंकार है। अनुप्रास का लक्षण है– वर्णसाम्यमनुप्रासः।

इस श्लोक में वस ततिलका छन्द है– उक्तावसंत तिलका तभजा जगौगः।

प्रस्तुत अवतरण में वर्णसाम्य से अनुप्रास, इव उपमा वाचक शब्द द्वारा उपमालंकार है। स्वभाव वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलंकार है।

कैंचुली रहित सर्पोदर का उपमान रूप में प्रदर्शन अनुचित तथा अनावश्यक प्रतीत होता है। सारस पंक्ति को आकाश की विभाजक रेखा कहने में उत्प्रेक्षा है। ज्योतिष शास्त्र में तारों की स्थिति देखी

जाती है। साधारणतया सभी लोग आकाश में स्थित सप्तर्षिमण्डल से परिचित हैं। सात ऋषियों का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

मरीचिरंगिरा अत्रि पुलस्त्यः पुलह ऋतुः।
वशिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयश्चित्रशिखण्डिनः।।
मधुमदकला मधुकरा मदनार्त्ताभिः प्रियाभिरूपगूढ़ा।
पादन्यासविषण्णा वयमिव कान्तावियुक्ताः स्युः।। 3।।

अन्वय :– मधुमदकलाः मदनार्त्ताभिः प्रियाभिः उपगूढ़ाः मधुकराः पादन्यासविषण्णाः वयम् इव कान्तावियुक्ताः स्मः।

अनुवाद – पराग के नशे से अस्पष्ट मधुर स्वर वाले कामपीडित प्रियाओं के द्वारा आलंगित भौंरे, लता मण्डप में जाने से अथवा पैर रखने से हमारे समान ही अपनी पत्नियों से वियुक्त हो जायेंगे अर्थात् प्रिया रहित हो जायेंगे।

व्याकरणिक टिप्पणी–
(मधुमदकला– मधुनःमदःमधुमदः (षष्ठी तत्पुरुष)
तेन मधुमदेन कलाः (तृ0 तत्पुरुष)
उपगूढाः – उप+गुह्+क्त (प्र0वि0 बहुव0)
विषण्णाः – वि+सद्+क्त (प्र0वि0 बहुवचन)
कान्ता – कम्+क्त+टाप्
विरहिताः – वि+रह्+क्त

प्रस्तुत श्लोक में अनुप्रास तथा स्वाभावोक्ति अलंकार है। इस श्लोक में अनुष्टप छन्द है। इस पद्य में विप्रलम्भ श्रृंगार तथा माधुर्य गुण है।

पादाक्रान्तानि पुष्पाणि सोष्म चेदं शिलातलम्।
नूनं काचिदिहासीना मां दृष्ट्वा सहसा गता।।4।।

अन्वय :– पुष्पाणि पादाक्रान्तानि इदं शिलातलं च सोष्मं। नूनं काचित् इह आसीना मां दृष्ट्वा सहसा गता।

अनुवाद – पुष्प पैरों से कुचले हुए हैं तथा यह चट्टान भी गरम है अतः निश्चय ही यहाँ बैठी हुई कोई मुझे देखकर तुरन्त चली गई है।

व्याकरणिक टिप्पणी –
(1) पादाक्रान्तानि – पादाभ्याम् आक्रान्तानि पञ्चमी तत्पुरुष
व्युत्पत्ति – दृष्टवा – दृश्+क्त्वा
गतः – गम्+क्त+टाप्

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुप्रास तथा विभावना अलंकार है। इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः
वासवदत्ताबद्धं न तु तावन्मे मनो हरति।।5।।

अन्वय :– यद्यपि रूप शीलमाधुर्यैः पद्मावती मम बहुमता तथापि (सा) वासवदत्ताबद्धं मे मनः न तु तावत् हरति।

सदर्भ – प्रस्तुत श्लोक कविता कामिनी के हासः महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग – इस श्लोक में राजा उदयन पद्मावती के रूप शील तथा वाणीसे पद्मावती के प्रति आकृष्ट है किन्तु उसका मन वासवदत्ता के प्रति ही आसक्त है। इस प्रसंग में महाकवि भास कहते हैं कि –

अनुवाद – यद्यपि रानी पद्मावती अपने रूप, आचरण तथा वाणी की मधुरता से मेरे मन को अत्यधिक प्रिय है फिर भी वह वासवदत्ता के प्रति आसक्त मेरे मन को नहीं हर पाती है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

(1) रूप शीलमाधुर्यै – रूपं च शीलं च माधुर्यं चेति रूप
शील माधुर्याणि तैः – द्वन्द्वसमास
तावन्मे= तावत्+मे
(2) वासवदत्ताबद्धम – वासवदत्तायाम् बद्धम (सप्तमी तत्पुरुष)
(3) मता= मन्+क्त्+टाप्
(4) बद्धम्= बन्ध्+क्त
(5) यद्यपि= यदि+अपि– यण सन्धि

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में आर्या छन्द है। वर्ण साम्य से अनुप्रस अलंकार है। बहुमता के कारण रूप, शील, माधुर्यादि है। तथा कारण– कार्यभाव रूप काव्यलिंग अलंकार है। रूपशील आदि रहते हुए भी वासवदत्ता से उदयन का मन नहीं हट रहा है। अतः विशेषोक्ति अलंकार है। विशेषोक्ति लक्षण इसप्रकार है– सति हेतौफला भावे विशेषोक्ति तथा द्विधा। अर्थात् जहाँ कारण रहते हुए भी कार्य न हो वहाँ विशेषोक्ति अलंकार है।

अनेन परिहासेन व्याक्षिप्तं मे मनस्त्वया।
ततो वाणी तथैवेयं पूर्वाभ्यासेन निस्सृता।।6।।

अन्वय :– त्वया अनेन परिहासेन मे मनः व्याक्षिप्तम्। ततः इयम् वाणी पूर्वाभ्यासेन, तथा एवं निस्सृता।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत स्वप्न वासवदत्तम् के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग – इस श्लोक में वसन्तक कहता है कि वासवदत्ता तो बहुत समय पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गई है तब राजा उदयन दुःख से कहता है कि देवी वासवदत्ता तो मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है मित्र –

अनुवाद – हँसी–हँसी में ही विदूषक राजा को वासवदत्ता का स्मरण दिला देता है जिससे राजा पूर्व प्रिया के वियोग से दुःखी होकर विदूषक से कहता है– हे मित्र ! तुमने इस परिहास वचन से मेरा मन व्याकुल कर दिया। अतः पहले के अभ्यास से ही यह मेरी वाणी पूर्ववत निकल गयी।

व्याकरणिक टिप्पणी –

(1) पूर्वाभ्यासेन – पूर्वश्चासौ अभ्यासः तेन (कर्मधारय)
व्याक्षिप्तम्– वि+आङ्+क्षिप्+क्त प्रत्यय
निस्सृता – नि+सृ+क्त+टाप्
परिहास– परि+हस्+घञ्

विशेष — इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द हैं वर्णसाम्य होने से अनुप्रास, वासवदत्ता की स्मृति होने से स्मरण अलंकार है। इस श्लोक में वियोग, श्रृंगार, माधुर्य गुण तथा कैशिकी वृत्ति है। प्रस्तुत अंश भाव की उदात्तता के कारण मनोहर है। प्रिय का स्मरण मन को मथने वाला होता है। उदयन को भी वासवदत्ता का स्मरण हो आया है। अतः वर्णन की स्वाभाविकता रसोत्पत्ति दशा में साधारणीकरण के लिए सहकारी बन जाती है। इसी को उत्तम काव्य कहा जाता है।

दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः
स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।
यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं
प्राप्तानृण्या याति बुद्धिः प्रसादम्।।7।।

अन्वय :– बद्धमूलः अनुरागः त्यक्तुं दुःखम्, स्मृत्वा स्मृत्वा दुःखं नवत्वं याति। तु यात्रा एषा, यत् इह वाष्पं विमुच्य प्राप्तानृण्या बुद्धिः प्रसादं याति।

सन्दर्भ — प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अंक से समुधृत है।

प्रसंग — इस श्लोक में वासवदत्ता के वियोग में शोकाकुल राजा उदयन विदूषक के सामने अपनी दशा को प्रकट करते हुए कहता है कि हे मित्र!

अनुवाद — तुम मेरी दशा को नहीं जानते हो क्योंकि जिस प्रेम की जड़ें गहराई तक पहुँच गयी हों। ऐसे प्रेम को छोड़ना दुःखपूर्ण है अर्थात् अत्यधिक कठिन है। उसे कभी छोड़ा नहीं जा सकता। उसे जैसे जैसे स्मरण किया जाता है वैसे वैसे ही वह और नवीन होता जाता है, परन्तु लोकरीति यही है कि व्यक्ति प्रिय की स्मृति में आँसू बहाकर अथवा आँसू रूपी कार्य से उऋण होकर स्वच्छ बुद्धि वाला हो जाता है।

व्याकरणिक टिप्पणी – समास
बद्धमूल – बद्धंमूलंयस्य सः (बहुब्रीहि)
आनृण्यम् – अविद्यमानं यस्य ऋणं स अनृणः।
अनृणस्य भावः आनृण्यम् – (नञ्, तत्पुरुष)
प्राप्तानृण्या – प्राप्ताम् आनृण्यंयया सा (बहुब्रीहि)
व्युत्पत्ति – आनृण्यम् – आनृण+ष्यञ् प्रत्यय
त्यक्तुम् – त्यज्+तुमुन्
प्रसादम् – प्र+सद्+घञ्
अनुराग – अनु+रञ्ज्+घञ्
स्मृत्वा – स्मृ+क्त्वा
नवत्वम् – नव+त्व
बुद्धि – बुध्+क्तिन्।

विशेष – इस श्लोक में शालिनी छन्द है। वर्णसाम्य होने से अनुप्रास अलंकार है, रूपक तथा कारण कार्यभाव से काव्यालिंग अलंकार भी है। विप्रलम्भ श्रृंगार है। माधुर्य गुण, तथा कैशिकी वृत्ति है।

शरच्छशांक–गौरेण वाताविद्धेन भामिनि।
काशपुष्प–लवेनेदं साश्रुपातं मुखं मम।।8।।

अन्वय :– हे भामिनि! शरच्छशांकगौरेण, वाताविद्धेन काशपुष्पलवेन इदम् मम मुखम् साश्रुपातम्।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक नाटककार भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग – इस श्लोक में आर्य पुत्र उदयन पद्मावती को बैठने की आज्ञा देते हैं। पद्मावती आर्य पुत्र की आज्ञा से बैठ जाती है तब उदयन कहते हैं कि हे पद्मावती

अनुवाद – हे सुन्दरी ! हवा द्वारा उडाये गये शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान वर्ण वाले कांस पुष्प के पराग आँख में गिर जाने से यह मेरा मुख आँसुओं से युक्त हो गया है।

व्याकरणिक टिप्पणी–

शरच्छ शांकगौरेण – शशःअंकोयस्यसः शशांकः (बहुब्रीहि समास)
शरदि शशांक – सप्तमी तत्पुरुष स इव गौरः तेन (उपमित कर्मधारय समास)
वाताविद्धेन – वातेन विद्धम् तेन (तृतीया तत्पुरुष)
काशपुष्पवलेन – काशः पुष्पस्य लावः तेन (तृ0त0)
साश्रुपातम् – अश्रु पातेन सहितम् इति (अव्ययीभाव)
विशेष – इस पद्य में काव्यलिंग अलंकार तथा अनुष्टुप छन्द है।

इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत।
कामं धीरस्वाभावेयं स्त्रीस्वभावस्तु कातरः।।9।।

अन्वय :– च इयं नवोद्वाहा बाला (पद्मावती), सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत्। इयं कामं धीरस्वभावा, तु स्त्रीस्वभावः कातरः।

संदर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि भासोहासः कृत स्वप्नवासवदत्तम् के चतुर्थ अंक से समुधृत है।

प्रसंग – इस श्लोक में राजा उदयन पद्मावती को सम्बोधित करते हुए अश्रुपात का कारण स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि –

अनुवाद – और यह नव युवती, नव विवाहिता बाला सत्य को सुनकर पीड़ा का अनुभव करेगी, भले ही यह धैर्यशालिनी है परन्तु स्त्री स्वभाव तो भीरु (कायर) होता है

व्याकरणिक टिप्पणी–

(1) नवोद्वाहा – नव उद्वाहःयस्या सा (बहुब्रीहि)
नव+उद्वाहा – गुण सन्धि
(2) धीरस्वभावा – धीरः स्वभावोयस्यासाः (बहुब्रीहि)
(3) स्त्रीस्वभावः – स्त्रीणां स्वभावः (षष्ठी तत्पुरुष)
(4) कातरा – कु+तृ+अच्+ताप्
(5) श्रुत्वा – श्रु+क्त्वा।

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में स्वभावोक्ति तथा परिकर अलंकार है तथा अनुष्टुप छन्द है।

स्त्रियाँ स्वभाव से ही भीरु स्वभाव वाली होती है। इस कथन में शाश्वत अभिव्यञ्जना होने से सूक्ति वचन है। इसके द्वारा पद्मावती का स्वभवतः दुःखी होना सूचित होता है। आचार्य भवभूति भी स्त्रियों को कोमल स्वभाव वाला सिद्ध करते हैं–''पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं भवति''

गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।
कर्त्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।।10।।

अन्वयः– गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः कर्त्तारः सुलभाः लोके, विज्ञातारः तु दुर्लभाः (सन्ति)

सन्दर्भ –प्रस्तुत श्लोक महाकवि भासोहासः कृत स्वप्नवासवदत्तमृ के चतुर्थ अंक का अन्तिम श्लोक है।

सन्दर्भ – इस श्लोक में राजा उदयन लोक में सत्कार से ही सम्मानित होकर प्रेम को उत्पन्न करता है।

अनुवाद – निरन्तर उपकार आदि गुणों के अथवा सत्कार करने वाले महापुरुष तो संसार में सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं परन्तु उन सत्कार आदि को जानने वाले कठिनाई से प्राप्त होने योग्य हैं अर्थात् अत्यधिक कम संख्या में है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

कर्तार – कृ+तृच्

सुलभ – सु+लभ्+खल्+जस्।

दुर्लभा– दुस+लभ्+खल्+जस्।

कल्पः – क्लृप्+घञ्।

विशेष – इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलंकार तथा अनुष्टुप छन्द विद्यमान हैं।

यह पद्य सुभाषित श्लोक है। वस्तुतः उदारता, करुणा, सहिष्णुता, परोपकार, दया, दान आदि प्रशंसनीय कार्यों को करने वाले, किये हुए उपकार को मानने वाले प्रकाशक जन बहुत ही अल्प संख्या में हैं।

(निष्क्रान्ताः सर्वे)
(इति चतुर्थोऽङ्कः)

5.4 बोध प्रश्न

5.4.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वासवदत्ता ने पद्मावती के सुहाग की माला में कौनसी औषधि नहीं गूंथी?

(क) सौभाग्यवती (ख) अपराजिता
(ग) सपत्नी मर्दन (घ) हरसिंगार ( )

2. 'स्त्रीस्वभावस्तु कातरः' यह कथन किसका है?

(क) उदयन का (ख) विदूषक का
(ग) यौगन्धरायण का (घ) दर्शक का ( )

3. राजकुमारी पद्मावती के सिर में दर्द होने के समय उसकी शय्या कहां लगाई गई थी?

(क) प्रमदवन में (ख) समुद्रगृह में
(ग) माधवी कुंज में (घ) बंधुजीव कुंज में ( )

4. समुद्रगृह की शय्या पर वासवदत्ता को पद्मावती के स्थान पर कौन मिला?

(क) विदूषक (ख) कुंजरिका
(ग) दासी (घ) राजा उदयन ( )

5. 'स्वप्नवासवदत्तम' नाटक का नायक कौन है?

(क) महाराज दर्शक (ख) महाराज उदयन
(ग) महाराजा महासेन (घ) महाराज प्रद्योत ( )

6. उदयन कहाँ का शासक था?

(क) वत्सदेश का (ख) अवंतिका का
(ग) मगध का (घ) काम्पिल्य देश का ( )

5.4.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न—

1. पद्मावती की दासी ने वासवदत्ता को क्या ढूंढने को व क्यों कहा?

2. ''अकरूणाः खल्वीश्वरः।'' वासवदत्ता ने ऐसा क्यो कहा?

3. वासवदत्ता ने सुहाग की माला में 'सपत्नी मर्दन' मानक औषधि दासी से कहकर क्या नहीं गूंथी

4. प्रमदवन में बैठकर पद्मावती व वासवदत्ता के विषय में विदूषक (वसन्तक) ने राजा उदयन से क्या प्रश्न किया?

5. विदूषक के वासवदत्ता व पद्मावती संबंधी प्रश्न के उत्तर में उदयन ने क्या कहा?

6. 'स्त्री स्वभावस्तु कातरः।' यह कथन किसका है?

5.4.3 निबन्धात्मक प्रश्न

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का नामकरण स्वप्नवासवदत्तम् क्यों रखा गया है। प्रमाण सहित सिद्ध कीजिये?

2. भास की नाट्यकला एवं काव्यगत विशेषतायें बतलाइयें?

3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की समीक्षा कीजिये?

4. स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत कीजिये ?

5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक कौन है?उदयन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये ?

6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर वासवदत्ता का चरित्र चित्रण कीजिये ?

7. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर पद्मावती की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

8. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर यौगन्धरायण की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

9. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के आधार पर वसन्तक का चरित्र चित्रण कीजिये?

10. ‘स्वप्नवासवदत्तम्’ के कर्ता भास का समय निर्धारण कीजिये?

11. भास की रचनाओं का नामोल्लेख करते हुए स्वप्नवासवदत्तम् की सार्थकता सिद्ध कीजिये?

5.5 उपयोगी पुस्तकें

1. स्वप्नवासवदत्तम्– डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2

2. स्वप्नवासवदत्तम् व्याख्यार– डॉ0 जगन्नारायण पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।

3. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– डॉ0 रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।

4. स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– प्रो0 सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर

5. स्वप्नवासवदत्तम्– डॉ0 रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन जयपुर।

6. स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– श्रीकृष्ण ओझा– अभिषेक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

7. भासनाटकचक्र– संस्कृत रामजी उपाध्याय

8. स्वप्नवासदत्तम्– तारणीश झा

9. स्वप्नवासवदत्तम्– जयपाल विद्यालंकार

10. स्वप्नवासवदत्तम्– जगदीश प्रसाद पाण्डे

11. भास नाटकचक्र– संस्कृत हिन्दी व्याख्या, सुधाकर मालवीय

12. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा– पाण्डे एवं व्यास

13. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय

14. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी

15. कवि दर्शन– भोलाशंकर व्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग) सपत्नी मर्दन
2. (क) उदयन का
3. (ख) समुद्रगृह में
4. (घ) राजा उदयन
5. (ख) महाराज उदयन
6. (क) वत्सदेश का

————————

इकाई –6

स्वप्नवासवदत्तम (भास)

6.0 उद्‌देश्य

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के स्नातक (प्रथम वर्ष) संस्कृत विषय के प्रथम प्रश्नपत्र के पाठ्‌यक्रम की इकाई संख्या 6 से संबंधित स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत) के पंचम तथा षष्ठ अंक के महत्त्वपूर्ण श्लोकों का संदर्भ, प्रसंग सहित अनुवाद एवं नाटकीय वैशिष्ट्‌य को प्रस्तुत किया गया है तथा साथ ही व्याकरणिक टिप्पणी के अंतर्गत सन्धि–समास–प्रत्यय–लकार– विभक्ति–वचन इत्यादि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थीगण –

1. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम तथा षष्ठ अंक के श्लोकों का संदर्भ–प्रसंग सहित अनुवाद कर सकेंगे।
2. पंचम तथा षष्ठ अंक के श्लोकों का नाटकीय वैशिष्ट्‌य प्रतिपादित कर सकेंगे।
3. पंचम तथा षष्ठ के श्लोकों के अंतर्गत विद्यमान सन्धि, समास, प्रत्यय, लकार, वचन, विभक्ति इत्यादि को सहजता से हृदयंगम कर सकेंगे।
4. पंचम तथा षष्ठ अंक के श्लोकों में निहित गूढ़ रहस्यों तथा विशेष सन्देश को बता सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य प्रथम वर्ष के पाठ्‌यक्रम की इकाई संख्या 6 के अंतर्गत भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पंचम व षष्ठ अंकों की विषय–वस्तु, श्लोकान्वय, संदर्भ, प्रसंग, अनुवाद, व्याकरणिक टिप्पणी तथा नाटकीय वैशिष्ट्‌य का परिचय प्राप्त कर रहे हैं।

इस इकाई के पंचम व षष्ठ अंक के श्लोकों के अनुवाद के साथ–साथ उनका विशेष छन्द, अलंकार, गुण, रस, वृत्ति, रीति इत्यादि का परिचय भी प्राप्त कर रहे हैं।

6.2 पंचमोऽङ्क

श्लाघ्यामवन्तिनृपतेः सदृशीं तनूजां,

कालक्रमेण पुनरागतदारभारः।

लावाणके हुतवहेन हृताङ्गयष्टिं

तां पद्मिनी हिमहतामिव चिन्तयामि।।1।।

अन्वयः– कालक्रमेण पुनरागतदारभारः, (अहम्) लावाणके हुतवहेन, हृताङ्गयष्टिं, श्लाघ्यां अवन्तिनृपतेः सदृशीं तनूजां ताम् हिमहताम् पद्मिनीम् इव चिन्तयामि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक कविता कामिनीहासः महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् के पञ्चम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – इस श्लोक में विदूषक महारानी पद्मावती की शिरपीड़ा की सूचना महाराज उदयन को देता है तत्पश्चात् राजा प्रवेश करता है।

अनुवाद – काल गति अथवा भाग्य के फेर से जिस पर पुनः पत्नी का भार आ गया है, ऐसा में उदयन लावाणक ग्राम में आग से जली हुयी उस कृशांगी अर्थात् पतले अंगों वाली, सर्वथा प्रशंसा करने योग्य, अवन्तिराज के गुणों के समान गुण वाली बरफ से मारी गयी कमलिनी के समान उनकी पुत्री वासवदत्ता के बारे में सोचता हूँ। अर्थात् मैं पूर्वोक्त गुणों वाली वासवदत्ता का स्मरण करता हूँ।

व्याकरणिक टिप्पणी –

(1) पुनरागत – पुनः+आगतः ।

दारभारः – दाराया भारः (षष्ठी तत्पुरुष)

पुनरागतदारभारः – पुनरागत दारायाभारःयस्मिन् सः – बहुब्रीहि समास।

हृतांगयष्टिम्– हृतांगयष्टिःयस्याताम् (बहुब्रीहि)

हिमहताम् – हिमेनहताम्

श्लाघ्याम् – श्लाघ्+ण्यत्+टाप् (स्त्री)

कालक्रमेण – कालस्यक्रमेण (षष्ठी तत्पुरुष)

हृता – हृ+क्त+टाप्।

हताम्– हन्+क्त+टाप्।

विशेष– प्रस्तुत पद्य में वसन्ततिलका छन्द है, पदों तथा शब्दों का साभिप्राय प्रयोग होने से परिकर अलंकार है। कारण होते हुए भी कार्य न होने से विशेषोक्ति अलंकार है। वासवदत्ता की तुषाराहत कमलिनी से उपमा देने के कारण पूर्वोपमा अलंकार है। वर्णसाम्य से अनुप्रास है। विप्रलम्भ श्रृंगार रस है, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। पुनरागतदारभार – इस वाक्य से यह सूचित होता है कि उदयन की अभिलाषा पद्मावती से विवाह करने की नहीं थी अपितु उनके मन्त्रियों ने दबाव डालकर ऐसा करा दिया था इसी कारण वह इसे भार समझता है। वह अभी तक अपनी पूर्व प्रियतमा वासवदत्ता को भूला नहीं सका है।

रूपश्रिया समुदितां गुणतश्च युक्तां,

लब्ध्वा प्रियां मम तु मन्द इवाद्य शोकः।

पूर्वाभिघातसरुजोऽप्युनुभूतदुःखः,

पद्मावतीमपि तथैव समर्थयामि।।2।।

अन्वयः– अद्य रूपश्रिया समुदिताम्, गुणतश्च युक्ताम्। प्रियाम् तु लब्ध्वा मम शोकः मन्द इव। अनुभूतदुःखः अपि पूर्वाभिघातसरुजः (अहं)। पद्मावतीम् अपि तथा एवं समर्थयामि।

संदर्भ – प्रस्तुत श्लोक नाटककार भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के पञ्चम अंक से समुधृत है।

प्रसंग– राजा उदयन पद्मावती की शिर पीड़ा का समाचार विदूषक और पद्मिनिका द्वारा प्राप्त करता है तथा कहता है कि बडे कष्ट की बात है–

अनुवाद – उत्तम सौन्दर्य से युक्त तथा गुणवान प्रिया पद्मावती को पाकर आज मेरा शोक मन्द सा हो गया था परन्तु अचानक इस समाचार को सुनकर पूर्वकालीन वासवदत्ता की मृत्यु रूपी आघात से पीड़ित, दुःख का अनुभव करने वाला मैं (उदयन) पद्मावती को भी (तुषार से आहत कमलिनी के समान वासवदत्ता के तुल्य) उसी भाँति पीडित मान रहा हूँ।

व्याकरणिक टिप्पणी –

पूर्वाभिघातसरूजः पूर्वःयः

अभिघातः स पूर्वाभिघातः तेन पूर्वाभिबातेन रुजा सहितः – सरुजः (तुल्ययोग बहुब्रीहि)

पूर्वाभिघातेन सरुजः (तृतीया तत्पुरुष)

अनुभूत दुःखः – अनुभूतं दुःखं येन सः (बहुब्रीहि)

लब्धवा– लभ्+क्त्वा।

समुदिताम् – सम्+उत्+इ+क्त कर्मणि।

युक्ताम् – युज्+क्त+टाप्

अनुभूत – अनु+भू+क्त।

विशेष – इस पद्य में वसन्ततिलका छन्द है। वर्णसाम्य से अनुप्रास, दुःख स्मरण करने से स्मरण अलंकार तथा पदार्थ हेतुक काव्यलिंग अलंकार है। विप्रलम्भ श्रृंगार रस, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

इस पद्य में नाटककार ने वियोग श्रृंगार का प्रशंसनीय विनियोग किया है। चूंकि वासवदत्ता भी गुप्त वेश से वही है। अतः राजा का उसको स्मरण करना नितान्त उचित है। यहाँ पर राजा की अन्तस्थ भाग्यहीनता का किंचित् स्पर्श हुआ है।

ऋज्वायतां हि मुखतोरणलोलमालां

भ्रष्टां क्षितौ त्वमवगच्छसि मूर्ख! सर्पम्।

मन्दानिलेन निशि या परिवर्तमाना,

किंचित् करोति भुजगस्य विचेष्टितानि।।3।।

अन्वयः– हि मूर्खः! ऋज्वायतां क्षितौ भ्रष्टां मुखतोरणलोलमालां त्वं सर्पमवगच्छसि। या निशि मन्दानिलेन किंचित परिवर्तमाना भुजगस्य विचेष्टितानि केरोति।

सन्दर्भ– प्रस्तुत श्लोक भासोहासः कृत स्वप्नवासवदत्तम नाटक के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – इस श्लोक में राजा उदयन विदूषक के सर्पज्ञान का उपहास करते हुए कहता है कि–

अनुवाद – हे मूर्ख ! सीधी और लम्बी, पृथ्वी पर गिरी हुई मुख्यद्वार की चञ्चल माला को जो रात्रि में धीमी गति वाली वायु द्वारा हिलाई जाती हुई सांप के समान चेष्टा करती है, उसे तुम सर्प समझ रहे हो।

व्याकरणिक टिप्पणी– ऋज्वायताम् – ऋजुः चासौ आयता चताम् (कर्म) मुखतोरण – लोलमालाम् –मुखतोरणस्य लोलामाला इति ताम् भ्रष्टाम् – भ्रस्ज्+क्त+टाप् – क्षितौ– क्षि+क्तिन् (स.ए.ब.)। परिवर्तनमाना – परि+वृत+शानच्+टाप्।

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में अनुप्रास एवं स्वभावोक्ति अलंकार है। वर्ण साम्य होने से अनुप्रास अलंकार, एवं मुख्यद्वार पर लटकी हुई माला का होने पर स्वभावोक्ति अलंकार है। इसमें छन्द वसन्ततिलका है, जिसका लक्षण –''उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौगः।''

शय्या नावनता तथास्तृतसमा न व्याकुलप्रच्छदा,
न क्लिष्टं हि शिरोपधानममलं शीर्षाभिघातौषधैः।
रोगे दृष्टिविलोभनं जनयितुं शोभा न काचित् कृता,
प्राणी प्राप्य रुजा पुनर्न शयनं शीघ्रं स्वयं मुंचति।।4।।

अन्वयः– हि शय्या नावनता तथा आस्तृतसमा न व्याकुलप्रच्छदा, अमलं शिरोपधानम्, शीर्षाभिघातौषधैः न क्लिष्टम्। रोगे दृष्टि–विलोभनं जनयितुं शोभा न काचित् कृता, प्राणी रुजा प्राप्य पुनः शयनं शीघ्र स्वयं न मुंचति।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक भासोहासः कृत स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – इस श्लोक में राजा उदयन समुद्रगृह में पद्मावती के विश्राम करने का वर्णन करते हुए कहता है कि –

अनुवाद – यह शय्या किसी के बैठने से दबी नहीं है वैसी ही सममतल है और शय्या पर पड़ी चादर बिल्कुल भी सिकुडी नहीं है अर्थात् इस चादर में सलवटें भी नहीं पड़ी हैं शय्या पर तकिया भी न तो शिर पर रखने से कठोर ही हुआ है। वह बिल्कुल स्वच्छ है और न मन बहलाने के लिए किसी के द्वारा सुन्दर चित्र ही बनाये गये हैं। प्राणी रोगग्रस्त होकर शय्या को स्वयं नहीं छोड़ता है।

व्याकरणिक टिप्पणी–

आस्तृतसमा – आस्तृता चासौसमा (कर्मधारय)

व्याकुलप्रच्छदा – व्याकुलःप्रच्छदः यस्या सा (बहुब्रीहि)

अमलम् – अविद्यमानं मलंयस्य तत् (नञ् तत्पुरुष)

प्रच्छदः – प्र+च्छद्+णिच्+घञ

आस्तृत – आ+स्तृ+क्त

उपधानम् – उप+धा+ल्युट्

रूज् टाप्

जनयितुम् – जन्+णिच्+तुमुन्

प्राप्य – प्र+आप्+ल्यप्

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में वर्ण साम्य होने से अनुप्रास अलंकार है तथा शार्दूल विक्रीडितम् छन्द है।

स्मराम्यवन्त्याधिपतेः सुतायाः

प्रस्थानकाले स्वजनं स्मरन्त्याः

वाष्पं प्रवृत्तं नयनान्तलग्नं,

स्नेहान्ममैवोरसि पातयन्त्याः।।5।।

अन्वयः – प्रस्थानकाले स्नेहात् स्वजनं स्मरन्त्याः प्रवृत्तं नयनान्तलग्नं वाष्पं मम एव उरसि पातयन्त्याः अवन्त्याधिपतेः सुतायाः स्मरामि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्त्म् के पंचम अंक से समुधृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में वसन्तक राजा उदयन को उज्जयिनी की कथा सुनाता है तथा कहता है कि आपको यह कथा अच्छी नहीं लगती है तो दूसरी कहता हूँ।

अनुवाद– राजा उदयन विदूषक से कहते हैं कि हे मित्र ! यह कथा मुझे रुचिकर नहीं है, ऐसी बात नहीं है परन्तु उज्जयिनी से छुपकर मेरे साथ चलते समय प्रेम के कारण अपने बन्धु–बान्धवों का स्मरण करती हुई, आँखों से आये हुए आँसुओं को नेत्रों की कोरों से मेरे हृदय पर गिराती हुई अवन्ति राज प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का स्मरण करती हूँ। अर्थात् तुम्हारे द्वारा उज्जयिनी नाम लेने से मुझे वासवदत्ता का स्मरण हो आया है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

नयनान्तलग्नम् – नयनयोःअन्तौ नयनान्तौ (षष्ठ तत्पुरुष)

तर्योलग्नम् – (सप्तमी तत्पुरुष)

पातयन्त्या– पत्+णिच्+लट्+ शतृ (स्त्री) षष्ठी एकवचन

प्रवृत्तम् – प्र+वृत्+क्त

स्नेहान्ममैवेरसि – स्नेहात्+मम्+एव+उरसि।

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में स्मरण अलंकार है तथा उपजाति छन्द है। ध्वन्यात्मक होने के कारण यह श्लोक उत्तम काव्य का उदाहरण है।

बहुशोप्युपदेशेषु यया मामीक्षमाणया।

हस्तेन स्रस्तकोणेन कृतमाकाशवादितम्।।6।।

अन्वयः– बहुशः अपि उपदेशेषु माम् ईक्षमाणया यया स्रस्तकोणेन हस्तेन आकाशवादितं कृतम्।

अनुवाद – वीणा बजाने सिखाने के अवसरों में मुझको तन्मय होकर देखने वाली जिस वासवदत्ता के द्वारा हाथ से मिजराब गिर जाने के कारण अनेक बार शून्य में वीणा को बजाया गया। कहने का आशय यह है कि वह वासवदत्ता मुझमें अत्यधिक आसक्त थी।

व्याकरणिक टिप्पणी –

ईक्षमाणया– ईक्ष्+शानच्+टाप् (तृतीया एक व0)

स्रस्तकोणेन – स्रस्तःकोणःयस्मात् तेन।

कृतम् – कृ+क्त

बहुशोऽप्युपदेशेषु – बहुशः+अपि+उपदेशेषु।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में कवि द्वारा उदयन को वासवदत्ता का स्मरण कराकर अग्रिम कथानक के लिए भूमिका उपस्थित की है। यहाँ भी शब्दों द्वारा कवि ने सजीव चित्र अंकित किया है।

इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

निष्क्रामन् संभ्रमेणाहं द्वारपक्षेण ताडितः।

ततो व्यक्तं न जानामि भूतार्थोऽयं मनोरथः।।7।।

अन्वय :– सम्भ्रमेण निष्क्रामन् अहं द्वारपक्षेण ताड़ितः। ततः व्यक्तं न जानामि अयं मनोरथः भूतार्थः (वेति)

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य भास विरचित स्वप्न वासवदत्तम् के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – इस श्लोक में समुद्रगृह में वासवदत्ता द्वारा उदयन के कर स्पर्श का वर्णन किया गया है।

अनुवाद – शीघ्रता से निकलता हुआ मैं दरवाजे के एक किनारे से टकरा गया हूँ। इसी कारण यह वासवदत्ता का कर स्पर्श अथवा उसका आना वास्तविक है अथवा मन की इच्छा है। मैं स्पष्ट रूप से नहीं जानता हूँ। पूर्णतः निद्रा न खुलने के कारण मैं वास्तविक रूप में नहीं जान सका कि यह वासवदत्ता ही थी अथवा स्वप्न के कारण मेरे मन का मात्र मोह था।

व्याकरणिक टिप्पणी –

निष्क्रामन् – निस्+क्रम्+शतृ

भूतार्थः – भूतश्चासौ अर्थः (कर्मधारय समास)

सम्भ्रमेण – सम्+भ्रम्+घञ् (तृतीया एक व0)

ताडितः – ताड्+क्त।

प्रतिबुद्धः – प्रति+बुध्+क्त।

उपरता – उप्+रम्+क्त+ताप् ।

द्वारपक्षेण – द्वारस्य पक्ष इति तेन (षष्ठी तत्पुरुष)

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप छन्द है। यथार्थ–अयथार्थ का निर्णय न होने के कारण सन्देह अलंकार है। स्वभाव कथन होने से स्वभावोक्ति तथा वर्णसाम्य होने से अनुप्रास अलंकार है। द्वारपक्ष, ताड़न 'व्यक्तं न जानामि' के प्रति हेतु है अतएव काव्य लिंग अलं कार है।

भाववैशिष्ट्य – महाराज उदयन का वासवदत्ता को निकलते हुए अर्द्धजाग्रत अवस्था में देखना तथा उनींदी अवथा में टकराना अति नाटकीय है। उसके सन्देह ज्ञान में सारी क्रियायें साधक हैं अतः वर्णन स्वाभाविक है।

शय्यायामवसुप्तं मां बोधयित्वा सखे! गता।

दग्धेति ब्रुवता पूर्वं वंचितोऽस्मि रुमण्वता।।8।।

अन्वयः– सखे! शय्यायाम् अवसुप्तम् माम् बोधयित्वा गता। दग्धा इति ब्रुवता, रुमण्वता पूर्वम् वंचितः अस्मि।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत श्लोक कविताकामिनी हासः महाकविभासः प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – विदूषक कहते हैं कि वासवदत्ता बहुत समय पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है तब राजा उदयन कहता है कि मित्र ! नहीं ऐसा मत कहो –

अनुवाद – हे मित्र ! शय्या पर सोये हुए मुझको जगाकर (वह वासवदत्ता) चली गयी। जल गयी

है। ऐसा कहते हुए पहले (जब मैं वासवदत्ता के वियोग में व्याकुल था) रूम्णवान् द्वारा ठगा गया हूँ। अर्थात् उसने मुझे असत्य कहा था।

व्याकरणिक टिप्पणी –

अवसुप्तम् – अव+स्वप्+क्त ।

बोधयित्वा – बुध्+णिच्+क्त्वा

गता – गम्+क्त+टाप्

वञ्चितः – वञ्च+क्त ।

दग्धा – दह्+क्त+टाप्।

विशेष – वर्णसाम्य से अनुप्रास अलंकार है। विप्रलम्भ शृंगार रस तथा माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। यहाँ उदयन का वासवदत्ता के प्रति उत्कट प्रेम दिखाया गया है। यहाँ वासवदत्ता के विषय में संदेह रहना भावी समय में मिलन की पूर्व सूचना है।

यदि तावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्।

अथायं विभ्रमो वा स्याद्विभ्रमो ह्यस्तु मे चिरम्।।9।।

अन्वयः यदि अयं स्वप्नः तावत् धन्यम् अप्रतिबोधनम्। अथ अयं विभ्रमः वा स्यात्, विभ्रमः हि मे चिरम् अस्तु।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् नामक नाटक के पंचम अंक से लिया गया है।

प्रसंग – जब विदूषक राजा उदयन से कहता है कि आपने वासवदत्ता को स्वप्न में देखा होगा, तब राजा कहते हैं कि –

अनुवाद – यदि यह स्वप्न था तो न जागना ही अच्छा था और यदि यह भ्रांति थी अथवा बुद्धि विभ्रम था, तो यह भ्रांति निश्चय ही चिरकाल तब बनी रहे।

व्याकरणिक टिप्पणी –

अप्रतिबोधनम् – न प्रति बोधनम् इति (नञ तत्पुरुष)

प्रति+बुध्+ल्युट्।

विभ्रमः – वि+भ्रम्+घञ् ।

ह्यस्तु – हि+अस्तु (यण् संधि)

विशेष – प्रस्तुत पद्य में 'अनुष्टुप्' वृत्त है। प्रिया स्मरण होने से स्मरणालंकार है। यहाँ उदयन के लिए अप्रतिबोधन और विभ्रम दोनों ही वांछनीय हो गये है, अतः पद्य में अनुकूलालंकार है। इस पद्य में उदयन का वासवदत्ता के प्रति रागातिशय प्रकट हो रहा है। वस्तुतः योंगन्धरायण का ऐसी योजना बनाना नितांत उचित था क्योंकि वासवदत्ता के जीवित रहते पद्मावती से विवाह होना असम्भव था।

स्वप्नस्यान्ते विबुद्धेन नेत्रविप्रोषितांजनम्।

चारित्र्यमपि रक्षन्त्या दृष्टं दीर्घालकं मुखम्।।10।।

अन्वयः स्वप्नस्य अन्ते विबुद्धेन (मया) चारित्र्यम् अपि रक्षन्त्याः नेत्र विप्रोषितांजनं दीर्घालकं मुखं दृष्टम्।

सन्दर्भ – प्रस्तुत श्लोक महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – विदूषक के यह कहने पर कि आपने स्वप्न में अवन्ति सुन्दरी नामक यक्षिणी को देखा होगा, तब राजा उदयन कहते हैं कि नहीं, नहीं –

अनुवाद – नींद के बाद के जगे हुए (मैंने) चरित्र (शील, सतीत्व) की रक्षा करने वाली (वासवदत्ता) का आंखों से पौंछे हुए अञ्जन (काजल) वाला, लम्बे खुले बालों वाला मुख (भी) देखा था।

व्याकरणिक टिप्पणी –

नेत्र विप्रोषिताञ्जनम् – विप्रोषितम् अञ्जनं यस्मिन् तत् (बहुब्रीहि) विप्रोषित – वि+प्र+वस्+क्त। दृष्टम् – दृश्+क्त ।

विबुद्धेन – वि+बुध्+क्त (तृतीया ए.व.)

रक्षत्या – रक्ष्+शतृ+ङीप् (तृ.ए.व.)

दीर्घालकम् – दीर्घाः अलका यत्र तत् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् वृत्त है। वर्णसाम्य से अनुप्रास तथा शब्द का साभिप्राय प्रयोग होने से परिकर अलंकार है। विप्रलम्भ श्रृंगार, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

सोऽयं संत्रस्तया देव्या तया बाहुर्निपीड़ितः।
स्वप्नेऽप्युत्पन्नसंस्पर्शो रोमहर्ष न मुंचति।।11।।

अन्वयः – संत्रस्तया तया देव्याः निपीडितः यः अयं बाहुः, निपीडितः (स) स्वप्नेअपि उत्पन्न–संस्पर्शः रोमहर्षं न मुंचति।

सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम' नाटक के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – राजा विदूषक से कहता है कि मैंने स्वप्न में किसी और को नहीं बल्कि वासवदत्ता को ही देखा था। इसकी पुष्टि के लिए राजा कहता है कि –

अनुवाद – कहीं कोई देख न ले, इस भय से भयभीत देवी (वासवदत्ता) के द्वारा दबायी गयी यह भुजा स्पर्शजन्य आनंद से उत्पन्न रोमाञ्च को अब भी नहीं छोड़ रही है अर्थात् अभी भी मेरी भुजा उसके स्पर्श से रोमांचित हो रही है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

निपीड़ितः – नि+पीड्+क्त,

उत्पन्न – उद्+पद्+क्त ,

रोमहर्षम् – रोम्णः हर्षः तम् (षष्ठी तत्पुरुष),

संत्रस्तया – सम+त्रस्+क्त (तृ0ए0व0)

विशेष – इस पद्य में अनुष्टुप् छन्द है। वर्णसाम्य से अनुप्रास तथा काव्यलिंग अलंकार है। निपीडन का सार्थक प्रयोग होने से परिकर अलंकार है। कवि ने यहाँ दो प्रेमियों के ह्रदस्थ प्रेम की सशक्त अभिव्यक्ति करायी है। उदयन सोते समय भी वासवदत्ता के द्वारा प्रेमावेश में हाथ को हल्का सा दबाए जाने पर रोमांचित हो जाता है।

भिन्नास्ते रिपवो भवद्‌गुणरताः पौरांः समाश्वासिताः,
पार्ष्णी यापि भवत्प्रयाणसमये तस्या विधानं कृतम्।
यद्यत् साध्यमरिप्रमाथजननं तत्तन्मयानुष्ठितं
तीर्णा चापि बलैर्नदी त्रिपथगा वत्साश्च हस्ते तव।।12।।

अन्वय :– ते रिपवः भिन्नाः, भवद्गुणरताः पौराः समाश्वासिताः, अपि भवत्प्रयाणसमये या पार्ष्णी तस्याः विधानं कृतम्, अरिप्रमाथजननं यत् यत् साध्यं तत् तत् मया अनुष्ठितम्। त्रिपथगा नदी बलैः तीर्णा, वत्साः च तव हस्ते (सन्ति)।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य स्वप्नासवदत्तम नामक नाटक के पंचम अंक से समुधृत है। इस नाटक के रचयिता महाकवि भास है।

प्रसंग – काञ्चुकीय मन्त्री रूग्णवान् द्वारा आरूणि को नष्ट करने हेतु लायी गयी सेना के बारे में राजा को बताता है और युद्ध की तैयारी का वर्णन करते हुए कहता है कि –

अनुवार – आपके शत्रु (साम,दाम, दण्ड, भेदादि नीतियों से) तोड़ दिये गये हैं अर्थात् उनमें फूट पैदा कर दी गई है। आपके गुणों में अनुरक्त नागरिक पूर्णतः आश्वस्त कर दिये गये हैं। (युद्ध के लिए) आपके प्रस्थान करने के समय पीछे चलने वाली सेना के भाग को भी व्यवस्थित कर दिया गया है। शत्रु के नाश को करने वाला जो कार्य है, वह मैंने कर दिया है, और सेनाओं के द्वारा गंगानदी पार कर ली गई है, (अब) वत्स देश आपके अधीन हो चुका है (ऐसा समझे)।

व्याकरणिक टिप्पणी –

अरिप्रमाथ जननम् – अरीणां प्रमाथस्य जननं इति (ष0 तत्पुरूष)

त्रिपथगा – त्रयाणां पथां समाहारः (द्विगु)

भिन्नाः – भिद्+क्त। पार्ष्णी– पृष्+नि+ङीष् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में शार्दूल विक्रीड़ित छन्द है। यथार्थ वर्णन होने से स्वभावोक्ति तथा वर्णसाम्य से अनुप्रास अलंकार है।

उपेत्य नागेन्द्रतुरंगतीर्णे तमारूणिं दारूणकर्मदक्षम्
विकीर्णबाणोग्रतरंगभंगे महार्णवाभे युधि नाशयामि।।13।।

अन्वयः– नागेन्द्रतुरंगतीर्णे, विकीर्णबागोग्रतरंगभंगे, महावर्णवाभे, युधि उपेत्य दारूणकर्मदक्षं तम् आरूणिम् नाशयामि।

सदर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम अंक से अवतरित है।

प्रसंग – महाराज उदयन सेना के तैयार होने का समाचार सुनकर युद्ध के पूर्व आक्रोश व्यक्त करते हुए कहते हैं कि–

अनुवाद – मैं श्रेष्ठ हाथियों तथा घोड़ों द्वारा पार किये गये, बिखेरे गये बाण रूपी चंचल भयंकर लहरों वाले महासमुद्र के समान युद्ध में समीप पहुँचकर उस कठोर कर्म करने में कुशल आरुणि को नष्ट कर देता हूँ।

व्याकरणिक टिप्पणी – नागेन्द्र तुरंग तीर्णे– नागेन्द्राश्च तुरंगाश्च नागेन्द्र तुरंगम् (समाहार द्वन्द्व) तेन तीर्णे (तृ0 तत्पु0)।

दारुपकर्म दक्षम् – दारुणं कर्म इति, तस्मिन् दक्षः तम् (कर्म0, सं0 तत्पु0) उपेत्य उप+इण्+ल्यप्। विकीर्ण – वि+कृ+क्त।

तीर्णे – तृ+क्त (स.ए.क्व.)।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में उपेन्द्रवज्रा वृत्त है। वर्णसाम्य से अनुप्रास, साधर्म्य कथन से उपगा, बाणरूपी उर्मिलों से रूपक अलंकार है। वीर रस, ओजगुण तथा आरभटी वृत्ति है।

भाव वैशिष्ट्य – सारे नाटक में केवल इसी स्थल पर महाराज की वीरता का प्रतिपादन तथा वीर रस का विनियोग किया गय है। अन्यत्र कहीं भी उदयन का क्षत्रियत्व प्रकट नहीं हुआ है।

श्रुतिसुख–निनदे! कथं नु देव्या स्तनयुगले जघन–स्थले च सुप्ता।

विहगगणरजोविकीर्ण दण्डा, प्रतिभयमध्युषितास्यरण्यवासम्।।1।।

अन्वयः– श्रुतिसुख–निनदे! देव्याः स्तनयुगले जघन–स्थले च सुप्ता विहगगण– रजोविकीर्ण–दण्डा प्रतिभयम् अरण्यवासं कथं नु अध्युषिता असि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य कविता कामिनी हास महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग – जब महाराज सूर्यामुख नामक महल में गये, उसी समय किसी ने वीणा बजा दी। महाराज समझ जाते हैं कि यह घोषवती वीणा का ही शब्द है, जिसे वासवदत्ता बजाया करती थी। राजा द्वारा उसे प्राप्त कर लेने पर वे उस वीणा को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि–

अनुवाद – कानों के लिए मधुर शब्दवाली, देवी वासवदत्ता की जंघाओं तथा स्तनयुगलों पर सोयी हुई, पक्षियों के झुण्ड की मल (बींट) से युक्त दण्डवाली, ए वीणे ! तुम कैसे भयंकर जंगल में रही, अर्थात् तुमने उस देवी वासवदत्ता का वियोग कैसे सहन किया।

व्याकरणिक टिप्पणी –

श्रुतिसुखनिननदे – श्रुत्योः सुखं, श्रुतिसुखं तद् निनदं यस्याः सा (बहु0)।

स्तनयुगले – स्तनयोः युगले, तस्मिन् (ष0 तत्पु0)

सुप्ता – सुप्+क्त+टाप्।

विकीर्ण – वि+कृ+क्त।

अध्युषिता – अधि+वस्+क्त+कर्तरि ।

श्रुति – श्रु+क्तिन् ।

निनद – नि+नद्+अप् ।

श्रोणि – श्रोण+ङीप् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में वसंततिलका छन्द है। वर्णसाम्य से अनुप्रास, वासवदत्ता की स्मृति से स्मरणालंकार है। निनद शब्द विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने से परिकर अलंकार है। विप्रलम्भ शृंगार रस, माधुर्यगुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

भाव–वैशिष्ट्य – इस पद्य में कथानकानुकूल भावों का संचय किया गया है। वीणा की प्राप्ति होना एक नाटकीय आवश्यकता है, इसी के माध्यम से राजा का वासवदत्ता को स्मरण करना तथा आगे भविष्य में उसकी प्राप्ति का पूर्व निर्देश प्राप्त होता है।

श्रोणी–समुद्वहन्–पार्श्व–निपीडितानि,

खेदस्तनान्तर–सुखान्युपगूहितानि।

उद्दिश्य मां च विरहे परिदेवितानि,

वाद्यान्तरेषु कथितानि च सस्मितानि।।2।।

अन्वयः– श्रोणीसमुद्वहन–पार्श्वनिपीडितानि खेदस्नान्तरसुखानि उपगूहितानि। माम् उद्दिश्य विरहे परिदेवितानि, वाद्यान्तरेषु सस्मितानि च कथितानि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य कविता कामिनी हास महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में राजा उदयन घोषवती वीणा के पुनः प्राप्त होने पर उसे सम्बोधित करते हुए कहता है कि क्या आप वासवदत्ता का स्मरण नहीं करती हो–

अनुवाद – वीणावादन करते समय जंघाओं पर धारण की जाती हुई, (वीणा के) दोनों पृष्ठभागों का गाढ़ आालिंगन करती हुई, थकान हो जाने पर स्तनयुगल के मध्य सुखदायक आलिंगनों को तथा विरहावस्था में मुझे सम्बोधित करके किये गये विलापों को एवं वीणा वादन के मध्य–अवकाश में मुस्कुरा कर कहे गये वचनों को (क्या याद नहीं करती हो)।

व्याकरणिक टिप्पणी –

खेदस्तानन्तरसुखाानि– खेदे स्तनयोः अन्तरम् (ष0 तत्पु0),

तस्मिन् सुखानि (स0 तत्पु0) ।

सस्मितानि – स्मितेन सहितानि (अव्ययी) । निपीडन– नि+पीड्+ल्युट् ।

उपगूहितानि – उप+गुह्+क्त (द्वि0 ब0 व0)

उद्दिश्य – उत्+दिश्+ल्यप्।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में वसन्ततिलका वृत्त है। वर्णसाम्य से अनुप्रास तथा वासवदत्ता का स्मरण होने से स्मरणालंकार है। वासवदत्ता के स्मरण के लिए घोषवती कारण है, परन्तु कार्य न होने से विशेषोक्ति अलंकार है। विप्रलम्भ श्रृंगार तथा माधुर्य गुण है।

चिरप्रसुप्तः कामो मे वीणया प्रतिबोधितः।
तां तु देवीं न पश्यामि यस्या घोषवती प्रिया।।3।।

अन्वयः– मे चिरप्रसुप्तः कामः वीणया प्रतिबोधितः, यस्याः घोषितवती प्रिया, तां देवीं तु न पश्यामि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य कविता कामिनी हास महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग – राजा उदयन घोषवती वीणा को प्राप्त करके वासवदत्ता के लिए और अधिक व्याकुल हो जाता है। इसी का वर्णन प्रस्तुत पद्य में किया गया है।

अनुवाद – चिरकाल से सोये हुए मेरे (वासवदत्ता के प्रति) अनुराग को (इस) वीणा द्वारा जगा दिया गया है, परंतु जिसकी यह घोषवती स्नेहपात्र है, उस देवी वासवदत्ता को (मैं) नहीं देख रहा हूँ।

व्याकरणिक टिप्पणी –

चिरप्रसुप्तः – चिरं प्रसुप्तः ,

प्र+सुप्+क्त।

देवीं – दिवु+ङीप् ।

प्रतिबोधितः – प्रतिबुध्+णिच्+क्त ।

प्रिया– प्री+क+टाप् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् वृत्त है। इसमें वर्णसाम्य से अनुप्रास तथा राजा द्वारा वासवदत्ता का स्मरण किए जाने से स्मरणालंकार है। विप्रलम्भ श्रृंगार, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

किं वक्ष्यतीति ह्रदयं परिशंकितं मे,

कन्या मयाप्यपहृता न च रक्षिता सा।

भाग्यैश्चलैर्महदवाप्तगुणोपघातः,

पुत्रः पितुर्जनितरोष इवास्मि भीतः।।4।।

अन्वयः– किं वक्ष्यति, इति में ह्रदय परिशंकितम्। मया कन्या अपहृता अपि, सा च न रक्षिता। चलैः भाग्यैः महदवाप्तगुणोपघातः, पितुः जनितरोषः पुत्र इव भीतः अस्मि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से अवतरित है।

प्रसंग – जब पद्मावती यह सोचकर व्याकुल सी हो जाती है कि पिता या माता भला क्या कहेंगे, तब राजा पद्मावती को अपने पास बैठने के लिए कहते हैं तथा उसकी शंका को उचित बताते हैं –

अनुवाद – क्यों कहेंगे ? यह सोचकर मेरा मन (भी) सशंकित है। मैंने उनकी पुत्री का अपहरण भी किया और उसकी रक्षा भी नहीं की। चंचल भाग्य के द्वारा अथवा भाग्य की प्रतिकूलता से गुरुजन (माता–पिता) की मर्यादा को तोड़ने वाले (अतएव) पिता के क्रोध को उत्पन्न करने वाले पुत्र के समान डरा हुआ हूँ।

व्याकरणिक टिप्पणी –

अपहृता – अप+हृ+क्त+टाप् ।

रक्षिता – रक्ष्+क्त+टाप् ।

वक्ष्यति – वच्+लट्+तिप्

अवाप्त – अव+आप्+क्त ।

जनितरोषः – जनितःरोषःयेन सः (बहु0)

विशेष – प्रस्तुत पद्य में वसन्ततिलका वृत्त है। वर्णसाम्य से अनुप्रासालंकार है। इव उपमा वाचक शब्द से उपमालंकार है। पूर्वकृत्य का स्मरण करने से स्मरणालंकार है।

सम्बन्धि–राज्यमिदमेत्य महान् प्रहर्षः

स्मृत्वा पुनर्नृपसुता–निधनं विषादः।

किं नाम देव! भवता न कृतं यदि स्याद्

राज्य परैरपहृत कुशलं च देव्याः।।5।।

अन्वय :– इदं सम्बन्धिराज्यम् एत्य महान् प्रहर्षः, पुनः नृपसुतानिधनं स्मृत्या विषादः दैव! परैः अपहृतं राज्यं देव्याः कुशलं यदि स्यात् (तर्हि) भवता किं नाम न कृतम् (स्यात्)।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से अवतरित है।

प्रसंग – वासवदत्ता की मृत्यु का दुःखद समाचार सुनकर उसके परिजन राजा उदयन से मिलने आते हैं। इसी समय कांचुकीय कहता है कि– हे राजन् !

अनुवाद – इस सम्बन्धी के राज्य में आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है, परंतु अपने स्वामी की पुत्री (वासवदत्ता) के निधन का स्मरण कर दुःख हो रहा है। शत्रु द्वारा छीने गए राज्य की प्राप्ति की भांति यदि देवी वासवदत्ता भी कुशलपूर्वक होती अर्थात् जीवित होती, तो हे देव ! तूने क्या नहीं किया होता अर्थात् हमारे लिए यह अति प्रसन्नता की बात होती।

व्याकरणिक टिप्पणी –

सम्बन्धि राज्यम् – सम्बन्धिनः राज्यम् (ष0 तत्पु0) । नृपसुतानिधनम् – नृपस्य सुता, तस्याः निधनम् (ष0 तत्पु0) । एत्य– इण्+ल्यप्।

स्मृत्वा – स्मृ+क्त्वा ।

कृतम् – कृ+क्त ।

अपहृतम् – अप+हृ+क्त ।

विशेष – प्रस्तुतावतरण में वसन्ततिलका वृत्त है। अनुप्रास, अर्थापत्ति तथा स्मरणालंकारों का उचित विनियोग किया गया है। ध्वन्यात्मकता होने से उत्तम काव्य का उदाहरण है। प्रस्तुत पद्य में दो घटनाओं की ओर संकेत है। (1) उदयन को राज्य की पुनः प्राप्ति, (2) वासवदत्ता की मृत्यु।

पृथिव्यां राजवंश्यानामुदयास्तमयः प्रभुः।

अपि राजा स कुशली मया कांक्षितबान्धवः।।6।।

अन्वयः – पृथिव्यां राजवंश्यानाम् उदयास्तमयः प्रभुः मया कांक्षितबांधवः स राजा अपि कुशली वर्तते।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से अवतरित है।

प्रसंग – राजा प्रद्योत द्वारा भेजे गए कांचुकीय का अभिवादन स्वीकार करके राजा उदयन उसे अत्यधिक आदर देते हुए कहते हैं कि –

अनुावद – (आर्य !) पृथिवी पर राजकुलों में उत्पन्न श्रेष्ठ राजाओं की उन्नति तथा विनाश करने में समर्थ तथा मेरे द्वारा चाहे गये सम्बन्धी वे राजा (प्रद्योत) कुशल तो हैं

व्याकरणिक टिप्पणी –

राजवंश्यानाम् – राज्ञां वंश्याः

तेषाम् (ष0 तत्पु0) । काङ्क्षितबान्धवः – काङ्क्षितः

बान्धवः येन सः (बहु0), कांक्ष+क्त ।

उदयः – उत्+इण्+अच् ।

अस्तमयः– अस्तम्+इण्+अच् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में 'अनुष्टुप्' वृत्त है। वर्णासम्य से अनुप्रास तथा गुणों का प्रकर्ष वर्णन होने से उदात्तालंकार है। प्रस्तुत पद्य में राजा की विनयाशीलता प्रकट हुई है। तथा महाराज प्रद्योत की शक्ति का परिचय प्राप्त हुआ है।

कातरायेऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।

प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते।।7।।

अन्वयः – ये कातराः अपि अशक्ताः वा तेषु उत्साहः न जायते, प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैः एव भुज्यते।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से अवतरित है।

प्रसंग – कांचुकीय महाराज उदयन से कहते हैं कि भाग्य की अनुकूलता से शत्रुओं द्वारा छीना हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर लिया गया है। क्योंकि –

अनुवाद – कायर अथवा जो असमर्थ हैं, उनमें उत्साह पैदा नहीं होता है। निश्चय ही राज्यलक्ष्मी प्रायः उत्साह वालों के द्वारा भोगी जाती है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

सोत्साहः= स+उत्साह, नरेन्द्र= नर+इन्द्र (गुण संधि), अशक्ताः= न शक्ताः इति (नञ् तत्पुरूष समास)

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् वृत्त है। अप्रस्तुत प्रशंसा होने से अप्रस्तुत प्रशंसालंकार है। तथ कारण कार्यभाव की प्राप्ति होने से काव्यलिंग अलंकार है। वर्णसाम्य से अनुप्रासालंकार है। प्रस्तुत पद्य सुभाषित श्लोक है और अन्त में लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है। प्रसाद, गुण शान्त रस, सात्वती वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

भाव वैशिष्ट्य – लोक रीति का शाश्वत अभिव्यंजना के रूप में यहाँ सोत्साहैरेव प्रयोग किया गया है। 'वीर भोग्या वसुन्धरा' की भावना संस्कृत साहित्य तथा समाज में चहुँदिशि छाई हुई है।

अहमवजितः पूर्वं तावत् सुतैः सह लालितो

दृढमहृता कन्या भूयो मया न च रक्षिता।

निधनमपि च श्रुत्वा तस्यास्तथैव मयि स्वता,

ननु यदुचितान् वत्सान् प्राप्तुं नृपोऽत्र हि कारणम्।।8।।

अन्वयः – पूर्वं तावत् अवजितः अहं सुतैः सह ललितः दृढं मया कन्य अपहृता, भूयः च न रक्षिताः तस्याः निधनं श्रुत्वा च अपि तथैव मयि स्वता, ननु उचितान् वत्सान् प्राप्तुं यत् अत्र नृपः हि कारणम्।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से अवतरित है।

प्रसंग – राजा उदयन अपनी राज्यलक्ष्मी की पुनः प्राप्ति का श्रेय महासेन को देते हुए कांचुकीय से कहता है कि –

अनुवाद – पहले उन्होंने जीतकर अपने पुत्रों के साथ मेरा पालन पोषण किया। मैंने (उनकी) कन्या का कठोरतापूर्वक अपहरण किया और फिर रक्षा भी नहीं की। उस पुत्री की मृत्यु सुनकर भी वैसा ही मुझ पर अपनत्व है। निस्सन्देह जो उचित रूप (अधिकार के साथ) से (वत्स) राज्य को पाने में समर्थ हुआ हूँ, उसमें राजा (महासेन) ही कारण है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

अवजितः – अव+जि+क्त ।

अपहृता – अप+हृ+क्त+टाप् ।

रक्षिता – रक्ष्+क्तःटाप् ।

लालितः – लाल्+क्त ।

श्रुत्वा – श्रु+क्त्वा।

प्राप्तुम् – प्र+आप्+तुमुन् ।

स्वता – स्व+तल्+टाप् ।

दृढ़ः – दृढ्+क्त ।

विशेष – प्रस्तुतावरण में 'हरिणी' छन्द है। वर्णसाम्य से अनुप्रासालंकार तथा 'दृढ़म्' शब्द का सार्थक प्रयोग होने से परिकरालंकार है। यद्यपि महासेन वत्स राज्य की पुनः प्राप्ति में कारण नहीं है फिर भी उसे कारण मानकर फल का कथन कराया गया है, अतः विभावना अलंकार है। शान्त रस, प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति तथा सात्वती वृत्ति है।

यहाँ महाराज उदयन की उदारता प्रकट हुई है, क्योंकि महासेन से तो उसका विरोध रहा है, अतः

वत्स राज्य की प्राप्ति में सहकारी कैसे हो सकता है। वासवदत्ता के अपहरणानन्तर महासेन तथा उदयन का युद्ध हुआ था।

षोडशान्तः पुरज्येष्ठा पुण्या नगरदेवता।

मम प्रवासदुःखार्त्ता माता कुशलिनी ननु।।9।।

अन्वयः— षोडशान्तः पुरज्येष्ठा पुण्या नगरदेवता, मम प्रवासदुःखार्त्ता माता कुशलिनी ननु।।

सन्दर्भ — प्रस्तुत पद्य महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से अवतरित है।

प्रसंग — महासेन का संदेश सुनने के अनन्तर महाराज उदयन देवी वसुन्धरा से देवी अंगरावती की कुशलक्षेम पूछते हैं

अनुवाद — सोलह रानियों वाले अन्तःपुर में ज्येष्ठ अर्थात् महिषी, पवित्र, नगर की देवी (अर्थात् राजलक्ष्मी के समान) मेरे उज्जयिनी से छिपकर चले जाने के कारण दुःख से व्याकुल माता कुशलपूर्वक तो हैं।

व्याकरणिक टिप्पणी —

षोऽशान्तः पुरज्ययेष्ठाः — षोडशेषु अन्तःपुरेषु ज्येष्ठा (उत्तरपद बहुब्रीहि)।

विशेष — प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् वृत्त है। अलौकिक गुणों का कथन होने से 'उदात्त' अलंकार है। तथा वर्णसाम्य से अनुप्रास है। शान्त रस व प्रसाद गुण है।

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले,

रज्जच्छेदे के घटं धारयन्ति।

एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां

काले—काले छिद्यते रूह्रते च।।10।।

अन्वयः— कः कं मृत्युकाले रक्षितुं शक्तः। रज्जुछेदे के घटं धारयन्ति? एवं लोकः तुल्यधर्मः वनानां काले काले छिद्यते रूह्रते च।

सन्दर्भ — प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से समुधृत हैं।

प्रसंग — जब राजा उदयन वावदत्ता को स्मरण करके पुनः दुःख को प्राप्त हो जाता है, तब कांचुकीय राजा को आश्वस्त करके लोक—धर्म का वर्णन करते हुए कहता है कि —

अनुवाद — मृत्यु का समय आ जाने पर कौन किसकी रक्षा करने में समर्थ हो सकता है?रस्सी के टूट जाने पर घड़े को कौन धारण कर सकता है। इसी प्रकार जैसे वन में वृक्ष समय—समय पर कटते और उगते हैं, उसी प्रकार उसके समान ही धर्म वाला यह संसार भी समय—समय पर उत्पन्न होता है तथा नाश को प्राप्त होता है।

व्याकरणिक टिप्पणी—

मृत्युकाले — मृत्योः कालः,

तस्मिन् (ष0 तत्पु0) । रज्जुच्छेदे — रज्जोश्छेदः तस्मिन् (ष0 तत्पु0)। तुल्य धर्म — तुल्यः धर्मः यस्य सः (बहु0)। छिद्यते— छिद्+लट्+तिप् (आत्मनेपद) । रूह्यते — रुह्+लट्+तिप् (आत्मनेपद) ।

विशेष — प्रस्तुत पद्य में शालिनी वृत्त है। वर्णसाम्य से अनुप्रास, पद्य के पूर्वाद्ध में दृष्टांतालंकार तथा उत्तरार्द्ध में उपमालंकार है। शान्त रस, प्रासद गुण, सात्वती वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। भगवान श्री कृष्ण ने युद्धभूमि में अर्जुन के लिए यही शाश्वत सत्य का उपदेश दिया था—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

तस्मादऽपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसिं।।

(श्री मद्भगवद्गीता, अध्याय– 2)

महासेनस्य दुहिता शिष्या देवी च मे प्रिया।

कथं सा न मया शक्या स्मर्तुं देहान्तरेष्वपि।।11।।

अन्वयः– महासेनस्य दुहिता मे प्रिया, शिष्या, देवी च, सा मया देहान्तरेषु अपि कथं न स्मर्त्तुं शक्या।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से समुधृत हैं।

प्रसंग – कांचुकीय के यह कहने पर कि जन्म लेने वाला प्रत्येक प्राणी मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है, राजा उदयन वासवदत्ता के प्रीति अपनी गाढ़ प्रीति का वर्णन करता हुआ कांचुकीय से ऐसा न कहने का आग्रह करता है।

अनुवाद – महासेन की पुत्री, मेरी शिष्या पत्नी तथा प्रिय वह (वासवदत्ता) दूसरे शरीर को प्राप्त करने पर भी कैसे स्मरण करने के योग्य नहीं है अर्थात् वह तो हमेशा ही स्मरणीय है। मैं उसको कभी नहीं भुला सकता हूँ।

व्याकरणिक टिप्पणी –

शिष्या – शास्+क्यप्+टाप् ।

शक्या – शक्+ण्यत्+टाप् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में 'अनुष्टुप्' वृत्त है। वर्णसाम्य से अनुप्रास तथा 'कथम्' पद प्रयोग से अन्यार्थ की प्राप्ति होने से अर्थापत्ति अलंकार है। वासवदत्ता के गुण स्मरण से स्मरणालंकार है। शान्त रस तथा प्रसाद गुण है। काकुध्वनि के कारण उत्तम काव्य है।

वाक्यमेतत् प्रियतरं राज्यलाभशतादपि।

अपराद्धेष्वपि स्नेहो यदस्मासु न विस्मृतः।।12।।

अन्वयः – एतत् वाक्यम्, राज्यलाभशतात् अपि प्रियतरम्। यत् अपराद्धेषु अपि अस्मासु स्नेहः न विस्मृतः।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से समुधृत हैं।

प्रसंग – महाराज उदयन देवी अंगरावती का संदेश सुनकर उनकी महिमा का वर्णन करता हुआ कहता है कि–

अनुवाद – ये वचन सैंकड़ों राज्यों की प्राप्ति से भी अधिक प्रिय (मधुर) हैं, (क्योंकि) हमारे अपराध ी होने पर भी हम पर उन्होंने स्नेह नहीं भुलाया।

व्याकरणिक टिप्पणी –

राज्यलाभशतात् – राजस्य लाभः (ष0 तत्पु0), तस्य शतम् (श0 तत्पु0), तस्मात्। प्रियतरम् – अतिशयेन प्रियम् ।

अपराद्धेषु – अप+राध्+क्त (स.ब.व.)।

विस्मृतः – वि+स्मृ+क्त ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् वृत्त तथा अनुप्रास अलंकार है।

अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारूणा कथम्।

इदं च मुखमाधुर्यं कथं दूषितमग्निना।।13।।

अन्वयः – अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य दारूणा विपत्तिः कथम्? च इदम् मुखमाधुर्यम्अग्निना कथं दूषितम्?

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से समुधृत हैं।

प्रसंग – देवी अंगरावती द्वारा भेजे गए चित्रफलक में वासवदत्ता को देखकर राजा उदयन कहता है कि–

अनुवाद – इस सुन्दर रूप पर ऐसी घोर विपदा कैसे आ पड़ी?और मुख के इस सौन्दर्य को अग्नि ने कैसे दूषित किया ? अर्थात् वासवदत्ता के अनिन्ध्य सौन्दर्य को अग्नि ने कुरूप बनाकर निर्दयता पूर्वक जला दिया।

व्याकरणिक टिप्पणी –

मुखमाधुर्यम् – मुखस्य माधुर्यम् (ष0तत्पु0) स्निग्धस्य – स्निह्+क्त (ष0ए0व0) । विपत्तिः – वि+पद्+क्तिन् ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप वृत्त है। अनुप्रास तथा 'कथम्' पद प्रयोग से 'अर्थापत्ति' अलंकार है। विप्रलम्भ श्रृंगार, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है।

यदि विप्रस्य भगिनी व्यक्तमन्या भविष्यति।

परस्परगता लोके दृश्यते तुल्यरूपता।।14।।

अन्वयः – यदि विप्रस्य भगिनी (तर्हि) व्यक्तम् अन्या भविष्यति। लोके परस्परगता रूपतुल्यता दृश्यते।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से समुधृत हैं।

प्रसंग – पद्मावती राजा उदयन को चित्र दिखलाती है राजा चित्र देखकर उद्विग्न हो जाता है तब पद्मावती कहती है कि किसी ब्राह्मण की बहिन मेरे यहाँ धरोहर के रूप में रहती है वह चित्र जैसी है तब उदयन कहता है कि–

अनुवाद – यदि वह ब्राह्मण की बहिन है तो स्पष्ट ही कोई दूसरी होगी क्योंकि संसार में एक दूसरे में रूप की समानता देखी जाती है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

परस्परगता – परं–परं गता इति परस्परगता (द्वितीया तत्पुरुष)

गता – गम्+क्त+टाप्

भगिनी – भग्+इनि+ङीप्

व्यक्तम् – वि+अञ्च्+क्त ।

तुल्यता – तुल्+यत्+तल्+टाप्

तुल्यरूपं – तुल्यं रूपम् इति तुल्य रूपं (कर्म) तस्य भावः ।

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप छन्द है। कारण– कार्य भाव प्राप्त होने से काव्यलिंग अलंकार तथा वर्णसाम्य से अनुप्रास अलंकार है इस पद्य में शान्तरस एवं प्रसाद गुण है।

प्रच्छाद्य राजमहिषीं नृपतेर्हितार्थम्,
कामं मया कृतमिदं हितमित्यवेक्ष्य।
सिद्धेऽपि नाम मम कर्मणि पार्थिवोऽसौ,
किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशंकितं मे।।15।।

अन्वयः – नृपतेर्हितार्थं राजमहिषीं प्रच्छाद्य, हितम् इति अवेक्ष्य मया इदं कामं कृतम्। नाम मम कर्मणि सिद्धे अपि पार्थिवः किं वक्ष्यति, इति में हृदयं परिशंकितम्।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से समुधृत हैं।

प्रसंग – राजा उदयन पद्मावती को कहते हैं कि हे पद्मावती ! तुम उस आर्या अवन्तिका को ले आओ। तब मन्त्री यौगन्धरायण अपने मन नही मन हृदय से सशंकित होता है कि आर्य पुत्र क्या कहेंगे।

अनुवाद – राजा के कल्याण के लिए महारानी वासवदत्ता को छिपाकर इसी में उनका कल्याण होगा ऐसा देखकर या विचारकर मैंने यह कार्य अपनी इच्छा से किया । मेरा कार्य हो जाने परभी वह राजा क्या कहेंगे, यह सोचकर मेरा हृदय सशंकित हो रहा है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

राजमहिषीम् – राज्ञः महिषी इति ताम् (षष्ठी तत्पुरुष)

प्रच्छाद्य – प्र+छद्+णिच्+क्त्वा (ल्यप्)

अवेक्ष्य – अव+ईक्ष+ल्यप्

सिद्धे – सिध्+क्त (सप्तमी एकवचन)

वक्ष्यति– वच्+लृत्+तिप्

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है। वर्णसाम्य होने से अनुप्रास अलंकार है। ध्वन्यात्मकता होने से उत्तम काव्य है। इसमें भास के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की अपूर्व प्रतिभा का परिचय मिलता है।

भरतानां कुले जातो विनीतो ज्ञानवांछुचिः।
तन्नार्हसि बलाद्धर्तुं राजधर्मस्य देशिः।।16।।

अन्वयः – (त्वम्) भरतानां कुले जातः, विनीतः ज्ञानवान् शुचिः राजधर्मसय देशिकः (असि), तत् बलात् हर्तुम् न अर्हसि।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से समुधृत हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाराज उदयन के द्वारा महासेन की पुत्री वासवदत्ता को पहचानने का वर्णन किया गया है। यौगन्धरायण ने कहा कि हे राजन ।

अनुवाद – भरत वंश में उत्पन्न हुए, विनयी, ज्ञान सम्पन्न, पवित्र आचरण करने वाले, राजधर्म का प्रवर्तन करने वाले आप हैं। इसलिए बलपूर्वक (इस मेरी बहिन को) ग्रहण करने योग्य नहीं है।

व्याकरणिक टिप्पणी –

विनीतः – वि+नी+क्त ।

ज्ञानवान् – ज्ञान+मतुप्

शुचि – शुच्+इन् ।

देशिकः – देश+ठन् (इक) ठस्येकः से ठको इक् ।

हर्तुम् – हृ+तुमुन् ।

राजधर्मस्य – राज्ञः धर्मः तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप छन्द है। भारतानां आदि पदों का साभिप्राय प्रयोग होने से परिकर अलंकार है। वर्णसाम्य होने से अनुप्रास अलंकार तथा स्वभाव वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलंकार है। शान्तरस, प्रसाद गुण, सात्वती वृत्ति तथ वैदर्भी रीति है।

किं नु सत्यमिदं स्वप्नः सा भूयो दृश्यते मया।

अनयाप्येवमेवाहं दृष्टया वंचितस्तदा।।17।।

अन्वयः – इदं किं नु सत्यम् (अथवा) स्वप्न (वर्तते)। सा मया भूयः दृश्यते, अहं तदा अपि एवम् दृष्टया अनवा चंचितः (जातः)।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठांक से समुधृत हैं।

प्रसंग – यौगन्धरायण कहते हैं कि स्वामी की जय हो। तब वासवदत्ता कहती है कि आर्य पुत्र की जय हो। तत्पश्चात् राजा उदयन कहते हैं कि अरे ! यौगन्धरायण ! यह महासेन की पुत्री वासवदत्ता है।

अनुवाद – यह सत्य है अथवा स्वप्न ? उसे (समुद्र गृह में देखी गयी वासवदत्ता को) फिर से मैं देख रहा हूँ। इसी प्रकार देखी जाती हुई इस (वासवदत्ता) से मैं तब भी ठगा गया था।

व्याकरणिक टिप्पणी –

दृश्यते – दृश्+लट्+तिप् आत्मनेपद।

दृष्टया – दृश्+क्त+टाप् (तृतीया एकवचन)

वञ्चितः – वञ्च्+णिच्+क्त ।

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप छन्द है। वर्णसाम्य होने से अनुप्रास अलंकार, सन्देह का निवारण न होने से सन्देह अलंकार है। व्यंग्यार्थ की प्रतीति होने से उत्तम काव्य है। 'किम्' के द्वारा अन्यार्थ की प्राप्ति होने से अर्थापत्ति अलंकार भी है। श्रृंगार रस, माधुर्य गुण, कैशिकी वृत्ति तथा वैदर्भी रीति है। भावों का उदात्त निरूपण है।

मिथ्योन्मादैश्च युद्धैश्च शास्त्रदृष्टैश्च मन्त्रितैः।

भवद्यत्नैः खलु वयं मज्जमानाः समुद्धृताः।।18।।

अन्वयः – मिथ्योन्मादैः च युद्धैः च शास्त्रदृष्टैः मन्त्रितैः च भवद्यत्नै मज्जमानाः वयं खलु समुद्धृताः।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्य महाकवि भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठाङ्क से समुद्धृत है।

प्रसंग – यौगन्धरायण कहता है कि स्वामी देवीवासवदत्ता को दूर करने के कारण से निश्चय ही मैं अपराधी हूँ। स्वामी मुझे इस अपराध के लिए क्षमा करें। तब राजा उदयन कहता है कि आप वास्तव में यौगन्धरायण है।

अनुवाद – झूंठे पागलपन का आचरण करके, वीरतापूर्ण युद्धों के द्वारा, राजनीति एवं कूटनीति का अश्रय लेकर निर्धारित योजनाओं के द्वारा, आपके द्वारा किये गये प्रयत्नों से डूबते हुये हम निश्चय ही ऊपर निकाल लिये गये हैं।

व्याकरणिक टिप्पणी –

मिथ्योन्मादैः मिथ्या कल्पितः उन्मादः तैः (मध्यम पदलोपी समास)

समुद्धृता – सम्+उद्+धृ+क्त

विशेष – इस श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है। वर्णसाम्य होने से अनुप्रास अलंकार, गुणों का स्मरण किये जाने से स्मरण अलंकार है। व्यंग्यार्थ की प्रतीति होने से उत्तमकाव्य है। इस पद्य में यौगन्धरायण की कुशलता तथा योग्यता का वर्णन किया गया है। युगद्यरति इति युगन्धरः (युग+ धृ+खच्) जुँए को जो धारण करता है वह बैल कहलाता है। उदयन का सम्पूर्ण राज्य भार यौगन्धरायण धारण करता है। अतः उसका यौगन्धरायण नाम अति सार्थक है।

भरतवाक्यम्

इमां सागर पर्यन्ता हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्।

महीमेकातपत्रांका राजसिंहः प्रशास्तु नः।।19।।

अन्वय – नः राजसिंहः इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्य कुण्डलाम् एकातपत्रांकम् महीं प्रशास्तु।।

संदर्भ – प्रस्तुत अन्तिम पद्य भरत वाक्य है जो स्वप्नवासवदत्तम के षष्ठ अंक का अन्तिम श्लोक है।

प्रसंग – इस पद्य में नाटक की समाप्ति पर भरत वाक्य का कथन किया गया है। महाराज उदयन के निर्विघ्न एकछत्र चिह्न से युक्त पुथिवी के पालन करने की कामना की गयी है।

अनुावद – हमारे राजाओं में सर्वश्रेष्ठ महाराज उदयन, सागर पर्यन्त फैली हुई, हिमालय पर्वत तथा विन्ध्य पर्वत रूपी कुण्डलों को धारण करने वाली, एक क्षत्र चिह्न वाली पृथ्वी का पालन करें।

व्याकरणिक टिप्पणी –

सागरपर्यन्तां – सागराःपर्यन्ताः यस्याः सा ताम् (बहुब्रीहि)

एकातपत्रांकम् – एकम् आतपत्रम् एव अंको यस्या सा ताम् (बहुब्रीहि)

हिमवत्विन्ध्य कुण्डलाम् – हिमवान् विन्ध्यः च कुण्डले यस्याः ताम् (बहुब्रीहि समास)

विशेष – प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप छन्द है। अनुप्रास तथा रूपक अलंकार है।

भरतवाक्यम् – भरतानां नटानां वाक्यमिति भरतवाक्यम्।

भरतमुनि से सम्बन्ध होने के कारण अभिनयकर्ताओं को भी भरत कहते हैं नाटक की समाप्ति पर सभी अभिनेता मिलकर भरत वाक्य कहते हैं। इस भरत वाक्य में तत्कालीन तथा तद्देशीय राजा की मंगलकामना की जाती है। भरत वाक्य की परम्परा वस्तुतः भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन करती है। जिसमें मानव मात्र की हित कामना की गयी है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

इस भरत वाक्य को ही मांगलिक श्लोक तथा प्रशस्ति भी कहा जाता है। इसे निर्वहण सन्धि का अंग माना गया है। दशरूपक में प्रशस्ति का लक्षण इस प्रकार दिया गया है– 'प्रशस्ति शुभशंसनम्'।।

6.4 बोध प्रश्न

6.4.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वासवदत्ता कौन थी ?

(क) प्रद्योत की पुत्री व उदयन की पटरानी (ख) मगधराज दर्शक की पुत्री

(ग) उज्जयिनी के राजा महासेन की बहन (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

2. यौगन्धरायण कौन था?

(क) मगध का मंत्री (ख) उज्जयिनी का मंत्री

(ग) उदयन का मंत्री (घ) प्रद्योत का मंत्री ( )

3. उदयन किस तरह का नायक है?

(क) धीरोदात्त (ख) धीरललित

(ग) धीर प्रशान्त (घ) धीरोद्धत ( )

4. 'प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पायादुपजायते'

भर्तृदाराभिलाषात्वादस्यां मे महती स्वता।'' में अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) रूपक

(ग) उपमा (घ) काव्यलिंग ( )

5. विदूषक वसन्तक ने वासवदत्ता में पद्मावती से कौनसा गुण विशिष्ट बताया?

(क) अभिमान रहित (ख) मधुरभाषिणी

(ग) सुस्वादु भोजन लेकर मुझे ढूंढना (घ) क्रोधहीनता ( )

6. गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।

कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।।''

इस श्लोक में कौन सा अलंकार है?

(क) रूपक (ख) उपमा

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) दीपक ( )

7. ''श्रुतिसुखनिनदे कथं नु देव्याः स्तनयुगले जघन स्थले च सुप्ता।

विहगगणरजो विकीर्ण दण्डा प्रतिभयम ध्युषिता स्यरण्यवासम्।।''

इस श्लोक में कौन सा रस निष्पन्न हुआ है ?

(क) संयोग श्रृंगार (ख) विप्रलम्भ श्रृंगार

(ग) करूण (घ) हास्य ( )

8. ''काल क्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रार पंक्तिखि गच्छति भाग्य पंक्ति'' में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) रूपक

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्ष ( )

6.4.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. राजा उदयन ने शिरोरोग पीड़ित पद्मावती का समुद्र गृह में न आने के विषय में कैसे अनुमान किया?

2. समुद्रगृह में सोते हुए राजा उदयन ने स्वप्न में वासवदत्ता के साथ जिस विरचिका का स्मरण किया वह कौन थी?

3. राजा विदूषक के जब राजा उदयन द्वारा स्वप्न में वासवदत्ता को देखने की बात कही तो, राजा ने क्या कहा?

4. आरूणि कौन था?

5. खोई हुई घोषवती वीणा प्राप्त करके राजा उदयन ने क्या कहा?

6. घोषवती वीणा प्राप्त करके संताप करने वाले राजा उदयन ने विदूषक को क्या कहा?

7. वत्सराज उदयन ने वत्सराज्य को पुनः कैसे प्राप्त किया?

8. कंचुकी ने मनुष्यों का स्वभाव कैसे बताया?

9. कः कं र्शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले' के समर्थन के लिए महासेन के कांचुकीय ने कौनसा उदाहरण दिया?

10. महाराज उदयन के पास जाते हुए यौगन्धरायण का हृदय क्यों शंकित हो रहा था।

11. ब्राह्मण को उसकी बहन लौटाते समय राजा उदयन ने किसे साक्षी बताया?

12. पद्मावती की दासी ने वासवदत्ता को सुहाग की माला गूंथने के लिए कौन–कौन सी औषधियां दी?

13. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के पंचम अंक की कथा का सारांश लिखिए?

14. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के छः अंकों में किस कथानक का विभाजन महाकवि भास द्वारा किया गया है?संक्षेप में लिखिए?

6.4.3 निबन्धात्मक प्रश्न

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का नामकरण स्वप्नवासवदत्तम् क्यों रखा गया है। प्रमाण सहित सिद्ध कीजिये?

2. भास की नाट्यकला एवं काव्यगत विशेषतायें बतलाइये?

3. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की समीक्षा कीजिये?

4. स्वप्नवासवदत्तम् का संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत कीजिये ?

5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक कौन है?उदयन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये?

6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर वासवदत्ता का चरित्र चित्रण कीजिये ?

7. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर पद्मावती की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

8. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर यौगन्धरायण की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये?

9. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर वसन्तक का चरित्र चित्रण कीजिये?

10. 'स्वप्नवासवदत्तम्' के कर्ता भास का समय निर्धारण कीजिये?

11. भास की रचनाओं का नामोल्लेख करते हुए स्वप्नवासवदत्तम् की सार्थकता सिद्ध कीजिये?

6.5 उपयोगी पुस्तकें

1. स्वप्नवासवदत्तम्– डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा–2
2. स्वप्नवासवदत्तम् व्याख्यार– डॉ0 जगन्नारायण पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
3. भासकृत स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– डॉ0 रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
4. स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– प्रो0 सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन, जयपुर
5. स्वप्नवासवदत्तम्– डॉ0 रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन जयपुर।
6. स्वप्नवासवदत्तम्– व्याख्याकार– श्रीकृष्ण ओझा– अभिषेक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
7. भासनाटकचक्र– संस्कृत रामजी उपाध्याय
8. स्वप्नवासदत्तम्– तारणीश झा
9. स्वप्नवासवदत्तम्– जयपाल विद्यालंकार
10. स्वप्नवासवदत्तम्– जगदीश प्रसाद पाण्डे
11. भास नाटकचक्र– संस्कृत हिन्दी व्याख्या, सुधाकर मालवीय
12. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा– पाण्डे एवं व्यास
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय
14. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
15. कवि दर्शन– भोलाशंकर व्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (क) प्रद्योत की पुत्री व उदयन की पटरानी
2. (ग) उदयन की मंत्री
3. (ख) धीरललित
4. (ख) रूपक
5. (ख) मधुरभाषिणी
6. (क) रूपक
7. (ख) विप्रलम्भ श्रृंगार
7. (ग) उपमा

————

इकाई–7

काव्यगत विशेषताएँ ('स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर)

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

इस इकाई में स्वप्नवासवदत्तम् के आधार पर भास की काव्यगत विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न बिन्दुओं को जानने योग्य हो जायेंगे।

- ❖ स्वप्नवासवदत्तम् की रसव्यञ्जना को बता सकेंगे;
- ❖ स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित भास के प्रकृति चित्रण का उल्लेख कर सकेंगे;
- ❖ भास की भाषा शैली को समझ सकेंगे;
- ❖ स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित छन्दों तथा अलंकारों का उल्लेख कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

संस्कृत पाठ्यक्रम की पूर्व इकाईयों में संस्कृत नाटकों का उद्भव एवं परिचय दिया जा चुका है। प्रसिद्ध नाटककार भास तथा उनकी रचनाओं की भी जानकारी प्रस्तुत की जा चुकी है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक भास के प्रमुख नाटकों में से एक है। नाटक की कथावस्तु तथा पात्रों का चरित्र चित्रण का आपने पूर्व इकाइयों में अध्ययन कर लिया है।

प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत आप स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के आधार पर भास की ''काव्यगत विशेषताओं'' की जानकारी प्राप्त करेंगे। अनुभूति पक्ष (भाव पक्ष) तथा अभिव्यक्ति पक्ष (कला पक्ष) दोनों

दृष्टियों से इस काव्य की क्या विशिष्टताएँ हैं इसका अध्ययन इस इकाई में करेंगे। अनुभूति पक्ष के अंतर्गत रसव्यञ्जना, प्रकृति चित्रण तथा अभिव्यक्ति पक्ष के अंतर्गत भाषा–शैली, छन्द तथा अलंकार का वर्णन है। स्वप्नवासवदत्तम् के प्रसंगों तथा उदाहरणों के माध्यम से काव्य सौष्ठव को समझाया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप स्वप्नवासवदत्तम् नाटक की भाषा शैली, उसमें प्रयुक्त छन्दों, तथा अलंकारों का प्रयोग, प्रमुख रस तथा प्रकृति चित्रण के स्थल आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

7.2 अनुभूति पक्ष (भाव पक्ष)

7.2.1 रस व्यञ्जना–

स्वप्नवासवदत्तम् एक श्रृगार रस प्रधान कृति है। इसका नायक उदयन धीरललित नायक है। इसकी कान्ता, प्रेयसी वासवदत्ता है जिसे वह छलपूर्वक उज्जयिनी से भगाकर लाया है। राजा उदयन का वासवदत्ता के प्रति प्रगाढ़ स्नेह है कहीं भी प्रणय शैथिल्य न होना प्रेम साफल्य का द्योतक है। नाटक में श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग तथा विप्रलम्भ श्रृंगार की अभिव्यक्ति है। श्रृंगार के द्वितीय पहलू विप्रलम्भ श्रृंगार का अधिक विस्तार है जिसे कवि करूण रस द्वारा पुष्ट करते हुए संयोग श्रृंगार से अन्त में संयोजित कर देता है। विप्रलम्भ (करूण विप्रलम्भ) भयानक, हास्य तथा शान्त रस आदि का भी अंग रूप में अभिव्यक्तीकरण किया गया है। विप्रलम्भ श्रृंगार के विनियोग में कवि को अभूतपूर्व सफलता मिली है। प्रथम अङ्क में राजा उदयन वासवदत्ता की मृत्यु का समाचार सुनकर उन्मत हो जाता है वह बारम्बार प्रिया वासवदत्ता का स्मरण करता है– ''ततः स राजा महीतल परिसर्पण पांटल शरीरः सहसोत्थाय' हा वासवदत्ते' हा अवन्तिराज पुत्रि! हा प्रिय शिष्ये! इति किमपि बहुप्रलपितवान्।'' वर्तमान समय में राजा उदयन की विरहावस्था चकवा चकवी के विरह की अपेक्षा अधिक हो गयी। इस समय उदयन जैसा कोई प्रशंसनीय वियोगी नहीं होगा। राजा उदयन के प्रेम की पराकाष्ठा इतनी है कि वासवदत्ता अग्नि में जल कर भी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुई। 'भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा।' 1/13 पद्मावती से विवाह हो जाने के पश्चात् भी राजा उदयन वासवदत्ता के प्रति अत्यासक्त हैं। श्रृंगार की अनेक परिस्थितियाँ मर्मस्पर्शी हैं। भास की रसाभिव्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शब्दावली स्वाभाविक और सरल है। चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में संयोग श्रृंगार दृष्टव्य है–

कामेनोज्जयिनी गते मयि तदा कामप्यवस्थां गते।
दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः पातिताः।। 4/1

अर्थात् उस समय उज्जयिनी जाने पर अवन्तिराजपुत्री वासवदत्ता को मन भरकर देखने से किसी अकथनीय दशा को प्राप्त हुए मुझ पर कामदेव ने पांचों बाण चला दिये। वासवदत्ता को देखकर उदयन के हृदय में अनुराग उत्पन्न होता है वह प्रद्योत के यहाँ से मुक्त होकर कौशाम्बी में वासवदत्ता से विधिवत विवाह करता है। राजा के विलासी जीवन व्यतीत करने के कारण शत्रु राजा आरूणि कौशाम्बी को छोड़कर सारे वत्सराज पर अधिकार कर लेता है। मन्त्री यौगन्धरायण की योजनानुसार, जिससे खोया राज्य पुनः प्राप्त हो सके वासवदत्ता को मृत घोषित कर दिया जाता हैं मृत वासवदत्ता का पुनः पुनः स्मरण करना उसके विरह में विलाप करना, स्वप्न में वासवदत्ता को देखना आदि प्रसङ्गों में विप्रलम्भ श्रृंगार देखा जा सकता है। नाटक के अंत में एक लम्बे अंतराल के बाद उदयन तथा वासवदत्ता के मिलन से पुनः संयोग श्रृंगार प्रतिष्ठित होता है।

किं नु सत्यमिदं स्वप्नः सा भूयो दृश्यते मया।
अनयाप्येवमेवाहं दृष्ट्या वञ्चितस्तदा।। 6/17

अतिशय प्रेम सन्देहास्पद हो जाता है। उदयन भी सामने स्थित वासवदत्ता को सत्य नहीं समझ पा रहा है। इसीलिए वह कहता है कि– ''यह सत्य है अथवा स्वप्न है। उसे फिर से मैं देख रहा हूँ।'' इस प्रकार कवि ने नाटक के अंत में संदेहास्पद संयोग श्रृंगार की परिणति की है। नाटक के चतुर्थ तथा पंचम अङ्क में मुख्य रूप से विप्रलम्भ श्रृंगार ही है। विदूषक द्वारा वासवदत्ता का स्मरण करा दिये जाने पर राजा उदयन विक्षिप्त हो जाता है। 'अनेन परिहासेन व्याक्षिप्तं में मनस्त्वया।'' वह प्रिया के वियोग में इतना व्यथित है कि वह विलाप करने लगता है उदयन की विरह वेदना को कवि ने सूक्ष्म शब्दों में वर्णित किया है–

दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः, स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवतत्वम्

यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं प्राप्तानृण्या याति् बुद्धि प्रसादम्।। 4/7

'स्मृत्वा' शब्द की पुनरावृत्ति से राजा का शोकातिशय प्रकट हो रहा है। जब जब वह स्मृति होगी वह फिर नया सा प्रतीत होगा। इस शोक को रोकर ही दूर किया जा सकता है। हृदयस्थ शोक का आंसू रूप से बाहर निकल जाना ही श्रेयष्कर है। यह राजा उदयन के विरह वेदना की पराकाष्ठा है। पांचवे अङ्क में पुनः विदूषक द्वारा उज्जयिनी का नाम कथा प्रङ्सग में लेने पर उदयन वासवदत्ता का स्मरण करता हुआ व्यथित हो जाता है–

स्मराभ्यवन्त्याधिपतेः सुतायाः प्रस्थानकाले स्वजनं स्मरन्त्याः।

वाष्पं प्रवृत्तं नयनान्तलग्नं स्नेहान्ममैवोरसि पातयन्त्याः।। 5/5

राजा उदयन वासवदत्ता को वीणा सिखाने के अवसरों का प्रतिपल स्मरण करता है। वीणा बजाते हुए वासवदत्ता का एकटक दृष्टि से उदयन को देखना, मिजराव गिर जाने से उंगलियों से ही वीणा को बजाना, वासवदत्ता की उदयन के प्रति आसक्ति और हाव–भाव का स्मरण करना, राजा उदयन की विरह वेदना की पराकाष्ठा है। उदयन वासवदत्ता के वियोग में इतना व्याकुल है कि स्वप्न में वह वासवदता से वार्तालाप करता है–''राजा (स्वप्नायते) हा वासवदत्ते! हा प्रिये हा प्रियशिष्ये देहि में प्रतिवचनम्।'' वासवदत्ता मिलन को विदूषक द्वारा असत्य बता दिये जाने पर भी वह कहता है कि–

यदि तावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्।

अथायं विभ्रमों वा स्याद्विभ्रमो ह्यस्तु मे चिरम्।। 5/9

अर्थात् यदि वह स्वप्न था तो न जागना ही अच्छा था क्योंकि स्वप्न में प्रिया का साथ तो रहता। यदि मेरा भ्रम था तो चिरकाल ये भ्रम ही बना रहेता। उदयन किसी भी स्थिति में प्रिया का संसर्ग त्यागना नहीं चाहता है। उदयन विदूषक को विश्वास दिलाता है कि स्वप्न में वासवदत्ता ही थी। उसके हाथ से पकड़ी गयी मेरी भुजा रोमांच का त्याग नहीं कर रही है निस्सन्देह उदयन तथा वासवदत्ता के पारस्परिक प्रेम की अभिव्यञ्ना है यह प्रेमाभिव्यक्ति संयोग श्रृंगार में परिणत हो जाती है।

योऽयं संत्रस्तया देव्या तया बाहुर्निपीड़ितः।

स्वप्नेऽप्युत्पन्नसंस्पर्शो रोमहर्षं न मुञ्जति।। 5/11

राजा उदयन की विरह वेदना इतनी तीव्र है कि चिरकाल के बाद प्राप्त हुई घोषवती वीणा को देखकर उसकी विरह–वेदना उन्माद की अवस्था तक पहुंच जाती है। छठे अङ्क के प्रारम्भ में वह घोषवती वीणा को उपालम्भ देता हुआ कहता है– ''अपि च अस्निधासि घोषवति। या तपस्विन्या न स्मरसि।'' वीणा के दर्शन हो जाने से राजा का वासवदत्ता के प्रति प्रेम जाग्रत हो जाता है। प्रेमीजन का अपने प्रिय की इच्छित वस्तुओं को देखकर स्मरण करते ही, उनका दुःख पुनः नवीन सा हो जाता है।

चिर प्रसुप्तः कामो मे वीणया प्रतिबोधितः।
तां तु देवी न पश्यापि यस्या घोषवती प्रिया।। 6/3

यहाँ 'चिर' शब्द का प्रयोग राजा उदयन की विरहातिशयत्व को द्योतित करता है। छठे अङ्क के अन्त में चित्रगत वासवदत्ता को देखकर अग्नि को उपालम्भ देना राजा की विरहजन्य उन्मादावस्था का ही द्योतक है।

अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारूणा कथम्।
इदं च मुखमाधुर्यं कथं दूषितमग्निना।। 6/13

अर्थात् इस सुन्दर रूप पर (अग्निदाहरूपी) दारूण विपत्ति कैसे पड़ी? तथा इस माधुर्य मुख को अग्नि ने कैसे बिगाड़ दिया।

भास ने स्वप्नवासवदत्तम् की प्रमुख नायिका वासवदत्ता को भी विरहणी नायिका के रूप में चित्रित किया है वह यौगन्धरायण द्वारा सौंपे गये गुप्त वेष धारण रूप कार्य को अति विषम परिस्थितियों में पूरा करते हुए पति वियोग को सहन करती है। वह तपोवन में ब्रह्मचारी के मुख से उदयन की अस्वस्थता सुनकर रोने लगती है– ''भृर्तदारिके। रोदिति खल्वियमार्या।'' सपत्नी के समक्ष रहते हुए वह पति वियोग को सहती है। द्वितीय तथा तृतीय अङ्क के अनेक प्रसंगों में वासवदत्ता की विरह वेदना देखी जा सकती है। इस प्रकार नाटक का अधिकांश भाग विप्रलम्भ श्रृंगार से अनुप्राणित है। विप्रलम्भ श्रृंगार के बिना संयोग श्रृंगार की पुष्टि नहीं होती। इस सिद्धांत के अनुसार कवि ने विप्रलम्भ श्रृंगार में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

विप्रलम्भ श्रृंगार में करूण रस पूर्णरूप से सहायक रहा है। राजा उदयन का मृत वासवदत्ता के लिए विलाप करना, मूर्च्छित होना उसकी दयनीय दशा होना, वासवदत्ता के अग्निदाह आदि प्रसंगों में करूण रस की मार्मिक व्यञ्जना हुई है।

स्वप्नवासवदत्तम् में शिष्ट एवं परिष्कृत हास्य की भी सुन्दर योजना हुई है, विदूषक की चेष्टाओं एवं उक्तियों के द्वारा हास्य की व्यञ्जना होती है। चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ विदूषक–दासी संवाद से होता है। विदूषक अपनी शारीरिक तथा वाचिक विकृति से हास्य का कारण बनता है। वह अपने भोजन की विशेष चिंता करता है। ''सर्वमानयतु भवती वर्जयित्वा भोजनम्...........अधन्यस्य मम कोकिला नामक्षिपरिवर्त इव कुक्षिपरिवर्त्तः सवृतः'' कथनों में हास्य रस का मुक्त प्रवाह परिलक्षित होता है। इसी प्रकार पंचम अङ्क में विदूषक द्वारा कहे गये कथा प्रसंग में राजा का नाम नगर के लिए तथा नगर का नाम राजा के लिए कहना अत्यन्त हास्यास्पद है। पद्मावती तथा वासवदत्ता के विनोद में शिष्ट हास्य भी दृष्टिगत होता है।

श्रृंगार रस प्रधान स्वप्नवासवदत्तम् के पंचम अङ्क के अन्त में केवल एक स्थान पर वीर रस का समावेश हुआ है। इस स्थल पर राजा उदयन की वीरता का प्रतिपादन किया गया है। अन्यत्र कहीं भी उदयन का क्षत्रियत्व प्रकट नहीं हुआ है।

स्वप्नवासवदत्तम् के एक स्थल पर भयानक रस का भी आभास मिलता है। समुद्रगृह के द्वार पर गिरी हुई माला का वायु के द्वारा हिलने से सर्प की भ्रांति होने से भयानक रस की प्रतीति होती है।

स्वप्नवासवदत्तम् के अन्यत्र स्थलों में शान्त रस की उपस्थिति विद्यमान रहती है। तपोवन वर्णन, सांयकालीन वर्ण, आदि प्रसंगों में शान्त रस अभिव्यक्त हुआ है। नाटक की समाप्ति शान्त रस में देखी जा सकती है।

इस प्रकार ये सभी रस श्रृंगार के अङ्ग के रूप में अभिव्यक्त होकर उसकी ही पुष्टि करते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि स्वप्नवासवदत्तम् रस पेशलता की दृष्टि से उत्तम काव्य है।

7.2.2 प्रकृति चित्रण

प्रकृति और कवि का घनिष्ट सम्बन्ध है। यही कारण है कि प्रत्येक कवि ने प्रकृति को अपने काव्य में स्थान दिया है। महाकवि भास भी प्रकृति के प्रकृष्ट पारखी हैं। उन्होंने प्रकृति का वर्णन आभ्यन्तर और बाह्य दोनों ही दृष्टियों से किया है। इससे उनका प्रकृति के प्रति स्वाभाविक प्रेम झलकता है। उनका प्रकृति वर्णन रसाभिव्यक्ति के लिए आलम्बन तथा उद्दीपन भाव को ग्रहण नहीं कर सका है। उन्होंने प्रकृति का सर्वथा शुद्ध चित्रण किया है जो कथानक में औचित्य प्रदान कर कथा को आगे बढ़ाने में सहयोग देता है। स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अङ्क में लावाणक गांव से आने वाला ब्रह्मचारी (यौगन्ध ारायण) किस प्रकार आश्रम स्थल की परीक्षा करता है–

विश्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्यया

वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः।

भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनावय क्षेत्रवत्यो दिशो

निः सन्दिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि बह्वाश्रयः।। 1/12

अर्थात् तपोवन प्रान्त के कारण विश्वास हो जाने से हिरण बिना शंका के घास चर रहे हैं, तपस्वियों द्वारा रक्षित वृक्ष फूलों फलों से लदे हैं, कपिला गायों का बहुत बड़ा समूह है, समीपवर्ती भूमि खेतों से रहित है तथा विविध स्थानों से यज्ञीय धुंआ उठ रहा है।

भास का प्रकृति वर्णन अभिव्यञ्जनात्मक है। जिस चित्र का वे वर्णन करते हैं उसका पूर्ण बिम्ब ग्रहण कराने का प्रयास करते हैं। प्रथम अङ्क के अंत में सांयकालीन वर्णन अति मनोहर रूप में कवि ने प्रदर्शित किया है–

खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः

प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरति धूमो मुनिवनम्।

परिभ्रष्टो दूराद्रविरपि च संक्षिप्तकिरणो

रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।। 1/16

अर्थात् पक्षी घोंसलों में चले गये हैं, मुनि लोग स्नान करने के लिए जल में में प्रवेश कर गये हैं, धुआं तपोवन में फैल रहा है। दूर से गिरा, अपनी किरणों को समेटे हुए सूर्य भी रथ को लौटाकर धीरे–धीरे अस्ताचल की ओर जा रहा है।

इस प्रकार भास ने सन्ध्या का अत्यन्त सूक्ष्म एवं हृदयग्राही वर्णन सरस, सरल तथा अर्थबोधगम्य भाषा में किया है। अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य का बड़ा ही स्वाभाविक चित्र कवि ने प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में प्रमद वन में हरसिंगार के पुष्पों की शोभा वर्णित करना भास के प्रकृति प्रेम को प्रदर्शित करता है। पद्मावती पुष्पों की समृद्धि को दिखाकर उदयन के द्वारा सम्मानित होना चाहती है। आकाश में उड़ती हुई सारसपंक्ति का अत्यन्त मनोज्ञ मनोहारी वर्णन प्रस्तुत किया है–

ऋज्वायतां च विरलां च नतोन्नतां च

सप्तार्षेवंशकुटिला च निवर्तमेषु।।

निर्मुच्यमान भुजगोदरनिर्मलस्य

सीमामिवाम्बरतलस्य विभज्यमानाम्।।4/2

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यद्यपि भास ने प्रकृति का वर्णन विस्तार से नहीं किया है परन्तु कथानुसार यत्किञ्चित् जो प्रस्तुत किया है वह निस्सन्देह उच्च कोटि का है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण, वर्णन की सजीवता, चित्रोपमता उनके प्रकृति–चित्रण की विशेषता कही जा सकती है। ये सभी वर्णन शुद्ध प्रकृति वर्णन की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से मिलाइये।

1. भास ने स्वप्नवासवदत्तम् में मुख्य रूप से किस रस को प्रधानता दी है?

____

____

____

____

2. हास्य रस की अभिव्यक्ति करने वाला प्रमुख पात्र कौन है ?

____

____

____

____

अभ्यास प्रश्न–1

1. स्वप्नवासवदत्तम् में वर्णित प्रकृति चित्रण को लगभग 100 शब्दों में लिखिये?

____

____

____

____

____

____

____

____

7.3 अभिव्यक्ति पक्ष (कक्षा पक्ष)

7.3.1 भाषा शैली

स्वप्नवाससवदत्तम् की भाषा प्राञ्जल, परिमार्जित एवं सर्वथा परिष्कृत है, वह सर्वत्र क्लिष्टता एवं समास बहुलता दोष से दूर है। पात्रों तथा दर्शकों को एक सूत्र में बांधने वाला उनका प्रसाद गुण सर्वत्र सहायक हुआ है। उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने सर्वत्र पात्रानुकूल भाषा का ही प्रयोग किया है। पात्र अपनी योग्यता, वय तथा पद के अनुरूप भाषा का प्रयोग करते हैं जिससे अभिनय में सहजता का समावेश हो जाता है यथा–

चेटी–अस्ति राजा प्रद्योतो नामोज्जयिन्याः....।

वासवदत्ता (आत्मगतम्) भवतु भवतु। एषा चात्मीयेदानी संवृता।

तापसी – अहो खल्वियमाकृतिरस्य बहुमानस्य.....।

आदि प्रसंगों में कथा का स्वाभाविक प्रवाह देखा जा सकता है। भाषा कथोपकथन में सजीवता लिये हुए है।

स्वप्नवासवदत्तम् की भाषा में सरसता, सरलता तथा स्वाभाविकता है। इनकी प्रवाहयुक्त सरल भाषा भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण समर्थ है। इनके संवादों में शैली की स्वच्छता स्पष्ट दिखाई देती है। संक्षिप्त शब्दों में कहे गये संवाद अर्थ व्यञ्जनकता से व्यापक भाव वाले हैं। निम्न संवाद कितना संक्षिप्त शब्दों में कहा गया है–

वासवदत्ता– हला! किं दृष्टो जामाता।

चेटी– आम् दृष्टो भर्तृदारिकायाः स्नेहेनास्माकं कौतूहलेन!

वासवदत्ता– कीदृशो जामाता?

चेटी– नेदृशो दृष्टपूर्वः।

इस प्रकार के अनेक संक्षिप्त संवाद हैं जो कथानक को गति प्रदान करते हैं। ये संवाद इतने सटीक एवं भावभरित हैं कि पाठक को उनसे कथानक का भाव पूर्णरूपेण प्राप्त हो जाता है और पाठक उसके आनन्द में निमग्न हो जाता है।

भास की भाषा प्रभावोत्पादक तथा मुहावरेदार है। उन्होंने स्थान स्थान पर सजीव, सार्थक मुहावरेदार वाक्यों का प्रयोग किया है जो कि शिक्षाप्रद एवं मार्मिक होने के साथ–साथ भाषा में सजीवता भर देते हैं। जैसे यौगन्धरायण का उत्सारणा (हटाया जाना) को देखकर कष्ट का अनुभव करते हुए यह कहना कि कौन ऐसा राजा है जो अपनी आज्ञा से शान्तिपूर्ण तपोवन को गांव बना रहा है ''ग्रामी करोति'' 1/3 इसी प्रकार वासवदत्ता पद्मावती के लाल हाथ देखती है तो कह उठती है– ''परकीयाविव ते हस्तौ संवृत्तौ'' (पराये हाथ होना, विवाह होना) यहाँ वासवदत्ता के कथन में 'पराये हाथ होना' कितना सार्थक मुहावरा प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार से ''अभितः वरमुख प्रेक्षणम्'' (चारों ओर पति मुख देखना), ''अन्धीकरणम्'' (अन्धा बनाना, शोकाकुल करना), ''ओष्ठगत करणम्'' (याद करना) ''हस्तगतम्'' (हाथ में आना, अधीन होना), ''एषा संदष्टा में जिह्वा'' (मैंने मुंह सी लिया), ''अशून्य कुरूते'' (उपस्थित है) आदि मुहावरों का प्रयोग किया है। गम्भीर तथा भावपूर्ण भावों का नाटकोचित छोटे–छोटे वाक्यों में अभिव्यक्त करने की उनकी अद्भुत क्षमता है। भाषा में अपूर्व प्रवाह तथा सरलता विद्यमान है। गागर में सागर भरने वाली सूक्तियाँ उनके काव्य में चरितार्थ हैं। महाकवि भास की कतिपय सुभाषित एवं सूक्तियाँ इस प्रकार है– ''प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।'' 1/7 (शत्रुता तथा आदर मन के संकल्प अथवा भावना से ही उत्पन्न होते हैं) ''सुखमन्यद्र भवेद् सर्व दुखं न्यासस्य रक्षणम्।'' 1/10 (सब कुछ भी देना सरल है, परन्तु धरोहर की रक्षा करना कठिन कार्य है।) ''चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति।'' 1/4 (जगत की भाग्यदशा, पहिये में लगी अर पंक्ति के समान उपर नीचे जाने वाली होती है।) इत्यादि सूक्ति वाक्यों के प्रयोग से भाषा में सशक्ता आ गयी है। भास ने स्थान–स्थान पर लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है जैसे ''अनतिक्रमणीयो हि विधिः'' (भाग्य बड़ा बलवान है) ''सदाक्षिण्यस्य जनस्य परिजनोऽपि सदाक्षिण्य एव भवति।'' (उदार जनों के सेवक भी उदार होते हैं।) ''एवमनिर्ज्ञातानि देवतान्यवधूयन्ते।'' (अनजाने में तो देवता भी अपमानित होते हैं।) इत्यादि वाक्यों के द्वारा कवि की भाषा का सूक्ष्म गंभीर प्रौढ़त्व तथा स्वाभाविकता प्रकाशित होती है।

शिष्ट पुरूष पात्रों की भाषा संस्कृत तथा अन्य पात्रों की भाषा प्राकृत है। भास के काव्य में मूलतः शौरसेनी प्राकृत का अधिक किन्तु मागधी का प्रयोग न्यून मिलता है। भास में कालिदास जैसी प्रौढ़ता तो नहीं दिखायी देती तथापि कवित्व व अभिनेयत्व का उत्कर्ष भास को सफल नाटककार सिद्ध कर देता है। भास ने अपनी भाषा को सशक्त बनाने के लिए आम्, बाहय्, चेत्, भवतु तथा कुशल प्रश्न के लिए 'सुखमार्यस्य' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

भास की शैली त्रिगुणमयी है। इसमें प्रसंगवश प्रसाद, माधुर्य तथा ओज तीनों गुणों का यथावसर समुचित प्रयोग देखने को मिलता है। वाक्य छोटे होते हुए भी अपने में पूर्ण हैं। शैली की संक्षिप्तता के कारण छोटे–छोटे वाक्यों में गम्भीर तथा रसपेशल भावों की व्यञ्जना प्रस्तुत की गयी है। भास के काव्य में प्रसाद गुण की बहुलता परिलक्षित होती है। इसी कारण गम्भीर से गंभीर भावों को भी भास ने प्रसादगुण के माध्यम से व्यक्त करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

छन्दों का स्वर माधुर्य एवं भाषा की समाहार शक्ति तथा व्यञ्जन–वृत्ति ने स्वप्नवासवदत्तम् की शैली को अपूर्व रमणीयता प्रदान की है। सौन्दर्य वर्णन के अवसर पर भास ने सुकुमारता के अनुकूल ही मधुर पदावली का प्रयोग किया है। जिस स्थान पर जैसा भाव या प्रसंग है उसी के अनुकूल सुकुमार पदावली का प्रयोग किया है। राजा उदयन विदूषक से कहता है– ''कि देवी 'पद्मावती शिरोवेदना से पीड़ित हैं' मेरा ह्रदय अज्ञात भय की आशंका से सशंकित हो उठा है। पूर्वकालीन वासवदत्ता के मृत्यु रूपी दुःख के अभिघात वाला मैं निश्चय ही पद्मावती को भी तुषाराहत कमलिनी के समान मान रहा हूँ।''

पूर्वाभिघातसरूजोऽप्यनुभूत दुःखः।

पद्मावतीमपि तथैवे समर्थयामि।। 5/2

इसी प्रकार राजा उदयन का वासवदत्ता का स्मरण करते हुए यह कहना कि ''चिरकाल से सोये हुए मेरे अनुराग को इस घोषवती वीणा के द्वारा जगा दिया गया परन्तु जिसकी यह वीणा है उस देवी वासवदत्ता को नहीं देख रहा हूँ।''

चिरप्रसुप्तः कामो मे वीणया प्रतिबोधितः।

तां तु देवीं न पश्यामि यस्या घोषवती प्रिया।। 6/3

वर्णन की स्वाभाविकता तथा सूक्ष्मता भास की शैली की विशेषता है। किसी भी दृश्य का वर्णन करते समय वे उसके सूक्ष्म से सूक्ष्म अंश को भी वर्णित कर देते हैं। जिससे पाठक या दर्शक के समक्ष चित्र सा उपस्थित हो जाता है। यही कारण है कि भास ने तपोवन वर्णन, सांध्य वर्णन, मध्यरात्रि वर्णन आदि में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास जैसे सरल अलंकारों के प्रयोगों ने उसकी शैली को मधुर तथा रूचिकर बना दिया है। राजा उदयन का वासवदत्ता को निकलते हुए अर्द्धजाग्रत अवस्था में देखना तथा उनींदी अवस्था में दरवाजे से टकराना आदि प्रसंग बड़े ही स्वाभाविक हैं। जिससे पाठक व दर्शक मुग्ध और तल्लीन हो जाते हैं। इस प्रकार के स्वाभाविक प्रसंगों के उदाहरण 'अलंकार योजना' में आप पढेंगे।

भास की शैली की विशेषता है समाहार शक्ति। वे किसी भाव का लम्बा चौड़ा वर्णन नहीं करते अपितु अत्यन्त संक्षिप्त शब्दों में उस भाव की मार्मिक व्यञ्जना कर देते हैं। संक्षिप्त शब्दों में मनोगत भावों को प्रकट करना भास की विशेषता है। कौन पात्र किस परिस्थिति में किस प्रकार की भाव दशा के अधीन रहेगा इसका चित्रण भास ने कुशलतापूर्वक किया है। वासवदत्ता के प्रति उदयन का प्रेम प्रदर्शित होना, वासवदत्ता के अग्नि में भस्मसात हो जाने पर उदयन की मानसिक दशाओं के मार्मिक प्रसंगों में कवि ने इसी समाहार शक्ति से काम लिया है।

भास की शैली की सबसे बड़ी विशेषता है ध्वन्यात्मकता। जिसके द्वारा भास ने विभिन्न स्थलों पर भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का सूक्ष्म संकेत दिया है जैसे वासवदत्ता का कथन 'परकीयाविव ते हस्तौ'' अर्थात् तुम्हारे हाथ पराये जैसे हो गये हैं तथा 'अभित इव तेऽद्य वरमुखं पश्यामि'' अर्थात् तुम्हारा वर मुख समीप ही देखती हूँ, यहाँ कवि का उद्देश्य निश्चित ही पद्मावती के शीघ्र भविष्य में परिणय की सूचना परोक्ष रूप से देना है। इसी प्रकार काञ्चुकीय का यह कहना कि ''जैसे शत्रु द्वारा छीना गया राज्य वापस मिल गया है वैसे ही यदि वासवदत्ता भी कुशल होती तो विधाता तूने हमारे लिए सारी खुशियाँ उड़ेल दी होती'' इससे कवि का संकेत वासवदत्ता के जीवित होने का है।

इस प्रकार भास की शैली में सरल शब्द, स्वाभाविक पद विन्यास और भाव–सौष्ठव पाया जाता है।। साहित्यिक रचना के द्वारा रचनाकार के व्यक्तित्व की झांकी शैली के रूप में अभिव्यक्त होती है। प्राचीन संस्कृत समालोचकों द्वारा शैली के लिए 'रीति' शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक विद्वान अपने कृतित्व को विशेष रूप में (ढंग) प्रस्तुत करता है। जिसे कुछ विद्वान 'मार्ग' भी कहते हैं। रीति को चार रूपों में विभक्त किया जा सकता है– वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली, लाटी! भास ने माधुर्य अभिव्यञ्जक वर्णो से युक्त, स्वल्प समास प्रधान ललित रचना वाली वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है। इस वैदर्भी रीति से रचा गया ''स्वप्नवासवदत्तम्'' उनके नाटकों में श्रेष्ठ नाटक है। वर्णों के प्रयोग से व्युत्पन्न शब्द और वाक्य विन्यास कहीं भी शिथिल नहीं है, कठोर वर्णों का अभाव है। सुकुमार वर्णों का प्रयोग, प्रसाद गुण, रसाभिव्यक्ति, अर्थ सम्प्रेषण आदि धर्मों से युक्त वैदर्भी रीति ने भास के काव्य को आभूषित किया है। इस प्रकार भाषा शैली की दृष्टि से स्वप्नवासदत्तम् नाटक भास के प्रसिद्ध नाटकों में से एक है। भाषा की सरल पद्धति से सामान्य संस्कृत ज्ञाताओं के लिए भी सहज सुबोध है।

7.3.2 छन्द योजना

भास ने पात्रों की उक्ति प्रत्युक्तियों में छन्दों का प्रयोग भी सफलतापूर्वक किया है। उन्होंने अपने इस नाटक में विविध छन्दों का प्रयोग किया है। जिनमें अनुष्टुप, आर्या, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शालिनी, पुष्पिताग्रा, शिखरिणी तथा हरिणी है। सबसे अधिक अनुष्टुप् तथा वसन्ततिलका छन्द देखने को मिलता है। प्रथम अङ्क के एक स्थल पर अप्रसिद्ध छन्द 'वैश्वदेवी' का प्रयोग किया है।

कार्यं नैवार्थैर्नापि भोगैर्न वस्त्रै

र्नाहं काषायं वृत्तिहेतोः प्रपन्नः।

धीरा कन्येयं दृष्टधर्म प्रचारा

शक्ता चारित्रं रक्षितुं मे भगिन्याः।। 1/9

इस छन्द का लक्षण आचार्यों ने इस प्रकार किया है– '''पंचाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ।''

7.3.3 अलंकार योजना–

वनिता की शोभा यदि स्वर्णाभूषण है तो कविता के आभूषण भाषा के अलंकार हैं। दोनों ही अलंकारों के बिना सुशोभित नहीं होती। महाकवि भास ने भी अपनी वाणी को अलंकृत किया है। लेकिन वह अलंकृति सदा र्निबोझ रही है। भास के अलंकार रस के साथ भावाभिव्यञ्जकता में भी पर्याप्त सहयोगी रहे हैं। भास की शैली में चिरप्रचलित अनुप्रास, यमक, स्वभावोक्ति उपमा, रूपक उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, दीपक, सन्देह, अप्रस्तुतप्रशंसा, विशेषोक्ति, विरोधाभास इत्यादि सरल–सरस अलंकारों का सहज समावेश हो गया है। अलंकारों का विस्तृत विवेचन आप आगे की इकाई में पढेंगे। यहाँ स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त अलंकारों का विवेचन किया जा रहा है।

कविवर भास के मंगलाचरण श्लोक में मुद्रालंकार देखने को मिलता है। इसका लक्षण इस प्रकार है– 'सूच्चार्थसूचनं मुद्रा प्रकृतार्थपरैः पदैः''। जहाँ प्रकृत अर्थ को सूचित करने वाले पदो ंके सूच्य अर्थ

पात्रों की सूचना होती है वहाँ मुद्रालंकार होता हौ। स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम श्लोक में उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती तथा वसन्तक प्रमुख पात्रों की सूचना दी गयी है अतः मुद्रालंकार सिद्ध होता है।

स्वप्नवासवदत्तम में अनुप्रास की छटा निराली है। इसका प्रयोग स्वप्नवासवदत्तम् में एकाध स्थल को छोड़कर सर्वत्र हुआ है। यथा– मधुमदकला मधुकरा मदनार्त्ताभिः प्रियाभिरूपगूढ़ा। पादन्यासविषण्णा वयमिव कान्तावियुक्ताः स्युः।। 4/3 उक्त श्लोक में भ, ध, क, व आदि वर्णसाम्य से अनुप्रास अलंकार है।

स्वप्नवासवदत्तम् के एक स्थल पर यमक अलंकार का प्रयोग हुआ है। यथा–

सुखमर्थों भवेद् दातुं सुखंप्राणाः सुखं तपः।

सुखमन्यद्र भवेद् सर्वं दुखं न्यासस्य रक्षणम्।। 1/10

धन देना सरल है, प्राणों को त्याग देना सरल है। तपस्या का फल देना सरल है तथा सब कुछ देना आसान है किन्तु न्यास की रक्षा करना कठिन कार्य है। उक्त श्लोक में प्रयुक्त 'सुखम्' पद की सार्थक आवृत्ति होने से यमक अलंकार है।

स्वप्नवासवदत्तम् के अनेक स्थलों पर स्वभावोक्ति अलंकार देखने को मिलता है। भास कल्पित पदार्थों या व्यक्तियों का यथार्थ और रमणीय चित्रण करने में सिद्धहस्त हैं जिससे पाठकों के समक्ष सजीव चित्र सा उपस्थित हो जाता है। महाकवि भास का सांध्यकालीन प्रकृति का यथार्थ चित्रण देखने योग्य है। जिसमें तपोवन के आचार–व्यवहार रूप आदि का अति स्वाभाविक वर्णन किया गया है। यथा– खगा वासोपेताः सलिलमवगाढ़ो मुनिजनः.......................... ।/16 पक्षी अपने निवास स्थान घोंसलों में चले गये हैं, तपस्वी संध्या वन्दनादि के लिए जल में प्रविष्ट हो गये हैं। यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो गयी है। अतिदूर आकाश से गिरा हुआ, संकुचित किरणों वाला सूर्य भी अपने रथ को लौटाकर अस्ताचल को जा रहा है। इसी प्रकार अन्य स्वभावोक्ति के स्थल बहुत ही मार्मिक तथा यथार्थ है। राजा उदयन के कथन में रोगी, रोग को पाकर शीर्घ ही स्वयं शय्या को नहीं त्यागा करते हैं 5/4 कितना स्वाभाविक चित्रण कवि ने प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार स्वप्नवासवदत्तम् के अनेक स्थलों पर यथा 1/8, 1/12, 1/14, 1/15, 1/16, 4/2, 4/3, 4/9, 5/3, 5/4, 5/7, 5/12 में स्वभावोक्ति अलंकार देखा जा सकता है।

भास की उपमायें अति हृदयस्पर्शी तथा मनोहारी है। साथ ही ये उपमाएँ भावानुकूल, श्लेष की जटिलता से रहित, अनूठी तथा विषयानुकूल है। ये नित्य व्यवहार में देखी जाने वाली होने के साथ ही शास्त्रीय विषयों से अनुप्राणित है। यौगन्धरायण का कथन–'भाग्य दशा समय की परिवर्तनशीलता के कारण, उसी प्रकार परिवर्तित होती रहती है जैसे पहिये में लगे अर क्रमशः उपर नीचे होते रहते हैं''। कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना, चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति। 1/4, कवि की उपमाएँ सहज हैं। यथार्थ और स्पष्ट तो वे इतनी अधिक हैं कि पाठकों के हृदय में यथार्थ कल्पना उत्पन्न कर देती हैं। महाराज उदयन पद्मावती से कहते हैं ''कि इस समय मैं ऐसी अवस्था को प्राप्त हो गया हूँ जैसे किसी दुष्कर्म से अपने पिता को क्रोधित करने वाला पुत्र सशंकित होकर अपने पिता के समक्ष जाता है'' पुत्रः पितुर्जनित रोष इवास्मि भीतः।। 6/4 इसी प्रकार उपमा अलंकार के अनेक स्थल यथा 4/2, 4/3, 5/1, 5/13, 6/10 भी दृष्टव्य हैं। उपमेय, उपमान, साधारण धर्म तथा वाचक शब्द इन चारों से युक्त उपमा पूर्णोपमा कहलाती है तथा इनमें एक या दो का लोप होने पर लुप्तोपमा हो जाती है। स्वप्नवासवदत्तम् के मंगलाचरण श्लोक में तथा 4/8 में लुप्तोपमा देखी जा सकती है।

स्वप्नवासवदत्तम् के तीन स्थलों 4/7, 5/13 तथा 6/19 में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। उपमान और उपमेय में अभेद का पाया जाना ही रूपक अलंकार है। राजा उदयन विदूषक से अपनी शोकावस्था को प्रकट करता हुआ कहता है– ''कि संसार का नियम तथा लोकव्यवहार तो ऐसा है कि

प्रियजन की स्मृति में आंसू रूपी कर्ज चुकाकर व्यक्ति की बुद्धि प्रसन्नता को प्राप्त हो जाती है'', रूपक अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार पंचम तथा षष्ठ अङ्क में क्रमशः बिखेरे गये बाण रूपी चञ्चल भयंकर लहरों वाला समुद्र तथा हिमालय और विन्ध्यपर्वत रूपी कुण्डलों को धारण करने वाली पृथिवी, रूपक अलंकार के उदाहरण है।

भास ने स्वप्नवासवदत्तम् के एक स्थल 4/2 में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग किया है। ''सारस पंक्ति मानो आकाश की विभाजक रेखा है'' कहने में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

स्वप्नवासवदत्तम् के एक स्थल 6/10 में दृष्टांत अलंकार दृष्टव्य है। पद्य के पूर्वार्द्ध में दृष्टांत अलंकार तथा उत्तरार्द्ध में उपमा अलंकार है। उपमान तथा उपमेय रूप वाक्यार्थों में यदि बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव होता है, तब वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है। काञ्चुकीय राजा उदयन को आश्वस्त करके लोक धर्म का वर्णन करता हुआ कहता है कि– ''मृत्यु का समय आ जाने पर कौन किसकी रक्षा करने में समर्थ हो सकता है? रस्सी के बीच में टूट जाने पर घड़े को गिरने से कौन रोक सकता है? अर्थात् कोई नहीं। इसी प्रकार मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की भी कोई रक्षा नहीं कर सकता'', दृष्टांत अलंकार का उदाहरण है।

भास ने स्थान स्थान पर अर्थान्तरन्यास अलंकार का प्रयोग किया है। भास के अर्थान्तरन्यास में उनके व्यावहारिक अनुभवों का सार सर्वस्व अत्यन्त अद्वितीय है। जैसे–प्रद्वेषोबहुमानो वा संकल्पादुपजायते। 1/7 अर्थात् 'शत्रुता अथवा सम्मान, मन के संकल्प अथवा भावना से ही उत्पन्न होते हैं।' इस सामान्य कथन के द्वारा विशिष्ट का समर्थन (उदयन की पत्नी बनाने की अभिलाषा के कारण ही इसमें मेरी अत्यधिक आत्मीयता है) किये जाने से अर्थान्तरन्यास अलंकार है। भास ने ऐसे वाक्यों का प्रयोग किया है जो अपने में जीवन के सत्यों को समाहित किये हैं। जैसे– ''चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति 1/4, न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि 1/11।

पद्यों में विशेषणों का साभिप्राय प्रयोग होने से स्थान स्थान पर परिकर अलंकार परिलक्षित होता है। स्वप्नवासवदत्तम् के अनेक स्थल जैसे 1/3, 1/4, 1/11, 5/1, 5/10, 5/11, 6/1,, 6/8 तथा 6/16 दृष्टव्य है।

स्वप्नवासवदत्तम् के एक स्थल 4/9 में दीपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। यथा–

गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।

कर्त्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।। 14/10

अर्थात् दूसरों का सत्कार करने वाले लोग इस संसार में सरलता से प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु इन सत्कारकर्ता, उपकार आदि कार्यों को करने वाले व्यक्तियों को जानने वाले लोग संसार में अत्यन्त कम है। यहाँ प्रस्तुत सत्कार प्रसंग से अप्रस्तुत गुणों का वर्णन होने से दीपक अलंकार है।

स्वप्नवासवदत्तम् के तीन स्थलों 4/5, 5/1 तथा 6/2 में विशेषोक्ति अलंकार तथा 4/4, 6/8 से विभावना अलंकार का प्रयोग हुआ है। कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति होना विभावना अलंकार तथा कारण के रहते भी कार्य का न होना विशेषोक्ति अलंकार कहलाता है। रूपशीलादि के रहते हुए भी वासवदत्ता से उदयन का मन नहीं हट रहा है विशेषोक्ति अलंकार का उदाहरण है यथा–

पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः।

वासवदत्ताबद्धं न तु तावन्मे मनो हरति।। 4/5

इसी प्रकार 6/8 में महासेन वत्सराज्य की पुनः प्राप्ति में कारण नहीं है फिर भी उन्हें कारण मानकर फल का द्योतन कराया गया है अतः विभावना अलंकार है। स्वप्नवासवदत्तम् के एक स्थल में विरोधाभास अलंकार देखा जा सकता है यथा– ....भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा। 1/13

महाराज उदयन के अतिशय प्रेय के कारण वासवदत्ता अग्नि के द्वारा भस्मसात् किये जाने पर भी नष्ट नहीं हुई है विरोधाभास अलंकार प्राप्त है। इसी पद्य में महाराज उदयन की विरहावस्था चकवा–चकवी के विरह से अधिक है अतः व्यतिरेक अलंकार भी परिलक्षित होता है।

स्वप्नवासवदत्तम् के अनेक स्थलों में 1/5, 1/6, 1/7, 1/9, 1/12, 4/5, 4/6, 4/7, 5/2, 6/7, 6/14 काव्यालिंग अलंकार दृष्टव्य है। जहाँ वाक्यार्थ या पदार्थ का हेतु रूप में कथन किया जाता है वहाँ काव्यलिंग अलंकार होता है इस प्रकार के कथन उक्त स्थलों में सरलता से देखे जा सकते हैं। जैसे–

अनेन परिहासेन व्याक्षिप्तं मे मनस्त्वया।

ततो वाणी तथैवेयं पूर्वाभ्यासेन निस्सृता।। 4/6

अर्थात् विदूषक तुमने इस परिहास वचन में मेरा (उदयन) मन व्याकुल कर दिया। अतः पहले के अभ्यास से ही मेरी वाणी पूर्ववत् ही निकल गयी। यहाँ स्मृति का हेतु परिहास वचन है। अतः कारण कार्य भाव है। पूर्व अभ्यास कारण है तथा पुनः वैसी ही वाणी निकलना कार्य है इसलिए यहाँ कारण कार्यभाव प्राप्त होने से काव्यलिंग अलंकार है।

स्वप्नवासवदत्तम् के छठे अङ्क में अर्थापत्ति अलंकार तथा उदात्त अलंकार परिलक्षित होता है। भास अलंकारवादी कवि नहीं हैं अपितु रससिद्धकवि हैं। उनकी रचना के प्रवाह में स्वाभाविक जो भी अलंकार स्वतः आ गये हैं वह बहुत ही सरस और मधुर है। मानव मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावनाओं को अर्थापत्ति अलंकार द्वारा भास ने बड़े सुन्दर ढंग से उद्घाटन किया है यथा–

महासेनस्य दुहिता शिष्या देवी च मे प्रिया।

कथं सा न मया शक्या स्मर्तुं देहान्तरेष्वपि।। 6/11

अर्थात् महासेन की पुत्री, वीणावादन सिखाने से शिष्या तथा प्रिया वह वासवदत्ता दूसरे जन्म को प्राप्त करने पर भी कैसे स्मरण करने के योग्य नहीं है। यहाँ 'कथम्' पद के प्रयोग से अन्यार्थ की प्राप्ति होने से अर्थापत्ति अलंकार है। अन्य स्थल भी 6/5, 6/13, 6/17 दृष्टव्य है।

महाराजा उदयन द्वारा काञ्चुकीय से महाराजा प्रद्योत की तथा महारानी अङ्गारवती की कुशलक्षेम पूछने में उनके गुणों का प्रकर्ष वर्णन किया गया है अतः उदात्त अलंकार दृष्टिगत होता है। स्वप्नवासवदत्तम् में मनोरम ह्रदयगत भावों के चित्रण के साथ मनोवैज्ञानिक संवेदनाओं का सुन्दर विश्लेषण है। स्वप्नवासवदत्तम् के दो स्थलों में 1/12 तथा 5/4 में अनुमान अलंकार देखा जा सकता है तपस्वी वेष में यौगन्धरायण का मगध देश में प्रवेश करके बहुविध कारणों से जैसे– ''यहाँ विश्वास उत्पन्न हो जाने के कारण हिरण भय त्याग कर कुशाग्र चर रहे हैं, सभी वृक्ष फल तथा पुष्पों से युक्त है, खेतों का न पाया जाना तथा यज्ञीय धूम का चारों ओर फैलना'' आदि कारण तपोवन की संभावना को व्यक्त कर रहे हैं। इसी प्रकार पांचवे अंक में राजा उदयन समुद्र गृह में बनी शय्या की स्वच्छता को देखकर यह अनुमान लगा लेता है कि यहाँ पद्मावती नहीं आयी होगी। इस प्रकार कह सकते हैं कि जहाँ साध्य साधन रूप से किसी अर्थ का प्रतिपादन किया जाये वहाँ अनुमान अलंकार होता है।

इस प्रकार भास ने शब्दालंकारों में अनुप्रास अलंकार का तथा अर्थालंकारों में उपमा, स्वभावोक्ति तथा अर्थान्तरन्यास अलंकार का सर्वाधिक प्रयोग किया है। इनका प्रयोग उन्होंने भाव–सौन्दर्य की वृद्धि एवं रस–परिपाक के निमित्त किया है। वे कविता कामिनी को अलंकारों के अनावश्यक भार से आक्रान्त नहीं करते हैं। अलंकार कवि के साधन नहीं साधन मात्र हो सकते हैं। भास सर्वतोन्मुखी प्रतिभा सम्पन्न भावुक कवि हैं। मानवीय भावनाओं के सच्चे पारखी है। अलंकारों का भी उनके अन्य काव्य विशेषताओं में मध्य एक स्थान हो सकता है।

बोध प्रश्न–2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से मिलाइये।

1. स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त भास की भाषा सम्बन्धी तीन विशेषताओं को लिखिये?

2. भास ने अपनी शैली में कौन से तीन गुणों का प्रयोग किया है?

3. भास किस रीति के कवि हैं ?

4. भास ने स्वप्नवासवदत्तम् में किस छन्द का सर्वाधिक प्रयोग किया है?

5. स्वभावोक्ति अलंकार किसे कहते हैं एक उदाहरण लिखिये?

7.4 सारांश

इस इकाई में आपने स्वप्नवासवदत्तम् के आधार पर भास के काव्य–सौष्ठव का अध्ययन किया है। काव्यकला का परीक्षण दो सन्दर्भों में किया गया है। अनुभूति पक्ष जिसे भावपक्ष कह सकते हैं तथा अभिव्यक्ति पक्ष जिसे कलापक्ष कह सकते हैं। अनुभूति पक्ष के अंतर्गत रस व्यञ्जना तथा प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डाला गया है। स्वप्नवासवदत्तम् में मुख्य रूप से श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति है। श्रृंगार रस के

संयोग तथा वियोग दोनों ही पक्षों को सरस तथा सरल शैली में अभिव्यक्त किया गया है। स्वप्नवासवदत्तम् मुख्य रूप से विप्रलम्भ श्रृंगार से अनुप्राणित है। राजा उदयन वासवदत्ता की मृत्यु के समाचार को सुनकर उन्मत हो जाता है उसे सारा जगत शून्य दिखाई देता है। वह प्रिया के वियोग में विलाप करता है, बार–बार प्रिया वासवदत्ता का स्मरण करता है, स्वप्न में उससे वार्तालाप करता है आदि प्रसंग ऐसे है जहाँ विप्रलमभ श्रृंगार अपनी चरम सीमा पर है। वासवदत्ता की वियोगाग्नि की कसौटी पर उदयन के असीम प्रेम को परखने के बाद भास ने नायक नायिका का मिलन कराया है क्योंकि वियोग के बाद ही संयोग का सच्चा सुख मिलता है।

यद्यपि करूण, हास्य, वीर तथा भयानक रस का भी समावेश है किन्तु वे श्रृंगार रस को ही परिपुष्ट करते हैं। करूण रस श्रृंगार रस का सहायक बनकर उपस्थित हुआ है। हास्य रस विदूषक (वसन्तक) के कथनों से उत्पन्न होता है जो हास्यकारी कथनों से प्रेक्षकों को हंसाता रहता है।

भास का प्रकृति चित्रण स्वाभाविक तथा नैसर्गिक है। स्वप्नवासवदत्तम् के एक–दो स्थानों पर प्रकृति का सुरम्य तथा स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने प्रकृति का विस्तार से वर्णन नहीं किया अपितु शुद्ध चित्रण प्रस्तुत किया है।

अभिव्यक्ति पक्ष के अंतर्गत भाषा–शैली, छन्द योजना तथा अलंकार योजना पर प्रकाश डाला गया है। भास की भाषा पात्रानुकूल है। सरलता, सरसता तथा संवादों की संक्षिप्तता इनकी भाषा की विशेषता है। लम्बे लम्बे समासों के अभाव के कारण ही भास के काव्य में सरलता तथा मनोरमता देखी जाती है, अतएव पद श्रवण काल में ही उसका अर्थाबोध हो जाता है। स्थान–स्थान पर सूक्तियों, लोकोक्तियों तथा मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है।

भास की शैली में प्रसाद, माधुर्य तथा ओज तीनों गुणों का समावेश है किन्तु मुख्य रूप से प्रसाद गुण का प्रयोग किया है जो कि सर्वत्र लालित्य पूर्ण एवं परिष्कृत है। इनकी इस प्रासादिक शैली के ही कारण इनका काव्य इतना मधुर, सरल एवं रमणीय दृष्टिगत होता है। कर्कश अथवा श्रवणकटु शब्दों का सर्वथा अभाव है। प्रत्येक शब्द सुव्यवस्थित, भावानुकूल एवं रसानुकूल ही प्रयुक्त हुआ है। वर्णन की स्वाभाविकता तथा सूक्ष्मता, समाहार शक्ति तथा ध्वन्यात्मकता भास की शैली की विशेषता है। भास ने लालित्यपूर्ण वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है।

छन्द योजना के अंतर्गत भास ने सभी प्रसिद्ध छन्दों का प्रयोग किया है सर्वाधिक अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया है। एक स्थल पर अप्रसिद्ध वैश्वदेवी छन्द का भी उल्लेख है। भास के काव्य में अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक है। कवि ने कहीं भी उनको लाने का प्रयास नहीं किया है। उन्होंने उतने ही अलंकारों का प्रयोग किया है जो कि स्वतः उनकी रचना के प्रवाह में आ गये हैं। जिनमें उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यालिंग, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, अर्थापत्ति तथा अनुप्रास प्रमुख हैं। अर्थान्तरन्यास का सुन्दर प्रयोग उनके काव्य में देखा जाता है यही अर्थान्तरन्यास सुभाषित के रूप में प्रचलित हो गये हैं।

7.5 शब्दावली –

महीतलपरिसर्पणपांसु पाटल शरीरः'	भूमि पर लौटने से धूलि धूसरित शरीर वाला।
पञ्चेषवः (पांच बाण)	कामदेव के अरविन्द, आम्रमञ्जरी, नीलकमल, अशोक तथा नवमल्लिका ये पांच बाण हैं।

अवन्तिराजतनयाम्	अवन्तिराजा महासेन की पुत्री वासवदत्ता।
व्याक्षिप्तम्	व्याकुल कर दिया।
बद्धमूलोऽनुरागः	परिपुष्ट अनुराग वाला।
नयनान्तलग्नं	नेत्रों की कोरों में आये हुए
संत्रस्तया	भयभीत हुई
रोमहर्षं	आनन्द से उत्पन्न रोमांच को
प्रतिबोधितः	जगा दिया गया है
कोकिलानामक्षिपरिवर्त्त	कोयल की आंख जैसे उलटती है
आगतप्रत्ययाः	विश्वास हो जाने से
गोकुलघनानि	गायों के समूह रूपी धन
व्यावर्त्य	लौटाकर
संक्षिप्तकिरणों	संकुचित किरणों वाला
सप्तर्षिवंशकुटिलाम्	सप्त ऋषियों के समान टेढ़ी (मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु, वशिष्ट ये सात ऋषि हैं।)
पूर्वाभिघातमरूजः	पहले वासवदत्ता की मृत्यु वाले दुख की पीड़ा वाला
काषायं	गेरूआ वस्त्रों को
न्यासस्य	धरोहर की
अरपंक्तिरिव	पहिये में लगी अरपंक्ति के समान

7.6 उपयोगी पुस्तकें

- डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी– स्वप्नवासवदत्तम्– महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
- डॉ0 रूप नारायण त्रिपाठी – स्वप्नवासवदत्तम्, रचना प्रकाशन, जयपुर
- डॉ0 जगन्नारायण पाण्डेय – स्वप्नवासवदत्तम्, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
- डॉ0 कृष्णदेव प्रसाद – स्वप्नवासवदत्तम् रहस्यम्, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
- डॉ0 बलदेव उपाध्याय– संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
- डॉ0 पुष्करदत्त शर्मा– संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास, अजमेरा बुक कंपनी, जयपुर
- प्रो0 उमाशंकर ऋषि– संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
- डॉ0 परमेश्वरानंद शर्मा– काव्यदीपिका, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

7.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1 श्रृंगार रस (संयोग तथा विप्रलम्भ श्रृंगार)

2 बसन्तक (विदूषक)

अभ्यास प्रश्न– 1

1 देखिए उपभाग 7.2.2

बोध प्रश्न–2

1 पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग, सरलता तथा स्वाभाविकता, प्रभावपूर्ण भाषा।

2 प्रसाद गुण, माधुर्य गुण, ओज गुण।

3 वैदर्भी रीति

4 अनुष्टुप् छन्द

5 वस्तु का यथार्थ चित्रणकरना स्वभावोक्ति अलंकार कहलाता है। खगा वासोपेताः सलिलमवगाढ़ो मुनिजन......। 1/16

इकाई–8

'स्वप्नवासवदत्तम्'– सूक्तियों की व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

इस इकाई में भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त सूक्तियों तथा उनकी व्याख्या को प्रस्तुत किया गया है। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप निम्न बिन्दुओं को जानने योग्य हो जायेंगे।

- सूक्ति शब्द को परिभाषित कर सकेंगे। सूक्तियों के महत्त्व तथा प्रभाव को बता सकेंगे।
- सूक्तियों की प्राचीन परम्परा का उल्लेख कर सकेंगे।
- स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त सूक्तियों को समझ सकेंगे तथा उनकी व्याख्या करने में सक्षम हो सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत आप भासकृत 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में प्रयुक्त सूक्तियाँ तथा सूक्तियों की व्याख्या का अध्ययन करेंगे। लेकिन इससे पूर्व 'सूक्ति' शब्द से क्या तात्पर्य है? इनका हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? तथा मानस पटल पर इनका क्या प्रभाव होता है? इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे। सूक्तियों की प्राचीन परम्परा क्या रही है? इसका भी विस्तार से अध्ययन करेंगे।

इसके उपरांत स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के छह अङ्कों में प्रयुक्त सूक्तियों को उनके अर्थ के साथ इस इकाई में प्रस्तुत किया गया है। इस इकाई में कतिपय महत्वपूर्ण सूक्तियों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप सूक्तियों का महत्त्व, स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त सूक्तियाँ तथा उनकी व्याख्या आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

8.2 सूक्ति शब्द का अर्थ

सूक्ति का शाब्दिक अर्थ है सु+उक्ति अर्थात् 'सुन्दर कथन या वचन। ये कथन काव्यकारों, साहित्यकारों, सन्तों मनीषियों के होते हैं। इनके प्रभावी शब्दों में जादू जैसा प्रभाव होता है। प्रेरित, उत्साहित, आनन्दित, अथवा विजिगीषु बनाने में समर्थ इन प्रेरक वाणियों को, गिने चुने वाक्यों अथवा शब्दों में अभिव्यक्त, जीवन–दृष्टियों को, युग युग से मानव ने 'सूक्ति' 'सुभाषित' आदि कहकर सम्मान दिया है। सूक्ति में कवि के जीवन अनुभवों का सार चेतावनी के रूप में अभिव्यक्त होता है। सूक्ति काव्यकार का लक्ष्य पाठक का मनोरंजन करना ही नहीं बल्कि उसमें इहलौकिक और पारलौकिक जीवन का परिमार्जन और परिशोधन करना होता है। वह मानव प्रकृति को उसके विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक सम्बन्धों में समझता बूझता है। जब उसके मानस में किसी सम्बन्ध का एक विशेष कोण सामने आता है तो उसे वह बहुत कुछ निष्कर्षात्मक रूप में सामने रखता है। जिसे 'सूक्ति' कहा जाता है। किन्तु इस सूक्ति को सूक्ति काव्य बनाने में काव्योपदानों से संयुक्त होना पड़ता है। ये काव्योपादान प्रायः चित्रमूलक अलंकार होते हैं। सूक्ति काव्य मुक्तक रूप में तो लिखे ही जाते हैं, प्रबन्धों में भी कहीं कहीं आ जाते हैं। इनमें जो बहुत ही सुंदर, नैतिकता पूर्ण सूक्तियाँ होती है उन्हें 'सुभाषित' कहा जाता है। सूक्तियाँ अमृत बिन्दुओं के सदृश प्रतिष्ठित रही हैं। ये हृदयग्राही, प्रेरक, कालजयी और उदात्त होती है। अमृत के समान ही संजीवनी का कार्य भी करती हैं। 'स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा'' जैसी लोकमान्य तिलक की घोषणा, 'तत्वमसि' तथा 'अहं ब्रह्मास्मि' जैसी उपनिषद वाणी इत्यादि की शक्ति ने मानव जीवन की तथा विश्व की दिशा को अनेक बार नया मोड दिया है। इतिहास इस बात का साक्षी है।

8.3 सूक्तियों का महत्त्व–

सूक्तियाँ मनुष्य की सर्वोत्तम कल्पनाओं को प्रेरित करने में समर्थ होती है। शताब्दियों का मानव–अनुभव तथा गम्भीर चिन्तन के सूत्र जैसी सूक्तियों को 'पृथिवी पर उपलब्ध अमृत' कहा गया है कालजयी सूक्तियाँ वास्तव में 'अ–मृत' ही होती है। इस अमृत के स्पर्श मात्र से मृतवत् प्रतीत होने वाली मानव चेतना प्राणवान दिखायी देने लगती है। सूक्तियों में मानव के हृदय और बुद्धि को प्रभावित करने की, जिंदगी और जिंदादिली से मानव जीवन को भर देने की तथा अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित करने की विशेष शक्ति होती है। सूक्तियाँ गुणकारी औषधि के समान ही हृदय और मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती हैं। ये सूक्तियाँ देखने में छोटी भले ही लगें किन्तु घाव तो गंभीर ही करती हैं। सूक्तियों में जो अनुभव, चुने हुए शब्दों की कलात्मक योजना, हृदय और बुद्धि को स्पर्श करने वाली अभिव्यक्ति और प्रायः संक्षिप्तता का समावेश होता है उसके कारण सूक्तियों का प्रभाव चमत्कारी होता है।

प्राचीन भारतवर्ष में सुन्दर उक्तियों के इस महत्त्व को समझ लेने के कारण ही, राजा भोज सदृश महान शासक, धनी पुरूष और सुभाषितों की रचना करने वाले कवियों को उनके सुभाषितों पर रीझकर अनेक पुरस्कार इत्यादि से अत्यधिक प्रोत्साहित करते थे। उपकृष्ट साहित्य की हृदयस्पर्शी सूक्तियाँ नीति ग्रन्थों के मार्मिक श्लोकादि, नीति कथाओं के सारपूर्णनीति वचन इत्यादि का भारतवर्ष में ग्राम–ग्राम नगर–नगर में सहस्र वर्षों तक अनुपम प्रसार होता रहा। सुन्दर नीति काव्यों को घर घर पहुंचाकर, ज्ञान को सहज सुलभ बनाने वाली भारतीय पद्धति संसार में अनूठी ही कही जायेगी।

उत्कृष्ट सूक्तियों ने भारतीय मानस को परिवर्तित करने की जो भूमिका निभायी है, उनका महत्व शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। ये तो अनुभव और अनुभूति का विषय है। इन सूक्तियों में कहीं गंभीर दार्शनिकता है तो कहीं सरल व्यावहारिकता के सूत्र। कहीं विनोद का आनन्द है तो कहीं

शिष्टाचार का निर्देश है। कहीं उनमें परोपकार, करूणा आदि की संस्कारप्रद सामग्री है तो कहीं महापुरूषों की प्रशंसा। कहीं शास्त्रीय ज्ञान समाहित है तो कहीं प्रकृतिगत या मानव सौन्दर्य की छवियों का चित्रांकन! क्हीं वैराग्य की निर्मल धारा है तो कहीं शृंगार की मादक धारा प्रवाहित होती है। निस्सन्देह भारत के मनुष्यों को धर्म, मातृ पितृ भक्ति, शिष्टाचार, परोपकार, अतिथिसेवा, देशभक्ति, ईश्वर भक्ति, श्रृद्धा, यज्ञ, तप, त्याग, दान, साहस, वीरता, साहित्य, कला, विज्ञान, योग इत्यादि सहस्रो विषयों व गुणों का महत्व हृदयगंम कराने में सूक्तियों ने असाधारण कार्य किया है। सूक्तियों के प्रभाव से मानव मन की सुप्त शक्तियाँ उद्बुद्ध होकर उत्साह, प्रकाश और पुरूषार्थ की प्रेरक बनती है। फलस्वरूप सामान्य जन श्रेष्ठता को विद्वान व्यक्ति गुणवत्ता को दुबुर्द्धि मनुष्य सुबुद्धि को प्राप्त करता है। इसी कारण आज तक सर्वत्र ही झोपड़ी से प्रासादों तक सारे अशिक्षितों से शिक्षितों तक संस्कृत भाषा या अन्य भाषाओं या बोलियों के सुभाषितों का अपना महत्व है। सभी राष्ट्रों में शताब्दियों से रचे गए प्राचीन साहित्य सूक्तियों में समृद्ध है– चाहे वे फारस के शेख सादी, यूनान के होमर, जर्मनी के गेटे या इंग्लैंड के शेक्सपियर की कृति हो। उसी के फलस्वरूप आज भी उत्कृष्ट साहित्य में सूक्तियों का अपना महत्व बना हुआ है। सूक्तियों की राजमान्यता तथा लोकप्रियता का कारण उनकी अपनी गुणवत्ता अथवा मूल्यवत्ता है। विश्व में बिखरी असंख्य लोकमान्य सूक्तियाँ मानव जीवन के लिए आज भी उपयोगी प्रेरक और आकर्षित करने वाली हैं।

8.4 सूक्तियों की प्राचीन परम्परा

संस्कृत का साहित्य विश्व का सबसे प्राचीन तथा समृद्ध साहित्य रहा है। वेदों में जो मन्त्र सामग्री उपलब्ध है उसी से ही संस्कृत साहित्य का आरम्भ होता है और तब से लेकर आज तक रचे गए संस्कृत साहित्य में आध्यात्मिक और लौकिक दृष्टि से जिन करोड़ो ग्रन्थों की रचना हुई है उनमें से आज कुछ ही उपलब्ध है। इन ग्रन्थों के अति महत्वपूर्ण समझे जाने वाले कुछ अंश अन्य ग्रन्थकारों द्वारा उद्धृत किए जाने के कारण ही शेष रह गए है।। उद्धरणों के कारण ही प्राचीन मनीषा का अंश शेष रहा जिन्हें संस्कृत साहित्य में 'सुभाषित' कहा गया। आज प्रचलित 'सूक्ति' शब्द में पद्धबद्ध सुभाषितों, संक्षिप्त सूक्ति रूप सूत्रों तथा लोकोक्तियों का समावेश है। ऐसी सूक्तियों के अनेक संग्रह प्राचीन काल से वर्तमान शताब्दी तक किए जाते रहे हैं और उन्हें सुभाषित संग्रह, सूक्ति–संग्रह, सुभाषितावलि, डिक्शनरी आफ क्वटेशंस, सूक्तिकोश इत्यादि नाम दिए गए है। यों तो संसार की प्रायः सभी समृद्ध भाषाओं के अनेक विद्वानो ने अपने अपने सूक्ति संग्रह तैयार किए है किन्तु इस क्षेत्र में संस्कृत साहित्य की सूक्तियों तथा सूक्ति–संग्रहों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। संस्कृत के विशाल सुभाषित संग्रह को देखने से पूर्व प्राकृत व अपभ्रंश के सुभाषित संग्रह ग्रन्थों को भी जानना आवश्यक होगा।

प्राकृत भाषा में उत्तम काव्य की रचना हुई और उत्तम सूक्तियों के संकलन ग्रन्थ तैयार किए गये। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध लोकप्रिय महाराष्ट्री प्राकृत का ग्रन्थ 'गाहा सतसई' (गाथा सप्तशती) कहलाता है। इसके रचियता शालिवाहन नामक प्रतापी राजा थे, जिन्होंने प्राकृत प्रेम के कारण अपना 'सातवाहन' नाम भी धारण कर रखा था। प्राकृत का दूसरा सूक्ति संकलन 'वज्जालग्ग' है। श्वेताम्बर जैन मुनि जयवल्लभ कृत प्राकृत पद्यों का यह सुभाषित–संग्रह 795 गाथाओं से युक्त है और बहुत सरस है। प्राकृत ग्रन्थ गाथासहस्री (855 गाथाओं वाली समयसुन्दरगाणी की संग्रह कृति जो 1629 की रचना) ''गाथा कोष'' (जिनेश्वर सूरि) 'गाथा कोष' (लक्ष्मण) 'रसालय' (मुनिचन्द्र) तथा 'छपण्णय गाहाओ' (छपण्णयकृत) अन्य उल्लेखनीय सुभाषित–संग्रह रूप प्राकृत ग्रन्थ है। प्राकृत ग्रन्थों से चुनी गई अनेक सूक्तियाँ संस्कृत के अनेक काव्य ग्रन्थों में उपलब्ध है। साथ ही संस्कृत नाटकों में विद्यमान प्राकृत के अंशों में भी अनेक उत्तम सूक्तियाँ मिलती हैं।

अपभ्रंश साहित्य भी बहुत सरस रहा है। अपभ्रंश ग्रन्थों की सूक्तियों को विद्वानों ने अनेक कृतियों में उद्धृत किया है। राजशेखर सूरि कृत 'प्राकृत पैगलम्', 'पुरातन प्रबन्ध संग्रह', 'प्रबन्ध कोष'। मेरूतुंगाचार्य कृत 'प्रबन्धचिंतामणि', हेमचन्द्र कृत 'प्राकृत–व्याकरण का अष्टम अध्याय', 'छन्दोऽनुशासन' और 'प्राकृत द्वयाश्रय काव्य' आदि। संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में अपभ्रंश सूक्तियों का विपुल भंडार उपलब्ध है।

संस्कृत साहित्य सूक्तियों का विशाल सागर है। संस्कृत की प्राचीन सूक्तियों के अन्वेषकों को वेदसंहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषद ग्रन्थों, रामायण, महाभारत, पुराण, उपपुराण, स्मृति ग्रन्थों आदि में सूक्तियों का विशाल भंडार मिलता है। संस्कृत के नाटकों, काव्य ग्रन्थों, कथाकृतियों, इतिहास ग्रन्थों, आयुर्वेद–ग्रन्थों आदि में भी लाखों सूक्तियाँ मिलती है। कथासरित्सागर, पंचतंत्र तथा हितोपदेश तो सरस सूक्तियों के भंडार ही हैं। संस्कृत में सुभाषित–संग्रहों की संख्या भी सहस्रों तक पहुंची है। जर्मनी के भारतविद् 'ओटोबोतलिंक' ने संस्कृत की 7613 सूक्तियों को जर्मन भाषा में अनुवाद के साथ तीन खण्डों में सम्पादित करके प्रकाशित किया था। पौलेंड के संस्कृत विद्वान लुडविक स्टर्नबाख ने 'महासुभाषित संग्रह' के 20 खण्डों में लगभग पचास हजार सुभाषितों को बहुत व्यवस्थित रीति से प्रकाशित करने की योजना ''विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान'' को प्रकाशन बनाकर आरंभ की है। इसी प्रकार श्री एम0 कृष्णमाचार्य ने ''हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर'' में सुभाषित ग्रन्थों पर महत्वपूर्ण जानकारी दी है।

संस्कृत में किसी एक लेखक की कृति पूर्णतया सुभाषितों का संग्रह रूप हो सकती है ऐसी कृतियों की एक लम्बी श्रृंखला उपलब्ध होती है। उदाहरणार्थ, चाणक्य की 'चाणक्यनीति' भर्तृहरि के 'नीतिशतक', 'श्रृंगारशतक' और 'वैराग्यशतक', विल्हण कृत 'शांतिशतक' धनदराज कुत 'शतकत्रयम्', जनार्दनभट्टकृत 'श्रृंगारशतक' और 'वैराग्यशतक', नरहरि कृत ''श्रृंगारशतक', अप्पय दीक्षित कृत 'वैराग्यशतक', पंडित जगन्नाथकृत 'भामिनिविलास' इत्यादि उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त भोजकृत 'चारूचर्या' घटकर्पर कृत 'नीतिसार', वररूचिकृत 'नीतिरत्न', भवभूति कृत 'गुणरत्न' वेतालभट्ट कृत 'नीति प्रदीप', वीरेश्वर कृत 'अन्योक्तिशतक' इत्यादि प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

जैन व बौद्ध उपदेशात्मक साहित्य की अनेक कृतियाँ जैसे सोमप्रभाचार्य कृत 'कुमारपाल प्रतिबोध' इत्यादि सुन्दर सूक्ति संग्रह है। विद्याकर कृत 'सुभाषितरत्नकोश' श्रीधरदास कृत 'सदुक्तिकर्णामृत' शार्ङ्गधर कृत 'शार्ङ्धर–पद्धति' तथा सूर्य कलिंगराय कृत 'सूक्तिरत्नहार' भी बहुत प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

संस्कृत साहित्य की भांति हिन्दी साहित्य का नीतिकाव्य भी बहुत समृद्ध है। हिन्दी के आदिकालीन भक्तिकालीन और रीतिकालीन काव्यग्रन्थों में असंख्य सूक्ति रत्न मिलते हैं। तुलसी दोहावलि, रहीम दोहावलि, वृन्द सतसई, गिरधर की कुंडलियाँ आदि में सूक्तियों का उत्तम भंडार है। भक्तिकाव्य और श्रृंगार काव्य के लेखक भी कभी–कभी अपने क्षेत्र से हटकर सूक्तियों की रचना करते रहे हैं उदाहरण के लिए कबीर की रचनाएँ और बिहारी के नीतिपरक तथा तत्वात्मक दोहे लिए जा सकते हैं।

संसार की सभी समृद्ध भाषाओं की सूक्तियों तथा सूक्ति संग्रह ने मनुष्य को प्रभावित किया है किन्तु संस्कृत की सूक्तियाँ तथा सूक्ति संग्रह अपनी अनन्त ज्ञानराशि, अनुभव सामग्री, विशाल संख्या, व्यापक क्षेत्र, रूप–वैविध्य तथा दीर्घ कालावधि को देखते हुए सर्वोपरि है। संस्कृत की सूक्तियों ने भारत ही नहीं, बृहत्तर भारत को भी प्रभावित किया है। विश्व भर में संस्कृत की सूक्तियाँ किन रूपों में पहुंची, यह जानकारी संकलित करना अन्वेषकों के लिए चुनौती भरा कार्य है।

8.5 बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से मिलाइये।

1. सूक्ति शब्द का अर्थ लिखिये?

2. महाराष्ट्री प्राकृत के ग्रन्थ का नाम लिखिये ?

3. अपभ्रंश सूक्तियों का प्रयोग सर्वाधिक किन ग्रन्थों में किया गया है ?

4. संस्कृत के किसी एक लेखक का नाम बताइये जिसकी कृति सुभाषितों का संग्रह है?

8.5 स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त सूक्तियाँ

कविवर भास ने अपने काव्य को हृदयस्पर्शी तथा वैचित्र्यपूर्ण बनाने के लिए सूक्तियों तथा सुभाषितों का प्रयोग किया है। इनकी सूक्तियाँ अपने अन्दर सागर सा गंभीर अर्थ समाहित किये हुए हैं। 'गागर में सागर' भरने वाली सूक्तियाँ इनकी रचनाओं में चरितार्थ हैं। महाकवि भास ने जीवन के विविध रूपों का, समाज के विविध वर्गों का तथा उनके आचार–विचार–लोकाचारों का व्यापक ज्ञान प्राप्त किया था अतः उन्होंने अपने नाटक स्वप्नवासवदत्तम् में सभी प्रकार के जीवन के लिए सूक्ति वचन कहीं पद्य में तो कहीं गद्य में विन्यस्त किये हैं। भास के सूक्ति वचनों में अर्थ की व्यापकता, भावप्रवणता तथा भाव–सान्द्रता देखी जा सकती है। स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के अङ्कों में प्रयुक्त सूक्तियाँ इस प्रकार हैं–

प्रथम अङ्क–

1. अनिर्ज्ञातानि देवतान्यवधून्यते।

   (विदित न होने पर तो देवता भी अपमानित हो जाते हैं।)

2. कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना, चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः

   (समय के परिवर्तन से बदलने वाली भाग्य पंक्ति रथ के पहियों के अरों के समान ऊपर नीचे चलती रहती है।)

3. प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।

   (अत्यधिक द्वेष अथवा आदर मन के भाव से ही उत्पन्न होते हैं।)

4. तपोवनानि नामातिथिजनस्य स्वगेहम्

   (तपोवन अतिथियों का अपना गृह है)

5. सर्वं दुखं न्यासस्य रक्षणम्

   (धरोहर की रक्षा करना दुष्कर कार्य है।)

6. न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि

   (भाग्य सिद्धों के वचनों का अतिक्रमण करके नहीं चलता है)

7. सर्वजन साधारणमाश्रमपदं नाम।

   (आश्रम तो सभी लोगों के लिए होता है।)

द्वितीय अङ्क

1. सर्वजनमनोऽभिरामं खलु सौभाग्यं नाम

   (सौन्दर्य सबके मन को आकर्षित करने वाला होता है।)

2. आगम प्रधानानि सुलभपर्यवस्थानानि महापुरूघ हृदयानि भवन्ति।

   (शास्त्र ज्ञान प्रधान महापुरूषों के हृदय सरलता से ही स्वाभाविक अवस्था में आने वाले होते हैं।)

चतुर्थ अङ्क–

1. अनतिक्रमणीयो हि विधिः।

   (भाग्य का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।)

2. दुखं त्यक्तुं बद्धमूल्योऽनुरागः स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुखः नवत्वम्।

   (अत्यन्त दृण प्रेम का त्याग करना कठिन है स्मरण कर करके दुख नया हो जाता है।)

3. सदाक्षिण्यस्य जनस्य परिजनः अपि सदाक्षिण्यः एव भवति।

   (चतुर व्यक्ति का सेवक भी चतुर होता है)

4. स्त्रीस्वभावस्तु कातरः।

   (स्त्री स्वभाव से अधीर होती है)

5. कर्तारः सुलभाः लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।

   (सत्कार करने वाले लोग सदा सुलभ हैं किन्तु उन गुणों तथा सत्कारों को जानने वाले लोग दुर्लभ हैं)

षष्ठ अङ्क–

1. प्रायेण हि नरेन्द्र श्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते।

(प्रायः उत्साही पुरूषों के द्वारा ही राजलक्ष्मी का उपयोग किया जाता है)

2. कलत्रदर्शनाहं जनं कलत्रदर्शनात् परिहरतीति बहुदोषमुत्पादयति।

(पत्नी को देखने योग्य व्यक्ति को देखने से रोकने में बहुत ही बुराई होती है)

3. कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले,............................ ।

(मृत्यु के समय कौन किसको बचा सकता है....................)

भास द्वारा प्रयुक्त सभी सुक्तियाँ मार्मिक तथा सार्वभौम है। इनकी सूक्तियाँ गृह्यतम गुत्थियों का समाधान करने वाली, मानसिक भावनाओं की सुख में परिणति तथा विचारों को संक्षिप्त रूप में रखते हुए भाव की स्पष्टता को व्यक्त करने वाली है। स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त कतिपय सूक्तियों की व्याख्या इस इकाई में प्रस्तुत है।

8.6 सूक्तियों की व्याख्या

1. कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना, चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति।

''अर्थात् समय की परिवर्तनशीलता के कारण जगत की भाग्यदशा, पहिये में लगी अर पंक्ति के समान ऊपर नीचे जाने वाली होती है।''

यौगन्धरायण तापसी वेष धारण किये हुए तथा वासवदत्ता अवन्तिका का वेष धारण करके मगध राज्य के तपोवन में प्रविष्ट होते हैं। इतने में ही राजकर्मचारियों के द्वारा मार्ग से लोगों को हटाया जाता है। महाराज दर्शक की बहिन पद्मावती तपोवन में रहने वाली अपनी माता से मिलने आ रही है। वासवदत्ता स्वयं को भी हटाये जाने की आंशका से स्वाभिमान को ठेस लगते देखकर यौगन्धरायण से प्रश्न करती है कि ''क्या मैं भी हटाई जाउंगी'' यौगन्धरायण उत्सारणा से अपमानित वासवदत्ता को सान्त्वना देता हुआ कहता है कि आपको अपमान का अनुभव नहीं करना चाहिए क्योंकि इस समय आप अवन्तिका वेष धारण किये हुए हैं तथा पति के अभ्युदय के लिए प्रयत्नशील हैं। प्रजा की दृष्टि में आप महारानी वासवदत्ता नहीं हैं। कोई आपको इस रूप में महारानी नहीं जानता अतः अपरिचित होने से जब देवता भी तिरस्कृत हो जाते हैं तो आपको भी यह तिरस्कार स्वीकार कर लेना चाहिए। पति की विजय के पश्चात् आप पुनः उसी सम्मानित पदवी को ग्रहण करेंगी जो आपके द्वारा पूर्व में सम्मान भोगा जा चुका है। मनुष्य की भाग्य दशा सदैव एक सी न रहकर बदलती रहती है। वह घूमते हुए पहिये के अरों के समान ऊपर–नीचे आती रहती है।

उक्त सूक्ति में कवि भास का भाग्यवादी दृष्टिकोण ज्ञात होता है। भाग्य परिवर्तन के कारण मनुष्य जीवन में उत्थान–पतन, जीवन–मरण तथा सुख–दुःख आते हैं। सभी व्यक्तियों का भाग्य, चक्र के अरों की भांति उत्थान–पतन, जीवन–मरण, सुख–दुख आदि रूपों के उपर नीचे आता जाता रहता है। संसार चक्र की यह परिवर्तनशीलता शाश्वत है। परिवर्तनशील जगत में मनुष्य के भाग्य की निम्नोन्नत दशाएँ क्रमशः आती जाती रहती है। अतः मनुष्य को दुःख के समय धैर्य व शान्ति के साथ जीवनयापन करना चाहिए तथा सुख के समय निरभिमान होकर उसका भी उपयोग करना चाहिए। नाटककार भास की यह सूक्ति अत्यन्त गौरवमयी है। यही बात हितोपदेश में भी कही गयी है–

सुखमापतितं सेव्यं दुखमापतितं तथा।
चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखनि च।।

अर्थात् जैसे सुख का सेवन किया जाता है उसी प्रकार दुःख को भी सहन करना चाहिए। चक्र की भांति ये सुख और दुःख जीवन में आते जाते रहते हैं। वस्तुतः समय गतिशील है, शक्तिशाली है, अनतिक्रमणीय है कवि की यह कल्पना संस्कृति के भाग्यवादी दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करती है।

महाकवि कालिदास विरचित मेघदूत की निम्न उक्ति भी इसी तथ्य को प्रतिपादित करती है–

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा,
नीचेर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कालिदास ने अस्त होते हुए चन्द्रमा तथा उदित होते हुए सूर्य के माध्यम से संसार को इस नियम का निर्देश कराया है कि परिवर्तनशील भिन्न–भिन्न दुःख, सुखात्मक अवस्थायें सदा आती जाती रहती है। न कोई सदा सुखी रह सकता है और न कोई दुखी। सम्पत्ति–विपत्ति काल क्रमानुसार आया जाया करती है जो उदय होता है वह अस्त भी होता है। इसी प्रकार अस्त होने वाला कभी उदित भी होता है। अतः मनुष्य को अभ्युदय काल में न तो हर्षित होना चाहिए और न विपत्ति काल में दुखी होना चाहिए। सूर्य और चन्द्र मानो अपने उदय और अस्त द्वारा इस ईश्वरीय नियम की ओर संकेत कर रहे है–

तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोकोनियम्भत इवात्मदशान्तरेषु।।

महाकवि 'माघ' ने भी कहा है– ''समय एव करोति बलाबलम्''। यह समय की ही तो महिमा है कि वासवदत्ता आज महारानी होते हुए भी साधारण नारी है, जीवित होते हुए भी मृत है तथा आदेशदाता होकर भी आदेश का पालन करने वाली है।

2. **'अनतिक्रमणीयो हि विधिः'**

''कोई भी भाग्य का अतिक्रमण नहीं कर सकता है'' विदूषक महाराज उदयन को प्रिया वियोगजन्य शोकाकुल अवस्था से हटाने के लिए लोक प्रचलित सूक्ति को कहता है– ''महाराज आप धैर्य धारण करें। आपके भाग्य में जब पत्नी वियोग लिखा था तो उसे कौन टाल सकता था क्योंकि विधि का विधान अनतिक्रमणीय है'' अर्थात् अवश्यम्भावी है।

दैव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति एवं विधि इत्यादि भाग्य के अनेक समानार्थी शब्द हैं। भाग्य में जो विधाता ने लिख दिया है उसे हटाने में कोई समर्थ नहीं हो सकता है। भगवान राम ने भाग्याधीन होकर वन में अपनी पत्नी वियोग के दुःख को सहा ''होगा वही जो राम रचि राखा''। इस प्रकार विधि के विधान के संदर्भ में संस्कृत साहित्य तथा हिन्दी साहित्य में अनेक सूक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में भी विदूषक प्रिया के वियोग से दुखी राजा दुष्यन्त को सांत्वना देता हुआ यही कहता है कि 'भवितव्यता खलु बलवती' अर्थात् होनहार बलवान है। भाग्य के चक्र को तोड़ने में कोई भी समर्थ नहीं हो सकता है। विश्व का प्रत्येक प्राणि सब प्रकार से और सदा भाग्य के वश में रहता है।

महाकवि श्री हर्ष ने विधि की अनिवार्य इच्छा को नैषधीय चरित में इस प्रकार वर्णन किया है–

''अवश्यभव्येष्वनवग्रहग्रहा यया दिशा धावति वेधशः स्पृहाः: अर्थात् अवश्यंभावी विषयों में विधाता की इच्छा जिस दिशा में दौड़ती है वह उसी कार्य को हठात् करा देती है।

'नीतिशतकम्' के रचियता भर्तृहरि ने भाग्य की प्रबलता के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। इन्द्र जैसे पराक्रमी भी युद्ध में पराजित हो जाते हैं, सूर्य और चन्द्रमा जैसे तेजस्वियों को भी ग्रहण लगता है,

हाथी और सर्प भी बन्धन में आ जाते हैं, बुद्धिमान भी प्रायः दरिद्र होते हैं, ये सब उदाहरण देव की प्रबलता बताने के लिए पर्याप्त हैं। इसीलिए कहा गया है–

विधि रहो! बलवानिति मे मतिः।।

यत्पूर्वं विधिना ललाट लिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः।।

भर्तृहरि ने एक गंजे मनुष्य का उदाहरण देकर यह पुष्ट किया है कि भाग्यहीन जहाँ जाता है वहीं आपत्ति भी उसका साथ नहीं छोड़ती है।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।।

भाग्य जब महापुरूषों के समक्ष ऐसी विपत्तियाँ उत्पन्न कर देता है तो साधारण जनों की तो बात ही क्या है? भाग्य ही शक्तिशाली है भाग्य की प्रतिकूलता से ही प्रिय से प्रिय वस्तु भी छूट जाती है। कोई भी इस भाग्य का अतिक्रमण नहीं कर सकता है। अतः सत्य है– अनतिक्रमणीयो हि विधिः''। विधि के विधान को जानकर महाराज आप धैर्य धारण करें।

3. 'प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते–।

''अत्यधिक द्वेष या अत्यधिक आदर मन की भावनाओं से उत्पन्न होता है।''

इस सूक्ति वचन के द्वारा भास ने एक मनोवैज्ञानिक तथ्य को प्रस्तुत किया है। मनुष्य जब किसी व्यक्ति या वस्तु से स्नेह अथवा घृणा करता है तब उसके पीछे उसकी भावना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भावना के अनुसार ही मनुष्य किसी व्यक्ति या वस्तु को आदर अथवा घृणा की दृष्टि से देखता है। नाटक का पात्र यौगन्धरायण जो तपस्वी वेष में मगधराज में प्रवेश करता है। उसके हृदय में महाराज दर्शक की बहिन पद्मावती के प्रति उस समय अच्छे भाव नहीं थे जबकि वह तपोवन के लोगों की उत्सारणा करवा रही थी। उत्सारणा पूर्ण कार्य के कारण उसमें पद्मावती के प्रति निन्दा की भावना थी– ''उद्दण्ड, नम्रता से रहित एवं नश्वर धन आदि पर घमण्ड करने वाला यह कौन व्यक्ति है जो इस शान्त तपोवन को भी अपनी आज्ञा से गांव (अशान्त) बना रहा है।'' परन्तु जब यौगन्धरायण को यह ज्ञात हुआ कि यह महाराज दर्शक की बहिन पद्मावती है जिसके लिए पुष्पक, भद्रक आदि ज्योतिषियों ने महाराज उदयन की पत्नी होना बताया है यह जानकर वह पद्मावती के प्रति आत्मीयता का अनुभव करता है। अपने अन्दर इन विरोधी भावनाओं को देखकर उसका कारण स्पष्ट करते हुए ही वह कहता है कि इसका कारण केवल मानसिक भावना है। जिस रूप में जिस वस्तु, व्यक्ति को देखा जाता है उसी रूप में वह वस्तु, व्यक्ति सुखदायी व दुखदायी बन जाती है। यही कारण है कि क्षणभर पूर्व ही जो मुझे निंदनीय लग रही थी वही पद्मावती अब उसे अति अपनत्व वाली प्रतीत हो रही है।

इस सूक्ति वचन के द्वारा भास भावगाम्भीर्य सन्निहित करने में सफल रहे हैं।। संकल्प का अर्थ है– किसी वस्तु या व्यक्ति के विषय में मन में बना हुआ भाव। न्याय की परिभाषा में संकल्प का अर्थ है– भाव या धारणा। याज्ञवल्क्य स्मृति में 'सम्यक् संकल्पजः कामः' अर्थात् विवेकपूर्ण संकल्प से उत्पन्न हुई इच्छा को धर्म का मूल कहा गया है। वस्तुतः यह जगत भावना का संसार है। भावना से ही व्यक्ति अपनत्व व परत्व का अनुभव करता है। अपनत्व में स्नेहार्द्रता रहती है। स्नेही को हम चाहते हैं उसके सान्निध्य में रहना चाहते हैं। परत्व में विद्वेष की कठोरता रहती है। विद्वेषी को दूर हटाना चाहते हैं उसकी निन्दा करते हैं। भावना से ही संबंधों का निर्धारण होता है। इसी सामाजिक भावना को कवि ने अपनी कुशल प्रज्ञा द्वारा कहा है। यौगन्धरायण के मन में एक ही वस्तु या व्यक्ति को एक ही समय में अपने हित और अहित दृष्टि से अच्छा एवं बुरा समझना मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसका सुन्दर निरूपण कवि ने किया है।

4. 'दुखं न्यासस्य रक्षणम्'

'धरोहर की रक्षा करना अत्यन्त कठिन है।' उक्त सूक्ति वचन में कवि के जीवन के किसी विशिष्ट अनुभव का भाव समाहित है। वस्तुतः सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करने वाले व्यक्ति के लिए भी धरोहर की रक्षा का दायित्व निर्वाह करना अत्यधिक कठिन माना गया है। यौगन्धरावण अपनी योजनानुसार राजा उदयन के अभ्युदय के लिए वासवदत्ता को पद्मावती के संरक्षण में धरोहर के रूप में रखना चाहता है। पद्मावती की धर्मपरायणता, धार्मिकता, गम्भीरता, धैर्यता, कर्त्तव्यनिष्ठता आदि गुणों का विचार कर वासवदत्ता को पद्मावती को सौंपने का निश्चय करता है। काञ्चुकीय राजकुमारी पद्मावती से योगन्धरायण की याचना की दुरुहता को बताते हुए कहता है कि अत्यन्त परिश्रम तथा क्लेश से अर्जित किया गया धना सरलता से किसी को दिया जा सकता है। मनुष्य को अपने प्राण भी दिए जा सकते हैं जैसे दधीचि ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना इन्द्र को अस्थियाँ दे दी, महाराज शिवि ने कपोत की रक्षा के लिए अपने शरीर को दे दिया। कष्ट साध्य पंचाग्नि तप आदि का फल भी दिया जाना सरल है जैसे विश्वामित्र ने त्रिशंकु को स्वर्ग भेजने के लिए अपनी तपस्या का फल दे दिया था और जो भी सांसारिक वस्तुयें हैं उन्हें सरलता से दिया जा सकता है किन्तु धरोहर की रक्षा करना दुष्कर कार्य है। यौगन्धरायण की धरोहर कोई सामान्य वस्तु नहीं अपितु न्यास के रूप में रूपवती युवती है जिसके चरित्र का ज्ञात नहीं उसकी रक्षा करना कठिन कार्य है।

अपने किसी विश्वासपात्र मित्र, बन्धु, अथवा संबंधी को अपनी प्रिय वस्तु या व्यक्ति को संकल्पबद्धता, सुरक्षा एवं प्रतिबद्धता के साथ दिया जाता है और आवश्यकता पड़ने पर उस व्यक्ति या वस्तु को उसी रूप में सुरक्षित वापस कर देना 'धरोहर' कहलाता है। धरोहर पर स्वामित्व तो दूसरे का होता है उसके प्रति स्वामी का अपनत्व मोह आदि होना स्वाभाविक है। धरोहर रक्षक को अपनत्व की भावना से सुरक्षा का दायित्व होता है। धरोहर नाश होने पर स्वामी को तो दुख होता है परन्तु धरोहर रक्षक को और अधिक होता है।

कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व ऋषि शकुन्तला को पतिगृह भेजकर उसी प्रकार निश्चिन्त एवं स्वच्छ मन वाले हो गए जैसे किसी की धरोहर उसे लौटा दी हो।

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं, प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

न्यास रक्षण कार्य अति कठिन है इसी भाव का विचार कर लोकानुभव को कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

5. 'न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि'

'सिद्ध पुरुषों के वचनों का अतिक्रमण भाग्य नहीं करता' अर्थात् जीवन में वही घटता है जो कि सिद्ध पुरुष पहले ही कह देते हैं। उक्त सूक्ति वचन से यह सिद्ध होता ळे कि भास के समय में समाज के अन्तर्गत ज्योतिषशास्त्र सम्मानित पद पर प्रतिष्ठित था साथ ही भास भी ज्योतिष में विश्वास रखते थे। इस कथन में शाश्वत अभिव्यंजना है, लोक प्रसिद्धि है तथा कवि की अन्तरतम् की आस्था अभिव्यक्त है।

यौगन्धरायण ने पुष्पक, भद्रक आदि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी पर विश्वास करके 'महाराज उदयन की रानी पद्मावती होगी' वासवदत्ता को पद्मावती के संरक्षण में रखने का कार्य किया था क्योंकि इन्हीं ज्योतिषियों के द्वारा 'राजा के ऊपर राज्य हानि रूपी विपत्ति आयेगी' यह भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी और वह भविष्यवाणी बाद में सत्य भी हुयी। शुद्ध गणना करके ज्योतिषियों द्वारा कहे गये वचन भावी घटनाओं को सत्य रूप में होने से पहले ही घोषित कर देते हैं। अतएव उनकी वाणी असत्य नहीं

होती है। यौगन्धरायण के माध्यम में कविवर भास ने एक सार्वभौम सत्य को व्यक्त किया है। सिद्धों की वाणी का 'भाग्य' भी अतिक्रमण नहीं करता। भवितव्यता उनकी वाणी के पीछे दौड़ती है। भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् में भी इसी प्रकार के भाव मिलते हैं।

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्त्तते।

ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।।

अर्थात् लौकिक पुरुषों की वाणी अर्थों (सिद्धियों) का अनुगमन करती है परन्तु सिद्ध पुरुषों की वाणी के पीछे समस्त सिद्धियां दौड़ती है।

6. **'स्त्रीस्वभावस्तु कातरः'**

स्त्री स्वभाव से अधीर (भीरू) होती है। इस कथन में शाश्वत अभिव्यञ्जना होने से सूक्तिवचन है। राजा उदयन विचार करता है कि यह पद्मावती नव विवाहिता है, तरुणी होने के कारण वह जीवन के यथार्थ अनुभवों से शून्य है। वयस्क महिला की भांति किसी शोक को सह लेने की आशा उससे कैसे की जा सकती है ? भले ही वह धैर्यशालिनी है, गम्भीर प्रकृति की है परन्तु इसके समक्ष वासवदत्ता के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम को व्यक्त करना ठीक नहीं होगा। वह अन्ततोगत्वा स्त्री ही तो है जो स्वभावतः कातर होती हैं। वह सुनकर दुख का अनुभव करेगी। स्त्रियां सामान्यतः अपनी सपत्नी के प्रति कम प्रेम सुनकर दुखी हो जाती है इसलिए यथार्थ कारण का न कहना ही बुद्धिमानी होगी। स्त्री स्वभाव के सन्दर्भ में महाकवि भवभूति के विचार भी इसी प्रकार हैं– ''पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति''।

कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् मे कण्व ऋषि के शिष्य के माध्यम से कवि ने इसी प्रकार के भाव व्यक्त किए हैं। वास्तव में प्रियजन वियोग जन्य दुख अबलाओं के लिए असह्य होते ही हैं–

इष्टप्रवास जनितान्यबलाजनस्य

दुखानि नूनमतिमात्र सुदःसहानि।।

स्वभाव से कोमल प्रिय सखी शकुन्तला के जीवन की रक्षा करने के लिए अनुसूया तथा प्रियम्बदा दुर्वासा ऋषि के शाप का वृतान्त शकुन्तला को नहीं बताना चाहती क्योंकि ''को नामोष्णादकेन नवमालिका सिञ्चति'' अर्थात् शकुन्तला को शाप वृतान्त सुनाना गरम जल से नवमालिका को सींचना है। प्रकृति पेलवा सुकुमार शकुन्तला शाप वृतान्त सुनकर उसी प्रकार सूख जायेगी जैसे सुकुमार नवमालिका गरम जल से। अतः उचित ही है– ''स्त्री स्वभावस्तु कातरः''।

7. **'प्रायेण हि नरेन्द्र श्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते।'**

निश्चय ही राज्य लक्ष्मी उत्साही युवकों के द्वारा भोगी जाती है। यह एक सूक्ति वाक्य है इसी के समानान्तर सूक्ति 'वीरभोग्या वसुन्धरा' है अर्थात् वीर पुरुष ही पृथ्वी का भोग करते हैं। इतिहास प्रमाण है कि वीर, साहसी राजाओं ने ही पृथ्वी पर शासन किया। कायर शक्तिहीन राजा राजलक्ष्मी का उपभोग नहीं कर सके। लोकरीति की शाश्वत अभिव्यंजना के रूप में यहाँ 'सोत्साहैरेव' शब्द का प्रयोग किया गया है। काञ्चुकीय महासेन के सन्देश को राजा उदयन से कहता है कि जो पुरुष कायर है अर्थात् जिनमें वीरता का अभाव है अथवा जो असमर्थ हैं, शक्तिहीन है ऐसे व्यक्ति में युद्ध के लिए उत्साह ही उत्पन्न नहीं होता है। राजलक्ष्मी का उपभोग तो केवल उत्साही पुरुष ही किया करते हैं। कायर व आलसी व्यक्ति से राजलक्ष्मी दूर ही रहती है। मृच्छकटिकम् की सूक्ति 'साहसे श्रीःवसति' भी इसी तथ्य की ही पुष्टि करती है। भारविकृत किरातार्जुनीयम् के तृतीय सर्ग में भी इसी प्रकार का भाव परिलक्षित होता है–

'लक्ष्या धरित्री तव विक्रमेण'।

8. सुभाषित श्लोक – 1

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले
रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्य धर्मो वनानां
काले काले छिद्यते रुह्यते च।।

उक्त सुभाषित श्लोक में कविवर भास ने शाश्वत सत्य को प्रतिपादित किया है इस संसार में नियति तथा भाग्य बलशाली है संसार में जन्म और मृत्यु स्वाभाविक धर्म है। इस जन्म–मृत्यु के चक्र को कोई भी रोकने में समर्थ नहीं है। यहाँ काञ्चुकीय राजा उदयन को सान्त्वना देता हुआ कहता है कि इस शाश्वतः नियम को जानकर आपको वासवदत्ता की मृत्यु पर शोक नहीं करना चाहिए। काञ्चुकीय लोक स्थिति को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करता हुआ कहता है कि घड़े को कुएँ से ऊपर खींचने वाली रस्सी यदि बीच मार्ग में ही टूट जाती है तो उस घड़े को नीचे गिरने से कौन बचा सकता है ? अर्थात् कोई नहीं। इसी प्रकार मृत्यु प्राप्त व्यक्ति की भी कोई रक्षा नहीं कर सकता है। वन में जैसे वृक्ष निरन्तर कटते रहते हैं और उगते रहते हैं उसी भांति इस संसार में व्यक्ति उत्पन्न होते हैं तथा मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं।

कठोपनिषद में भी इसी नियम का वर्णन इस प्रकार किया गया है– 'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते' अर्थात् प्राणी अनाज के पौधे की भांति मरता है और जन्म लेता है।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी शाश्वत सत्य का उपदेश दिया था–

जातस्य हि ध्रुवोर्मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

अर्थात् जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है और मृत्यु प्राप्त व्यक्ति का जन्म निश्चित है इस शाश्वत नियम को जानकर तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। अतः वासवदत्ता की मृत्यु स्वाभाविक थी उसे मृत्यु से बचाना असम्भव था। उसके लिए शोक करना व्यर्थ है। मनुष्य की आयु जब तक अक्षीण रहती है तब तक उसकी रक्षा के लिए किए जाने वाले सभी उपाय सफल होते हैं परन्तु जब आयु क्षीण हो जाती है तब उसे किसी उपाय से नहीं बचाया जा सकता है। कालिदास ने 'शाकुन्तलम् में कहा है – 'मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः।' अर्थात् मृत्यु तथा जन्म प्रकृति तथा विकृति है।

भर्तृहरिविरचित नीतिशतकम् में भी कहा गया है– परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते। अर्थात् परिवर्तनशील संसार जन्म और मरण का क्षेत्र है। यहाँ पर प्रतिक्षण प्राणियों का जन्म व मरण होता रहता है।

उक्त श्लोक भास के सुभाषित श्लोकों में से एक है। शाश्वत अर्थ की अभिव्यञ्जना करने वाला यह श्लोक स्वप्नवासवदत्तम्' का श्रेष्ठ श्लोक कहा जा सकता है।

9. सुभाषित श्लोक –2

दुखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः
स्मृल्वा स्मृत्वा याति दुखंनवत्वम्।
यात्रात्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं
प्राप्तानृण्या याति बुद्धिप्रसादम्।।

उक्त सुभाषित श्लोक में कविवर भास ने मनोवैज्ञानिक तथ्य को तथा संसार के नियम तथा लोक व्यवहार को प्रतिपादित किया है। भास ने राजा उदयन के मनोभाव का उच्चकोटि का वर्णन किया है। राजा उदयन का वासवदत्ता के प्रति इतना प्रगाढ़ प्रेम है कि उसे विस्मृत करना अत्यन्त कठिन है। प्रिय व्यक्ति के साहचर्य में चिरकाल तक रहने के कारण प्रेम की जड़ें अत्यधिक गहरी हो जाती है वह प्रेम सर्वथा परिपुष्ट होता है। ऐसे परिपक्व प्रेम को विस्मृत नहीं किया जा सकता। भाग्य की प्रतिकूलता के कारण प्रिय से बिछोह हो जाने से उसके वियोग दुख को धारण करता है। प्रसंग वंश स्मरण आ जाने पर जेसे जैसे उसकी स्मृति बढ़ती जाती है वैसे वैसे ही वह दुख प्रतिक्षण नवीन सा प्रतीत होने लगता है। वह और अधिक दुखदायी बन जाता है।

श्लोक की अन्तिम पंक्तियाँ अत्यन्त भावपूर्ण एवं सारगर्भित है। तात्पर्य यह है कि इस लोक में यह परम्परा सी बन गयी है कि अपने प्रियजन की मृत्यु हो जाने पर अथवा वियोग हो जाने पर मनुष्य अश्रु बहाकर उऋण हो जाता है। अश्रु बहाने से उसका मन शान्ति को प्राप्त करता है। मृत व्यक्ति या वियुक्त व्यक्ति की स्मृति में आंसू बहाकर उसे ऐसा अनुभव होता है कि वह उसके प्रति जो ऋण था वह उससे मुक्त हो गया है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य भी है कि रोकर आँसू बहाने से मनुष्य शान्ति का अनुभव करता है और चित्त हल्का हो जाता है। इसी मनोवैज्ञानिक तथ्य की पुष्टि भवभूति के उत्तररामचरितम् नाटक में भी होती है।

'पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोक–क्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।।

जल से परिपूर्ण तडाग के समान हृदयस्थ शोक का आँसू रूप में बाहर निकल जाना ही श्रेयष्कर है। इसी प्रकार 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में चिरकाल पश्चात् राजा दुष्यन्त को देखकर पूर्वप्रत्याख्यान का स्मरण कर शकुन्तला के आँसू निकल आये यह प्रसिद्ध ही है कि प्रियजनों को देखने या स्मरण करने से चिरकालानुभूत दुख भी नवीन हो जाते हैं। उक्त श्लोक में जीवन की शाश्वत अभिव्यञ्जना कवि भास के द्वारा प्रस्तुत की गयी है।

बोध प्रश्न– 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. 'अनिर्ज्ञातानि देवतान्यवधूयन्ते' सूक्ति का अभिप्राय लिखिये।

   ....

   ....

   ....

2. 'तपोवनानि नामातिथिजनस्य स्वगेहम्' सूक्ति का अर्थ लिखिये।

   ....

   ....

   ....

अभ्यास प्रश्न

1. 'अनतिक्रमणीयो हि विधिः' सूक्ति की व्याख्या कीजिये।

....

....

....

2.. 'प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते' सूक्ति की व्याख्या कीजिये।

....

....

....

8.7 सारांश

इस इकाई में आपने स्वप्नवासवदत्तम् में प्रयुक्त सूक्तियाँ का अध्ययन किया। सूक्ति शब्द का अर्थ, उसका महत्त्व तथा सूक्तियों की प्राचीन परम्परा की जानकारी प्राप्त की। सत्साहित्य के सार रूप में ही सूक्तियों की प्रतिष्ठा चिरकाल से चली आ रही है। महान प्रतिभाओं की सूक्तियाँ भी महान होती है। महान प्रतिभाओं, वीरों, मनीषियों, सन्तों तथा मेधावी पूर्वजों का अनुभव, ज्ञान, काव्यदृष्टि, नैतिकता के सूत्र, हृदय तथा बुद्धि को स्पर्श करने वाली अभिव्यक्ति, चेतावनी और जिसमें प्रायः संक्षिप्तता का समावेश होता है उसे 'सूक्ति' कहा जाता है।

मानव धर्म को सुन्दर भाषा में तथा हृदयग्राही शैली में अभिव्यक्त करने वाली सूक्तियों का महत्त्व अनूठा है जो हृदय और मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है। अमृत–बिन्दुओं के सदृश ये सूक्तियां 'अ–मृत' ही होती है, जो मृतवत प्रतीत होने वाले मानव में प्राणों का संचार करती हैं। ये मूल ग्रन्थों की सार जैसी, ज्ञान तथा प्रेरणा के 'इंजेक्शन' जैसी, मनीषियों के आनन्ददायक 'साक्षात्कार' जैसी सूक्तियां देखने में भले ही छोटी लगे लेकिन हृदय और बुद्धि के द्वार खोल देती है। गागर में सागर भरने वाली ये सूक्तियाँ घाव गम्भीर ही करती हैं। ये सूक्तियाँ आचार–विचार काव्य और शास्त्र तथा लोक और परलोक सभी से सम्बन्धित रही है। इन सूक्तियों की सभी विषयों व गुणों का महत्त्व हृदयंगम कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

सूक्तियों की परम्परा प्राचीन है। वेदों से ही संस्कृत साहित्य का प्रारम्भ होता है जिन्हें आधार मानकर अनेक आध्यात्मिक तथा लौकिक संस्कृत ग्रन्थों की रचना हुयी है। इन ग्रन्थों के अति महत्त्वपूर्ण समझे जाने वाले कुछ अंश अथवा उद्धरणों को संस्कृत साहित्य में सूक्ति अथवा सुभाषित कहा गया है। संस्कृत साहित्य सूक्तियों का विशाल भण्डार है। वेद, संहिताओं, स्मृति ग्रन्थों, काव्य ग्रन्थों आदि में अनेक सूक्तियाँ मिलती है। यही नहीं भारतीय मनीषा के गम्भीर ग्रन्थों, दार्शनिक ग्रन्थों, व्याकरण ग्रन्थों आदि में भी सूक्तियों का बड़ा कोष भरा मिलता है। काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में उदाहरणार्थ प्रस्तुत किए गए अनेक काव्यांश तो सूक्तियां ही है। सूक्तियों को स्वतन्त्र मुक्तक रूप में भी रचा जाता रहा। महाकाव्यों नाटकों आदि में भी बीच–बीच में संजोया गया।

प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा के सूक्ति ग्रन्थों में महाराष्ट्री प्राकृत का ग्रन्थ गाथा सप्तशती (गाहा सतसई) तथा अपभ्रंश भाषा की सूक्तियों को विद्वानों ने अनेक कृतियों मं उद्धृत किया जिसमें हेमचन्द्रकृत प्राकृत व्याकरण का अष्टम अध्याय महत्त्वपूर्ण है। काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में अपभ्रंश भाषा की सूक्तियों का प्रयोग है। संसार की सभी समृद्ध भाषाओं की सूक्तियों ने तथा सूक्ति संग्रहों ने मानव को प्रभावित किया है। भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् की सूक्तियां सारगर्भित, मार्मिक, हृदयस्पर्शी तथा सार्वभौम है। महाकवि भास का व्यापक ज्ञान उनकी सूक्तियों में परिलक्षित होता है। जीवन के विविध अनुभवों को सूक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त कर भास ने सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है।

8.8 शब्दावली –

अवधूयन्ते	–	अपमानित होते हैं
भाग्यपंक्ति	–	भाग्यदशा
परिवर्तमाना	–	बदलती हुई
बहुमान	–	अत्यधिक सम्मान
संकल्पात्	–	मन की भावनाऐं
न्यासस्य	–	धरोहर की
सुपरीक्षितानि	–	भलि–भांति परखे हुए
उत्क्रम्य	–	उल्लंघन करके
विधिः	–	भाग्य
बद्धमूलः	–	दृढ़
प्राप्तानृण्या	–	प्राप्त किया है ऋण का अभाव जिसने
सदाक्षिण्यस्य जनस्य	–	चतुर व्यक्ति का
कातरः	–	अधीर
विज्ञातारः	–	जानने वाले
दुर्लभाः	–	विरले ही प्राप्त होते हैं
कलत्रदर्शनार्हं	–	पत्नी को देखने योग्य
सोत्साहैरेव	–	उत्साहयुक्त लोगों द्वारा ही
भुज्यते	–	भोगी जाती है
रज्जुच्छेदे	–	रस्सी के टूट जाने पर
तुल्यधर्मः	–	समान स्वभाव वाले
छिद्यते रुह्यते च	–	काटा जाता है और उत्पन्न होता है
उत्सारणा	–	हटाया जाना
आगमप्रधानानि	–	ज्ञानी पुरुष (शास्त्र ज्ञान प्रधान)
पर्यवस्थानानि	–	स्वाभाविक अवस्था में

8.9 उपयोगी पुस्तकें

– डॉ0 श्याम बहादुर वर्मा (संपादक) डॉ0 मधु वर्मा (सह संपादक) – बृहत् विश्व सूक्ति कोश (प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय खंड) प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली

– डॉ0 रूप नारायण त्रिपाठी – स्वप्नवासवदत्तम्, रचना प्रकाशन, जयपुर

– डॉ0 वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी – स्वप्नवासवदत्तम्,महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा

– डॉ0 जगन्नारायण पाण्डेय – स्वप्नवासवदत्तम्, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर

– डॉ0 कृष्णदेव प्रसाद – स्वप्नवासवदत्तम् रहस्यम्, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
– डॉ0 श्रीकृष्ण ओझा– स्वप्नवासवदत्तम्, अभिषेक प्रकाशन, जयपुर

8.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1. सूक्ति का शाब्दिक अर्थ है सु+उक्ति अर्थात् सुन्दर वचन या कथन। महान प्रतिभाओं, वीरों, मनीषियों, सन्तों तथा मेधावी पूर्वजों का अनुभव, ज्ञान, काव्यदृष्टि, नैतिकता के सूत्र, हृदय और बुद्धि को स्पर्श करने वाली अभिव्यक्ति, प्रेरित, उत्साहित, आनन्दित करने में समर्थ वाणी, जिसमें प्रायः संक्षिप्तता का समावेश होता है उसे 'सूक्ति' कहा जाता है।

2 'गाहा सतसई' इसका संस्कृत रूप 'गाथा सप्तशती' कहलाता है।

3 अपभ्रंश सूक्तियों का प्रयोग 'काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों' में किया गया है।

4 चाणक्यनीति, भर्तृहरि, विल्हण, धनदराज, जनार्दन भट्ट आदि में से कोई भी लेखक।

बोध प्रश्न– 2

1 विदित न होने पर देवता भी अपमानित हो जाते हैं।

2 तपोवन अतिथियों का अपना गृह है।

अभ्यास प्रश्न– 1

1 देखिए भाग 8.6 का 2

2 देखिए भाग 8.6 का 3

———————